मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 58 | अंक : 9 | मार्च, 2018 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹15

सत्यमेव जयते

वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा
एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

शिक्षा : राष्ट्रनिर्माण

शिक्षा मुनष्य में व्यवहारगत परिवर्तन लाने का एक सशक्त माध्यम है। शिक्षित व्यक्ति ही अपने श्रेष्ठ चिन्तन से जाग्रत समाज के निर्माण में सहयोग करता है और जाग्रत समाज संवेदनशीलता के साथ राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निर्धारित करता है। हमारे आदर्श और उत्कृष्ट विद्यालय जाग्रत समाज के दर्पण हैं और ये दर्पण रूपी विद्यालय केवल शिक्षा के ही नहीं संस्कारों के भी केन्द्र हैं। इन विद्यालयों का उद्देश्य विद्यार्थी को प्रत्येक चुनौती के लिए तैयार करना है। परीक्षा इनके लिए भय या दबाव नहीं अपितु उत्तरदायित्व और चुनौती को सहज स्वीकारने का संस्कार है। हमारे विद्यालय शैक्षिक उत्कृष्टता के साथ हर कसौटी पर खरे उतरें ऐसा हमारा प्रयास है।

विगत चार वर्षों से राज्य का शैक्षिक परिदृश्य उपलब्धि भरा रहा है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए किए गए भगीरथी प्रयासों की देश भर में सराहना हुई है। राज्य में शैक्षिक उत्कृष्टता के लिए सकारात्मक वातावरण है, हमारा राज्य शिक्षा में सिरमौर बनें इस दिशा में हमें निरन्तर मनोयोग से कार्य करते रहना है। हमारा राज्य हर दृष्टि से प्रगति करे, हम गौरवशाली इतिहास बनाएँ, इस भाव से 30, मार्च को राज्य के स्थापना दिवस को उत्साह और उमंग के साथ मनाएँ। हम नई ऊर्जा और नए उत्साह के साथ अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करें।

सम्पूर्ण विश्व की आधी आबादी महिलाओं के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए 8 मार्च को 'विश्व महिला दिवस' के रूप में मनाया जाता है। हमारी संस्कृति नारी शक्ति के प्रति सदैव सर्वोच्च भाव रखती है **'यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:'** को हम मनसा, वाचा और कर्मणा से अंगीकार करें।

शक्ति का पर्व नवरात्रि, चेतीचाँद, रामनवमी, महावीर जयन्ती, हनुमान जयन्ती, गौतम जयन्ती हमारे चिन्तन को परिष्कृत करते हुए हमारी चेतना को जाग्रत एवं समृद्ध करें।

23 मार्च भारत के युवा क्रांतिकारियों भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु के बलिदान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का दिवस है। इसी दिन ब्रिटिश सरकार ने आजादी के इन दीवानों को फाँसी दी थी। भारत का युवा भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु के सपनों के भारत के निर्माण के लिए अपनी ऊर्जा राष्ट्र निर्माण में लगाने का प्रण ले।

आने वाले वर्षों में भारत ही ऐसा राष्ट्र होगा जिसमें सर्वाधिक युवा होंगे इन्हीं युवाओं से अपेक्षा है कि वे न केवल शिक्षा के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करें अपितु राष्ट्र निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान भी दें 'राष्ट्र प्रथम' के भाव से 'राष्ट्र धर्म' का पालन करें।

सभी के शुभ मंगल की कामना के साथ।

(वासुदेव देवनानी)

"आने वाले वर्षों में भारत ही ऐसा राष्ट्र होगा जिसमें सर्वाधिक युवा होंगे इन्हीं युवाओं से अपेक्षा है कि वे न केवल शिक्षा के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करें अपितु राष्ट्र निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान भी दें 'राष्ट्र प्रथम' के भाव से 'राष्ट्र धर्म' का पालन करें।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 58 | अंक : 9 | फाल्गुन २०७४-चैत्र २०७५ | मार्च, 2018

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

❁

सम्पादक
गोमाराम जीनगर
मुकेश व्यास

❁

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

❁

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ **15**

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in
shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **- संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा : हमारा उत्तरदायित्व 5

आलेख

- विद्यार्थियों के साथ संवाद 6
'मेकिंग एग्ज़ाम फन : चैट विद पीएम मोदी'
- भारतीय नववर्ष-वैज्ञानिक और सांस्कृतिक आधार 9
संदीप जोशी
- शिक्षा और साहित्य के विकास में नारी की भागीदारी 13
आकांक्षा यादव
- कन्या भ्रूण हत्या-जघन्य अपराध 15
सरोज लोयल
- कविता-मेरा परिचय 15
सतीश चन्द्र श्रीमाली
- ऐसा देश है हिन्दुस्तान 16
डॉ. जयप्रकाश राजपुरोहित
- श्रीरामचन्द्र जी से हम सीखें 17
टेकचन्द्र शर्मा
- केन्द्राधीक्षक की भूमिका 18
नेहा
- बिरवा के होत चिकने पात..... 20
डॉ. मूलचन्द बोहरा
- प्रभावित होता छात्र जीवन 24
वृद्धि चन्द गोठवाल
- विद्यालय आपदा प्रबंधन 27
महावीर प्रसाद प्रजापत
- स्वच्छता : अग्रिम पथ 30
पुष्पा यादव
- भाषा के साथ कुछ बातचीत 31
अंजली कोठारी
- प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण 33
विजय प्रकाश जैन
- समउ फिरें रिपु होहिं पिरीते 34
जगदीशचन्द्र मेहता
- शिक्षा के साथ आवश्यक है संस्कार 35
राजेन्द्र कुमार पंचाल
- चारित्रिक विकास में शिक्षा की भूमिका 36
रामजीलाल घोड़ेला
- महापुरुषों की जीवनियाँ 38
महेश कुमार चतुर्वेदी
- प्रकृति से करें-मित्रवत व्यवहार 40
डॉ. महावीर प्रसाद गुप्ता

रपट

- मुस्कान एवं संस्कृति का मनमोहक संगम 41
जसवन्त सिंह राजपुरोहित

मासिक गीत

- जीवन में हो दिव्य सुगन्ध 19
साभार : प्रेरणा पुष्पांजलि

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 25
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 26
- शिविरा पञ्चाङ्ग (मार्च, 2018) 26
- शाला प्रांगण से 47
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50
- व्यंग्य चित्र-**रामबाबू माथुर** 15, 39

पुस्तक समीक्षा 43-46

- चीकणा दिन
लेखक : मदन गोपाल लढ़ा
समीक्षक : **डॉ. प्रमोद कुमार चमोली**
- एक रात धूप में
लेखक : राजेन्द्र जोशी
समीक्षक : **डॉ. रेणुका व्यास**

मुख्य आवरण :

नारायणदास जीनगर, बीकानेर, मो. 9414142641

▼ चिन्तन

चरत् वै मधु विन्दति
चरन् स्वादुमुदुम्बरम्।
सूर्यस्य पश्चय श्रेमाणं यो
न तचन्द्रयते चरन्।
चरैवेति चरैवेति।।

(ऐ.ब्रा. 7.15)

चलने वाला ही मधु पाता है; चलने वाला ही स्वादु गुलर का फल पाता है। सूर्य की श्रेष्ठता को देखो, जो विचरण करता हुआ कभी अलसाता नहीं। अतः चलते रहो, चलते रहो।

पाठकों की बात

- मैं 'शिविरा' पत्रिका का पाठक हूँ। माह फरवरी, 2018 की शिविरा पत्रिका 'प्रयास-2018 परीक्षा परिणाम उन्नयन विशेषांक' पढ़कर बहुत ही अच्छा लगा। शिक्षा निदेशक महोदय का दिशाकल्प शीर्षक-'परीक्षा : जीवन की तैयारी' बड़ा प्रेरणादायी एवं अनुकरणीय लगा। सकारात्मकता के साथ परीक्षा से श्रेष्ठतम परिणाम प्राप्त होने की आशा है। गुणात्मक दृष्टि से सकारात्मक प्रयास बहूपयोगी सिद्ध होगा, इसमें कोई संशय नहीं। मुख्यावरण भी बड़ा आकर्षक, मनोहारी लगा। शिक्षकवृन्द सूत्रों का अभ्यास कराकर बोर्ड परीक्षा-2018 के उत्कृष्ट परिणाम हासिल कर सकेंगे। अन्य आलेख विज्ञान दिवस पर श्री दीपक जोशी का 'प्राचीन भारत और विज्ञान' दिल को छू गया। जो बड़ा ज्ञानवर्धक तथा रुचिकर लगा। दिनेश विजयवर्गीय का नवाचार प्रेरणास्पद एवं प्रशंसनीय है। अंक की सम्पूर्ण सामग्री बहूपयोगी व नूतन जानकारी प्रदान करने वाली है। इसके लिए शिविरा पत्रिका परिवार को साधुवाद!

  -रतनलाल बलाई, जोधपुर
- परीक्षा-परिणाम उन्नयन 'प्रयास 2018' अभियान आवरण पृष्ठ पर चित्र आकर्षक। अगले पृष्ठ पर निदेशालय परिसर में 69वां गणतंत्र समारोह व अंतिम पृष्ठ पर राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह 2017 के चित्रों से सुसज्जित सुन्दर एवं आकर्षक 'शिविरा' का यह अंक मन को बहुत ही भाया। बारबार पढ़ने को मन ललचाया। 'अपनों से अपनी बात', 'दिशाकल्प' नियमित रूप से क्रमशः शिक्षामंत्री जी व निदेशक महोदय द्वारा लिखे जाते हैं। दोनों ही स्तम्भ आगामी बोर्ड परीक्षा परिणाम संख्यात्मक व गुणात्मक हो, इसी बात पर पुरजोर आशान्वित थे। मासिक गीत श्रेष्ठतम है। अच्छा हो यह गीत हर विद्यालय में हर विद्यार्थी कंठस्थ करले व समय-समय पर गाता रहे। 'प्रयास' आलेख सम्पूर्ण है। आलेख के बीच-बीच में कविता की पंक्तियाँ प्रेरक हैं व आलेख की विशिष्टता है। महर्षि स्वामी दयानन्द, डॉ. जाकिर हुसैन, एकात्म मानववाद सामयिक आलेख हैं। स्काउट अभियान सम्बल आलेख मन को बहुत भाया। इसे बार-बार पढ़ना चाहा। अन्त में पंक्तियाँ-
  बनें सुनागरिक देश के, हो चरित्र-निर्माण।
  सुसंस्कारित हो बालक, 'शिविरा' का आह्वान।।
  केवल किताबी ज्ञान तो कोरी है बकवास।
  सुशिक्षित सच्चे इन्सान हो 'शिविरा' करती आस।।

  -टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं
- 'शिविरा' फरवरी 2018 'प्रयास-2018 परीक्षा परिणाम उन्नयन विशेषांक' में प्रकाशित लेख शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। लेख उचित समय पर संजीवनी है। सत्रारम्भ से ही योजनाबद्ध रूप से परीक्षा परिणामोन्नयन हेतु प्रयास किए जाय तो प्रतिकूल स्थिति बन ही नहीं सकती। अध्यापक-अभिभावक विद्यार्थी और परिवेश आदि इसके प्रमुख घटक हैं। विद्यार्थी को उचित समय पर मार्गदर्शन मिलना भी आवश्यक है। विद्यार्थियों को परीक्षा को एक सहज प्रक्रिया के रूप में लेना चाहिए। यह सच ही है कि परीक्षा जीवन की तैयारी है। उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा चूरू का परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्यक्रम सराहनीय और अनुकरणीय है। माह फरवरी स्वामी दयानंद, छत्रपति शिवाजी, डॉ. जाकिर हुसैन व लॉर्ड बेडेन पावेल की जयंतियों का माह है। ये पर्व राष्ट्रप्रेम, धर्म और समाजसेवा आदि का संदेश देती है। ''प्राचीन भारत और विज्ञान'' लेख हमें अतीत के गौरव की ओर ले जाता है। शिक्षा को रंगों से रुचिपूर्ण बनाती है-शिक्षिका रेहाना चिश्ती का नवाचार शैक्षिक जगत के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

  -महेन्द्र कुमार शर्मा, नसीराबाद, अजमेर
- 'शिविरा' पत्रिका का माह फरवरी 2018 का अंक मिला। 'प्रयास-2018 परीक्षा परिणाम उन्नयन विशेषांक' के रूप में बहूपयोगी सामग्री निश्चित ही विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद है। विज्ञान प्रयोगशाला में प्रयोगरत छात्राओं के आवरण चित्र के साथ सेटेलाइट लॉचिंग का आकर्षक समायोजन तथा पुरस्कृत छात्राओं के चित्र ने सम्पूर्ण आवरण को सुन्दरता के साथ बालिका शिक्षा की सार्थकता सिद्ध की है। आवरणकर्त्ता बधाई के पात्र हैं। मंत्रीजी की 'अपनों से अपनी बात' में राष्ट्रधर्म का भाव निहित है तो निदेशक महोदय ने 'दिशाकल्प' के माध्यम से परीक्षा को जीवन की तैयारी बताकर शिक्षा जगत को आह्वान किया है। विशेषांक की परीक्षोपयोगी पठनीय सामग्री बहुत ही समयानुकूल व सार्थकता से भरी है। इनमें जयसिंह चौहान का लेख निर्देशांक ज्यामिति, राकेश कुमार का आधार-लम्ब-कर्ण, महेन्द्र कुमार शर्मा का 'त्रुटि निवारण' महत्त्वपूर्ण है। रेहाना चिश्ती का शिक्षिका होने के नाते रंगों से किया गया कार्य अनुकरणीय है, शाला प्रांगण का नया स्वरूप शानदार हुआ है। साथ ही शाला प्रांगण विशेष में 4 करोड़ की लागत से धणा स्कूल भवन का लोकार्पण भामाशाह सोनिगरा निश्चित ही प्रेरणास्रोत बनकर उभरे हैं। शिविरा पत्रिका में संकलित बहूपयोगी सामग्री का चयन सम्पादक मण्डल की बौद्धिक क्षमता के साथ शिक्षा जगत के माध्यम से लोक कल्याण का निहितार्थ प्रकटित होता है। संपादक मण्डल को इस विशेषांक के लिए बहुत-बहुत बधाई एवं साधुवाद।

  -उमाशंकर स्वामी, नोखा, बीकानेर

सत्यमेव जयते

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा : हमारा उत्तरदायित्व

सत्रपर्यन्त शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा किए गए अध्ययन-अध्यापन का आकलन मार्च माह से हो रही परीक्षाओं से होगा। परीक्षा, भय और दबाव नहीं अपितु उत्तरदायित्त्व और चुनौतियों को सहज स्वीकारने की प्रक्रिया है। हमारा प्रयास रहे कि प्रत्येक विद्यार्थी भयमुक्त होकर परीक्षा दे। परीक्षा केन्द्र का वातावरण सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण हो, विद्यार्थी अपने ज्ञान का सर्वश्रेष्ठ प्रकटीकरण कर सके। परीक्षा का महत्त्व और गरिमा हमारे प्रबन्धन की सर्वोच्च प्राथमिकता रहे।

वर्तमान समय प्रतियोगी समय है। प्रतिस्पर्धा और अवसरों की सीमा ने शिक्षा के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाई है। विद्यार्थियों और अभिभावकों में शिक्षा से अपेक्षा बढ़ रही है। विद्यार्थी अपने जीवन की दिशा और दशा शिक्षा से निर्धारित करना चाहता है, ऐसे में गुरुजनों और शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे हम सभी का उत्तरदायित्व बढ़ गया है। कक्षा 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षा के बाद विद्यार्थियों को विशिष्ट अध्ययन और उपयुक्त रोज़गार के लिए मार्गदर्शन की आवश्यकता रहती है। मेरी गुरुजनों से अपेक्षा है कि वे विद्यार्थियों को विषय-विशेषज्ञों, विशिष्ट संस्थानों और रोज़गार प्राप्ति के अवसरों के प्रति उचित मार्गदर्शन दें। समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं, पुस्तकों, संचार के आधुनिक संसाधनों की जानकारी, नवीनतम तकनीक, ज्ञान और कौशल का उपयोग करते हुए विद्यार्थियों को 'केरियर गाइडेंस' प्रदान करें।

मेरी सभी पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) से अपेक्षा है कि बजट प्रावधानों के महत्त्वपूर्ण चरण की पूर्णता के पश्चात् और अधिक प्रभावी तरीके से विद्यालयों में समन्वयन और पर्यवेक्षण कर सकेंगे। पंचायत मुख्यालय ही नहीं सुदूर गाँव ढाणी का प्रत्येक विद्यालय सही अर्थों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का केन्द्र बने। जनसहभागिता के माध्यम से प्रत्येक विद्यालय भौतिक संसाधनों की दृष्टि से समृद्ध हो, वहाँ का शैक्षिक प्रबन्धन मजबूत हो, योजनाओं की क्रियान्विति प्रभावी रूप से सम्पादित हो। सभी कल्याणकारी एवं शिक्षा को प्रोत्साहित करने वाली योजनाओं का लाभ पात्र आशार्थी को मिलना शत-प्रतिशत सुनिश्चित हो। पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी के प्रभावी पर्यवेक्षण और कुशल प्रबन्धन से गाँव ढाणी का प्रत्येक विद्यालय सही अर्थों में 'आदर्श' विद्यालय बनेगा, विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा निरन्तर मिलेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना के साथ-

(नथमल डिडेल)

"वर्तमान समय प्रतियोगी समय है। प्रतिस्पर्धा और अवसरों की सीमा ने शिक्षा के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाई है। विद्यार्थियों और अभिभावकों में शिक्षा से अपेक्षा बढ़ रही है। विद्यार्थी अपने जीवन की दिशा और दशा शिक्षा से निर्धारित करना चाहता है, ऐसे में गुरुजनों और शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे हम सभी का उत्तरदायित्व बढ़ गया है।"

विशेष...

विद्यार्थियों के साथ संवाद

'मेकिंग एग्ज़ाम फन : चैट विद पीएम मोदी'

विद्यार्थी सकारात्मक चिन्तन के साथ अपनी श्रेष्ठतम उपलब्धि हासिल करें, यह भाव प्रत्येक माता-पिता, अभिभावक और सच्चे शिक्षक का कहना है। आगे बढ़ने के लिए विद्यार्थी सत्रपर्यंत अध्ययन करते हुए परीक्षा जैसे महत्त्वपूर्ण पड़ाव को पार कर, निरन्तर प्रयासरत रहते हैं। इन्हीं प्रयासों को तब पंख लग जाते हैं जब कोई आत्मीय आगे आकर अपना वरद हस्त उन पर रखता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ताल कटोरा स्टेडियम में विद्यार्थियों के साथ ''मेकिंग एग्ज़ाम फन : चैट विद पीएम मोदी'' शीर्षक के तहत परीक्षा पर केन्द्रित चर्चा की। देश भर से विद्यार्थियों ने माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से प्रश्न पूछे और उत्तर पाकर उत्साहित हुए। विद्यार्थियों को परीक्षा तैयारी के साथ-साथ जीवन की तैयारी व आगे बढ़ने का सात्विक मार्गदर्शन मिला।

'शिविरा' को अपने पाठकों- शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विद्यार्थियों के साथ हुए संवाद के कतिपय अंशों को प्रकाशित कर आत्मीय संतोष की अनुभूति हो रही है।

-संपादक

प्रधानमंत्री मा. नरेन्द्र मोदी ने तालकटोरा स्टेडियम में स्टूडेंट्स के साथ ''मेकिंग एग्ज़ाम फनः चैट विद पीएम मोदी'' टाइटल के तहत परीक्षा पर चर्चा की। उन्होंने कहा-''भूल जाइए कि आप किसी प्रधानमंत्री के साथ बात कर रहे हैं। ये पक्का कर लीजिए कि मैं आपका दोस्त हूँ। आपके परिवार का दोस्त हूँ। आपके अभिभावकों का दोस्त हूँ। एक प्रकार से आज मेरी परीक्षा है। आज आप लोग मेरी परीक्षा लेने वाले हैं। देशभर के 10 करोड़ से ज्यादा बच्चे और उनके परिवार के लोगों के साथ रूबरू होने का मुझे मौका मिला है। मैं उन शिक्षकों को नमन करना चाहूँगा, जिन्होंने मुझे अभी भी विद्यार्थी बनाए रखा है। मुझे सबसे बड़ी शिक्षा मिली कि भीतर के विद्यार्थी को कभी मरने मत देना। अंदर का विद्यार्थी जीवनभर जीता है तो हमें जीने की ताकत देता है।''

श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा-''जिस समय मैंने स्वच्छ भारत का विषय रखा, उसे देश के पालकों ने थाम लिया। वे घरों में कचरा फैलाने पर टोकते हैं। उससे बच्चे जागृत हो गए। दूसरी मदद मीडिया ने की है। अभियान को ताकत दी है। आज यह अभियान हर एक की जिम्मेदारी बन गई है। आज का कार्यक्रम भी प्रधानमंत्री या मोदी का कार्यक्रम नहीं है। ये देश के करोड़ों बच्चों का कार्यक्रम है। आप सब मेरे एग्ज़ामिनर हैं। देखते हैं कि आप मुझे 10 में से कितने अंक देते हैं।''

स्टूडेंट्स के सवालों पर मोदी के जवाब

1) आत्मविश्वास को कैसे बनाए रखें ?

सवालः दिल्ली से 11वीं की समीक्षा ने सवाल किया-''परीक्षा खत्म होने तक नर्वस रहते हैं, कैसे दूर करें।'' एक और स्टूडेंट ने पूछा कि परीक्षा के वक्त हमें कुछ भी याद नहीं आता। हम आत्मविश्वास खो देते हैं। ऐसे समय में आत्मविश्वास कैसे बनाए रखें ?

मोदी जी ने इन सवालों पर कहा, ''ये सवाल बहुत से बच्चों ने पूछा है। मेहनत में कमी नहीं होती। अगर आत्मविश्वास नहीं है तो कितनी भी मेहनत करें, क्लासरूम में बैठने पर ये तो याद आता है कि किस किताब के किस पेज पर जवाब है, लेकिन एकाध शब्द याद नहीं आता। मैं बचपन में स्वामी विवेकानन्द को पढ़ता था। वे कहते थे- अहम् ब्रह्मास्मि। यानी अपने आप को कम मत मानो। उस ज़माने में 33 करोड़ देवी-देवताओं की चर्चा हुआ करती थी। वे कहते थे कि 33 करोड़ देवता तुम पर कृपा बरसा भी देंगे, लेकिन अगर तुममें आत्मविश्वास नहीं होगा तो 33 करोड़ देवी-देवता भी कुछ नहीं कर पाएँगे।'' -''बच्चे आमतौर पर सरस्वती की पूजा करते हैं। एग्जाम देने जाते हैं तो हनुमानजी की पूजा करते हैं। ऐसा क्यों करते हैं ? मैं छोटा था तो मज़ाक उड़ाता था। मैं सोचता था कि हनुमानजी को इसलिए नमन करते हैं क्योंकि एग्ज़ाम में चिट पकड़ा जाए तो मास्टरजी को पता होना चाहिए कि ये हनुमानजी का भक्त है। ये स्कूलों में मेरे चुटकुले का हिस्सा था। मन में आत्मविश्वास जरूरी होना चाहिए। यह जड़ी-बूटी नहीं है। आत्मविश्वास लंबे भाषणों से भी नहीं आता। हमें अपने आप को कसौटी पर कसने की आदत डालनी चाहिए।''

-''हर कदम पर कोशिश करते-करते आत्मविश्वास बढ़ता है। मैं जहाँ हूँ, उससे मुझे ज्यादा

बढ़ना है। इसके लिए जो करना पड़ेगा, वो मैं करूँगा। ये भाव होना चाहिए। अभी-अभी एक खबर मेरे दिल को छू गई। साउथ कोरिया में विंटर ओलंपिक चल रहे हैं। उसमें कनाडा का एक नौजवान मार्क स्नोबोर्ड खेल रहा है। उसने ब्रांज मेडल जीता। 11 महीने पहले उसे भयानक इंजरी हुई थी। 15 से 20 फ्रैक्चर हुए। कोमा में था। लेकिन अब मेडल जीत लिया। उसने अपने फेसबुक पर दो फोटो शेयर की। एक अस्पताल का, दूसरा मेडल का। फोटो पर उसने लिखा है-'धन्यवाद ज़िंदगी'।''

-''स्कूल में जाते समय दिमाग से ये निकाल दीजिए कि कोई आपका एग्ज़ाम ले रहा है। कोई आपको नम्बर देने वाला है। दिमाग में ये भर लीजिए कि आप ही आपके एग्ज़ामिनर हो। आप ही अपना भविष्य तय करेंगे। मैं अपने हौंसले के साथ चलूँगा, ये भाव तय कीजिए। जीवन में सफलता में क्षमता-संसाधन सब हो, लेकिन आत्मविश्वास होना चाहिए। हमारे देश में 100 भाषाएँ हैं। 1700 डायलेक्ट हैं। इतनी विविधताएँ हैं। बहुत से बच्चे मुझे ऑनलाइन सुन रहे होंगे। मैं उनकी भाषा में नहीं बोल पा रहा हूँ। लेकिन मैं तमिल, मलयालम, कन्नड़ जैसी भाषाएँ नहीं बोल पाता। उन सभी से मैं माफी चाहता हूँ।''

2. एकाग्रता कैसे बनाए रखें ?

सवाल: नोएडा से 10वीं की कनिष्का वत्स ने पूछा, ''पढ़ाई से ध्यान भटक जाए तो क्या करें?'' आईआईटी.-बीएचयू. से प्रणव व्यास ने पूछा-''जब हम खुद से खुश हो जाएँ तो क्या करना चाहिए?''

मोदी जी ने कहा, ''बहुत लोगों को लगता है कि कॉन्सन्ट्रेशन खास तरह की विधा है। ऐसा नहीं है। आपमें हर व्यक्ति दिन में कोई न कोई काम ध्यान से करता है। जैसे गाने के बोल को याद रखना। दोस्त से फोन पर बात करते वक्त अगर आपका प्रिय गाना चल रहा हो तो आप बातचीत में उलझ जाते हैं। यानी कॉन्सन्ट्रेशन है। आप खुद का एनालिसिस कीजिए। वो कौनसी बातें हैं, जिन्हें आप ध्यान से-मन से कर रहे हैं। उसके कारणों पर जाइए। उसे अपनी रेसिपी बना लें और पढ़ाई में अप्लाई करें तो कॉन्सन्ट्रेशन का दायरा बढ़ता जाएगा। खुद को जाँचना-परखना चाहिए।''

''बहुत लोग कहते हैं कि हमें कुछ याद नहीं रहता। लेकिन किसी ने आपको 10 वाक्य बुरे बोल दिए तो आपको 6 साल बाद भी दसों के दसों वाक्य याद रहेंगे। इसका मतलब आपकी मेमोरी पावर में दिक्कत नहीं है। जिसमें आपका दिल लग जाए, वो चीज़ें ज़िंदगी का हिस्सा बन जाती हैं।''

''योग को लोग फिजिकल एक्सरसाइज मानते हैं। ऐसा होता और ये बॉडी बेंडिंग का खेल होता तो सारे सर्कस वाले योग करते। लेकिन कॉन्सन्ट्रेशन का मामला है। एक बार मैंने 'मन की बात' कही थी। महान् खिलाड़ी सचिन तेंदुलकरजी ने एक बच्चे को जवाब दिया था कि जब मैं खेलता हूँ तो इसमें दिमाग नहीं खपाता कि पहले का बॉल कैसा था, मैं खेल पाया या नहीं। मैं उस वक्त उसी बॉल को खेलता हूँ जो आने वाली है। बाकी सब भूल जाता हूँ।''

''ऐसा नहीं है कि अतीत का महत्त्व नहीं है। लेकिन अतीत जब बोझ बन जाए तो भविष्य के सपने रौंद जाते हैं। वर्तमान में जीने की आदत जरूर है। आँखें किताब पर हैं, एक-एक पन्ना पढ़ रहे हैं। लेकिन दिमाग कहीं और है। आप ऑफलाइन हैं। इसलिए आप किताब से कनेक्ट नहीं होते। आपमें से बहुत लोगों को पानी का टेस्ट पता होगा। कभी पानी का टेस्ट एंजॉय कीजिए। ये कॉन्सन्ट्रेशन है।''

3. दूसरों से कॉम्पीटिशन या तुलना के कारण होने वाले तनाव से कैसे बचें ?

सवाल : नेहा शर्मा ने पूछा, ''तुलना के चलते मैं तनाव में रहती हूँ। इससे मेरा आत्मविश्वास कमज़ोर होता है।'' वहीं, 9वीं की स्टूडेंट अरुणा शर्मा श्रीवास्तव ने कहा कि दोस्तों से आगे निकलने की होड़ ज्यादा है। इससे कैसे बचें? एक और स्टूडेंट ने पूछा कि कॉम्पीटिशन बढ़ने से दबाव बढ़ जाता है।

मोदी जी ने कहा, ''खेल या युद्ध के विज्ञान को समझिए। आप अपने मैदान में खेलिए। अगर आप सामने वाले के मैदान में खेलने के लिए जाते हैं तो बड़ा रिस्क ले लेते हैं। दुश्मन को अपने ही मैदान की तरफ खींचकर लाओ और मारो, युद्ध में भी यही समझाया जाता है।''

''दूसरों की सोच, परवरिश, माहौल, सपने, रुचि अलग हैं। लेकिन आप स्वतंत्र व्यक्ति हैं। आपको उसके पूरे ईको-सिस्टम का पता नहीं हैं। ऐसे में आप निराशा में आ जाते हो। पहले तय करो कि आपके भीतर क्या है? आप किसी चीज में मजबूत हो? खेल जगत के बड़े नामों को देखिए। कोई उनकी डिग्री पूछता है क्या? खुद को न जानना समस्या का कारण होता है।'' ''जब भी आप कॉम्पीटिशन में उतरते हैं तो आपको तनाव महसूस करना होता है। दूसरा चार घंटे पढ़े तो आप भी ऐसा ही करते हो। आप खुद को देखो, समझो। प्रतिस्पर्धा अपने आप हो जाएगी। लोगों को आपकी प्रतिस्पर्धा में आने दो। आप किसी की प्रतिस्पर्धा में मत जाओ। लोगों को आपको मॉडल बनकर प्रतिस्पर्धा में उतरने दीजिए।''

''खुद से स्पर्धा कीजिए। खुद के पैरामीटर बनाइए। डायरी लिखिए। ये लिखिए कि कल से मैं दो कदम आगे निकला या नहीं? इसके बाद आपको किसी की शाबाशी की जरूरत नहीं है। इससे नई ऊर्जा निकलेगी। आप प्रतिस्पर्धा के चक्कर से निकल जाइए। खुद से स्पर्धा करें। एक ओलंपियन बुका हैं। उन्होंने अपने ही रिकॉर्ड 36 बार तोड़े। वो औरों को देखता तो वहीं अटक जाता।''

4. पैरेंट्स के दबाव का क्या करें ?

सवाल: दीपशिखा ने पूछा-''परीक्षा के दौरान माता-पिता प्रेशर डालते हैं। जब बच्चे 80 से 90 फीसदी नंबर लाते हैं तो उन्हें संतोष नहीं होता। ये सही है या गलत।'' बीए की स्टूडेंट लीला बानो ने पूछा कि माता-पिता की उम्मीदों को कैसे पूरा करें? ऐप के जरिए एक सवाल आया कि सोशल प्रेशर से कैसे उबरें?

मोदी जी ने मज़ाकिया अंदाज़ में कहा, ''आप लोग चाहते हैं कि आज मैं आपके पैरेंट्स की क्लास लूँ?''

इसके बाद कहा-''मेरी सोच थी कि स्टूडेंट्स के सवाल आएँगे। लेकिन ये सवाल ऐसा है कि माँ-बाप भी ऐसा ही सोचते होंगे कि बच्चों को कैसे सुधारें? पहली बात ये कि माता-पिता के इरादों पर शक न करें। वे भी हमारे लिए ज़िंदगी खपा देते हैं। वे कोई अच्छी चीज़ इसलिए नहीं खरीदते क्योंकि बच्चों की फीस भरनी है। कहीं बाहर नहीं जाते क्योंकि बच्चों के एग्ज़ाम हैं। माता-पिता का सपना होता है, अपने बच्चों को कुछ बनते देखने का। इसलिए उनकी निष्ठा पर शक नहीं करना चाहिए।''

''भरोसा करेंगे तो अंडरस्टैंडिंग का दरवाज़ा खुलता है। डर से पढ़ाई करने का माहौल अच्छा नहीं है। ये परिवार में तबाही ला देता है। कई माता-पिता ऐसे होते हैं, जिन्होंने बचपन में कुछ सपने बोए होते हैं। वे अपने सपने पूरे नहीं करते तो अपने बच्चों में उन सपनों को ट्रांसप्लांट करते हैं। माता-पिता अपने बच्चों की क्षमता-परवरिश देखे बिना अपने अधूरे सपने पूरे करते हैं।''

''कभी-कभी इच्छाओं के भी भूत होते हैं। लेकिन डायलॉग करना चाहिए। माता-पिता जब अच्छे मूड में हों, तब करनी चाहिए। ये बात हिंदुस्तान के बच्चों को सिखानी नहीं पड़ती। भारत का बच्चा जन्मजात पॉलिटिशियन होता है। उसे पता होता है कि पापा नहीं मानेंगे, इसलिए दादी से कहा।''

''मैं अभिभावकों से कहना चाहूँगा कि पढ़ाई को सोशल स्टेटस बना दिया है। उन्हें लगता है कि दूसरे के बच्चे आगे पहुँच गए, लेकिन हमारे बच्चें नहीं कर पाए। वे तय कर लेते हैं कि हमारे बच्चे बेकार हैं। पिताजी पत्नी को डाँटते रहते हैं। घर पहुँचकर बच्चे मिल जाएँ तो खेल खत्म। इसलिए इसे सोशल स्टेटस मत बनाइए। दूसरों के बेटे के सामर्थ्य से अपने बेटे की तुलना मत कीजिए। हर बच्चे में परम शक्ति होती है। बच्चे ये नहीं पूछ पाते कि माता-पिता को कितने नंबर आए थे?''

5. फोकस कैसे करें?

सवाल: अभिनव ने पूछा कि परीक्षा में खेलने का मन करता है, तो क्या करें। वहीं, सलोनी ने पूछा कि फोन का कम से कम यूज़ कैसे करें।

मोदी जी ने कहा-''फोकस करना है तो डी-फोकस करना सीख लीजिए। किसी बर्तन में दूध भरना है तो एक सीमा तक भरेगा। अंदर से कुछ खाली करना सीखें। फोकस करते रहने से चेहरे पर भी तनाव आएगा। मेरे कुछ साथी मुझे हर बार कहते हैं कि आप टीवी. पर दिखते हो तो हमेशा गंभीर क्यों रहते हैं। जब मैं बिना काम किसी समारोह-मंच पर हूँ तो मैं एकदम सोचने लग जाता हूँ। लोग कहते हैं टीवी. बंद करो, मोदी ऐसा ही दिखता है। लेकिन मंच पर आकर मैं रिलेक्स हो जाता हूँ। जैसे ही डी-फोकस होता हूँ, सबकुछ सरल हो जाता है।''

''चौबीसों घंटे परीक्षा, प्रैक्टिकल नहीं सोचना चाहिए। आपका डिसेक्शन कर दें तो यही शब्द निकलेंगे। हमारे शास्त्रों में पंचमहाभूत की चर्चा है। पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, अग्नि। आप कितना ही थककर आएँ, पानी से मुँह धो दीजिए, खिड़की खोलकर हवा लीजिए तो फ्रेश महसूस करेंगे। पंचमहाभूतों से संपर्क बनाए रखेंगे तो ऊर्जा महसूस करेंगे।''

''एग्ज़ाम से पहले कर्फ्यू जैसा माहौल हो जाता है। टीवी. बंद, बातचीत बंद। आप ज़िंदगी की जिन आदतों के साथ पले-बढ़े हैं, आप उनकी मात्रा कम कर सकते हैं लेकिन उससे अलग नहीं हो सकते। खेलने का शौक है, खेलिए। गीत गाने का शौक है, गाइए। सब चीजों को काटकर अलग मत कीजिए। ऐसा करेंगे तो फोकस की संभावना ही नहीं बचेगी।''

6. योग कैसे मदद करता है?

सवाल : दीक्षि ग्रोवर ने पूछा-''परीक्षा के तनावपूर्ण दिनों में योग हमारी किस तरह सहायता करता है, आप खुद योग करते हैं... तो कुछ आसन बताइए? आप ईक्यू. और आईक्यू. में संतुलन करना बताएँ।

मोदी जी ने कहा-''आईक्यू. और ईक्यू. हमने सुना है। लेकिन, किसी को पूछोगे कि ये क्या है तो कहेंगे कि सुना है। मैं सरल रीति से बताता हूँ। एक तो ये बताया जा सकता है कि आईक्यू. के खिलने का सबसे बड़ा अवसर होता है, ज्यादा से ज्यादा 5 साल के पहले ही पनपना शुरू हो जाता है। बाद में उसका प्रगतिकरण होता है। कोई माँ बच्चे को झूले में सुलाती है, झूले में घुंघरू बंधा है।''

''2-5 महीने का बच्चा होगा, वो देखता है कि माँ ने ऐसा किया तो घुंघरू की आवाज आई। वो अपने पैर ऊपर करके घूंघरू से आवाज लाने की कोशिश करता है। इसे आईक्यू. कहते हैं। वो रोता नहीं है, उसका पूरा ध्यान घुंघरू रहता है। ये है आईक्यू.।''

''अब मान लीजिए माँ को बहुत काम है, सो जाए बच्चा तो अच्छा है। गाना, सीडी झूले के पास लगा देती है ताकि बच्चा सो जाए। लेकिन, बढ़िया गायिका या शब्द हों, बच्चा रोना बंद नहीं करता है। माँ किचन से आती है और खुद अपनी आवाज से गाना गाती है और बच्चा सो जाता है, ये ईक्यू. है। ये इमोशंस हैं, वो कनेक्ट हैं। इसलिए आईक्यू. और ईक्यू. दोनों का संतुलित विकास जरूरी है। ईक्यू. का बहुत बड़ा रोल होता है।'' ''ये इन्सिपरेशन का सबसे बड़ा सोर्स होता है और रिस्क लेने की कैपेसिटी बढ़ाता है। अगर हम ब्लड डोनेशन के लिए जाते हैं, मैं जब जाता हूँ और पता चलता है कि मैंने जिसे ब्लड दिया, उसकी जान बच गई। मेरा आईक्यू. ईक्यू. में बदल गया।''

''मेरे एक टीचर का नियम था कि किसी का जन्मदिन हो तो वो बच्चों से आग्रह करते थे कि परिवार के साथ वृद्धाश्रम, अस्पताल या अनाथालय में होकर आओ, तब जन्मदिन मानूँगा। मैंने पूछा तो टीचर ने कहा कि आईक्यू. तो मैं पढ़ा लूँगा, लेकिन उसका ईक्यू. बढ़ाने के लिए कुछ चीज़ें जरूरी हैं इसलिए मैं उन्हें ऐसी जगहों पर जाने के लिए प्रेरित करता हूँ। जन्मदिन पर बच्चा केन्द्रित होता है और तब वो जो करता है, बहुत ताकत से करता है। हमारे लिए जरूरी है कि हम जीवन में ऐसा कुछ समय ऐसे लोगों के बीच बिताएँ। अखबार डालने वाले का नाम नहीं जानते होंगे, दो दिन नहीं आया तो उससे नहीं पूछा कि बीमार तो नहीं हो गए? ड्राइवर, दूधवाले का नाम पूछा नहीं। आप उससे पूछिए तो आपका सोचने का तरीका बदल जाएगा। इन लोगों से जितना संपर्क में आएँगे, उससे उतना ही ईक्यू. शार्प होगा। आईक्यू. सक्सेस देता है, लेकिन सेंस ऑफ विज़न देने में ईक्यू. अहम है।''

''योग आसन के संबंध में भ्रम है कि इस आसन से ऐसा होता है, उस आसन से वैसा होता है। ये विज्ञान है। आपको जो आसन अच्छा लगे और कंफर्ट दे उसे शुरू करें। दुनिया के कई परिवारों में बच्चों की हाइट बढ़ाने के लिए ताड़ासन को रेगुलराइज कर दिया गया है। मन में तो ये रहता है कि ताड़ासन कर रहा हूँ तो मेरी हाइट बढ़ेगी। ये प्रक्रिया है। ये सिखाता है कि शरीर मन और बुद्धि साथ कैसे काम कर रहे हैं, ठीक कर रहे हैं या नहीं।''

''मैं खड़ा हूँ तो कहेंगे कि मैं अपने पैरों पर खड़ा हूँ। लेकिन, अगर बारीकी से देखोगे तो आप अपने पैरों पर नहीं खड़े हो। बॉडी को देखो तो पता चलेगा कि वेट कमर पर है। फिर देखोगे तो पता चलेगा कि नी और एंकल पर है। बाद में पता चलेगा कि तलवे पर वेट आता है।''

(भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की वेबसाइट mhrd.gov.in से साभार)

नव संवत्सर

भारतीय नववर्ष- वैज्ञानिक और सांस्कृतिक आधार

❒ संदीप जोशी

वर्तमान परिवेश में पश्चिम का अन्धानुकरण करते हुए हम 31 दिसम्बर की रात को कड़कड़ाती ठण्ड में नव वर्ष काँप-काँप कर मनाते हैं। पटाखे फोड़ते हैं, मिठाइयाँ बाँटते हैं और शुभकामना सन्देश भेजते हैं..कहीं-कहीं तामसी भोजन का प्रावधान भी होता है..भद्दे नृत्य इत्यादि इत्यादि। भारत और भारतीयता से कोई सम्बन्ध नहीं फिर भी पता नहीं क्यों कुछ लोगों को 1 जनवरी वाला नववर्ष युक्तिसंगत लगता है। 31 दिसम्बर की रात या 1 जनवरी को नव वर्ष मनाने का कोई वैज्ञानिक आधार हो, ऐसा कभी ध्यान नहीं आता।

यूरोप और अमरीका की अपनी कैलेंडर पद्धति है, जिनके पीछे वैज्ञानिक आधार कम है और राजनैतिक आधार ज्यादा है। किन्तु भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनेक वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक आधार है जो नूतनता का बोध कराता है।

भारतीय नव वर्ष का धार्मिक एवं सांस्कृतिक आधार:

1 ऐसी मान्यता है कि सतयुग का प्रथम दिन इसी दिन शुरू हुआ था।

2 एक अन्य मान्यता के अनुसार ब्रह्मा ने इसी दिन सृष्टि का सृजन शुरू किया था।

3 भारत के कई हिस्सों में गुड़ी पड़वा या उगादी पर्व मनाया जाता है। इस दिन घरों को हरे पत्तों से सजाया जाता है और हरियाली चारों ओर दृष्टिगोचर होती है।

4 मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का राज्याभिषेक इसी दिन हुआ।

5 माँ दुर्गा की उपासना की चैत्रीय नवरात्र व्रत का प्रारम्भ इसी दिन से होता है।

6 महाराज विक्रमादित्य ने इसी दिन राष्ट्र को सुसंगठित कर शकों की शक्ति का उन्मूलन कर देश से भगा दिया और उनके ही मूल स्थान अरब में विजयश्री प्राप्त की। साथ ही यवन, हूण, कुषाण, पारसिक तथा कंबोज देशों पर अपनी विजय ध्वजा फहराई।

7 सारे भारतीय संवत् इसी दिन प्रारम्भ होते हैं।

इस वर्ष पश्चिमी कैलेंडर के अनुसार ये वर्ष 18 मार्च, 2018 (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) को शुरू होगा।

मित्रों मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा पद्धति की मानसिक गुलामी पीढ़ियों से हमारे ऊपर हावी है। अतः ऐसा संभव है किसी के विचार में भारतीय नववर्ष का सांस्कृतिक और धार्मिक आधार कपोल कल्पित हो तो उस समस्या के समाधान के लिए यहाँ भारतीय नव वर्ष के सन्दर्भ में कुछ वैज्ञानिक और प्राकृतिक तथ्य संकलित किए हैं जो अपेक्षाकृत आसानी से दृष्टिगोचर एवं वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित है।

भारतीय नव वर्ष का प्राकृतिक एवं वैज्ञानिक आधार:

1 भारतीय नव वर्ष के आगमन का सन्देश प्रकृति का कण कण देता है। पुरातन का समापन और नवीन का सृजन प्रकृति का हर एक कोना कहता है। वृक्ष पेड़ पौधे अपनी पुरानी पत्तियों, छालों से मुक्ति पा कर नवीन रूप से पल्लवित होते हैं।

2 महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने प्रतिपादित किया है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दिन-मास-वर्ष और युगादि का आरंभ हुआ है। युगों में प्रथम सतयुग का आरंभ भी इसी दिन से हुआ है। कल्पादि-सृष्ट्यादि-युगादि आरंभ को लेकर इस दिवस के साथ अति प्राचीनता जुड़ी हुई है। सृष्टि की रचना को लेकर इसी दिवस से गणना की गई है, लिखा है-

चैत्र-मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेहनि।
शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति।।

भास्कराचार्य ने इसी दिन को आधार रखते हुए गणना कर पंचांग की रचना की जो कि विभिन्न ग्रहों, चंद्रमा एवं सूर्य की गति एवं दिशाओं का उतना ही प्रामाणिकता से निर्धारण करता है जितना आधुनिक सैटलाईट।

3 हमारे देश में सभी वित्तीय संस्थानों का नव वर्ष अप्रैल से प्रारम्भ होता है। यह समय दो ऋतुओं का संधिकाल है। इसमें रातें छोटी और दिन बड़े होने लगते हैं। ठंड की समाप्ति और ग्रीष्म का प्रारंभ अत्यंत ही मधुर और आनंददायक अनुभव देता है।

4 इसी समय बर्फ पिघलने लगती है। आम्रवृक्षों पर बौर आने लगता है। पेड़ों पर नवीन पत्तियों और कोंपलों का आगमन होता है। पतझड़ ख़त्म होता है और बसंत की शुरूआत होती है। प्रकृति में हर जगह हरियाली छाई होती है। प्रकृति का नव शृंगार होता है।

5 आकाश व अंतरिक्ष हमारे लिए एक विशाल प्रयोगशाला है। ग्रह-नक्षत्र-तारों आदि के दर्शन से उनकी गति-स्थिति, उदय-अस्त से हमें अपना पंचांग स्पष्ट आकाश में दिखाई देता है। अमावस-पूनम को हम स्पष्ट समझ जाते हैं। पूर्णचंद्र चित्रा नक्षत्र के निकट हो तो चैत्री पूर्णिमा, विशाखा के निकट वैशाखी पूर्णिमा, ज्येष्ठा के निकट से ज्येष्ठ की पूर्णिमा इत्यादि आकाश को पढ़ते हुए जब हम पूर्ण चंद्रमा को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के निकट देखेंगे तो यह फाल्गुन मास की पूर्णिमा है और यहाँ से नवीन वर्ष आरंभ होने को 15 दिवस शेष है। इन 15 दिनों के पश्चात् जिस दिन पूर्ण चंद्र अस्त हो तो अमावस (चैत्र मास की) स्पष्ट हो जाती है और अमांत के पश्चात प्रथम सूर्योदय ही हमारे नए वर्ष का उदय है। इस प्रकार हम

बिना पंचांग और कैलेंडर के प्रकृति और आकाश को पढ़कर नवीन वर्ष को सहज ही प्राप्त कर लेते हैं। ऐसा दिव्य नववर्ष दुर्लभ है।

6 ये भारतीय नव वर्ष की वैज्ञानिक प्रामाणिकता ही है जो किसी के नाम का मोहताज नहीं बल्कि वैज्ञानिक गणनाओं से शुरू होता है जबकि अंग्रेजी नव वर्ष बिना किसी वैज्ञानिकता के, किसी धर्मगुरु या प्रवर्तक के जन्म से प्रारंभ कर दिया गया।

7 स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नवम्बर 1952 में वैज्ञानिकों और औद्योगिक परिषद् के द्वारा पंचांग सुधार समिति की स्थापना की गयी। समिति ने 1955 में सौंपी अपनी रिपोर्ट में विक्रम संवत् को भी स्वीकार करने की सिफारिश की। अफ़सोस यह हो न सका। यदि भारत का आधिकारिक संवत् विक्रम संवत् होता तो हम ईस्वी संवत् से 57 वर्ष आगे रहते (2074 होता) जबकि वर्तमान में राष्ट्रीय शाके 1939 चल रहा है।

जब भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ल एकम् की शुभ बेला आती है, तब भारतीय प्रायद्वीप का माहौल आनंदवर्द्धक हो जाता है। प्रातः का सम तापमान सभी ओर नई चेतना, नई शक्ति, नई ऊर्जा का संचार करता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो, एक नया उल्लास, एक नई ललक प्राणी समूह में व्याप्त हो रही है। वृक्ष अपनी पुरानी पत्तियाँ गिरा कर नई कोंपलें ला रहे होते हैं, सागर में नए बादल आकाश का रूख करना प्रारम्भ करते हैं जो नई वर्षा के साथ पृथ्वी को पुनः एक वर्ष के लिए आनन्दित करने वाला वर्षक्रम होता है। शक्ति स्वरूपा देवी के नवों स्वरूपों की आराधना प्रारम्भ की जाती है। यह नौ दुर्गा पूजन भी कहलाता हैं। किसान अपनी फसल को खलिहान से घर ला चुका होता है और अगले वर्ष की नई फसल योजनाओं के सपने बुन रहा होता है। नई खेती का शुभारम्भ करता है। खेतों की ग्रीष्मकालीन हंकाई-जुताई, खाद व कूड़े-करकट को खेतों में डालना, नहरों, कुओं की सफाई तालाबों की खुदाई। आदि-आदि कार्यों के द्वारा नई शुरूआत, नया शुभारम्भ होता है। व्यापारी नये खाते खोलते हैं। उनका पुराना भुगतान होता है, गाँवों में सालभर बर्तनों को देने वाले प्रजापतियों को किसान अन्न दे कर हिसाब करता है, यही हाल धोबी, लुहार और बढ़ई को उसकी सालभर की मजदूरी प्रदान करने का होता है, चिकित्सक का हिसाब होता है। इसी तरह मुनाफा कास्त, बटाई कास्त एवं कृषि श्रमिकों के साल की तयपाई इसी समय होती है अर्थात् भारतीय नववर्ष जिसे संवत्सर कहा जाता है, भारतीय प्रायद्वीप ही नहीं पूरे एशिया महाद्वीप पर गम्भीर प्रभाव रखता है। कुल मिला कर ऐसा लगता है जैसे ईश्वर की सृष्टि नवचेतना के संकल्प लिए मधुर बाँसुरी बजा रही है, जिसकी मादक बेला हमें नई शक्ति, नई क्रियाशीलता से भर रही है। मानो ऊर्जा की वर्षा हो रही हो। सच तो यह है कि भारतीय नव संवत्सर मानवीय न होकर प्राकृतिक नववर्ष है, इस समय आम वातावरण इस तरह का हो जाता है, मानो पुरानी बैटरी हटा कर नई बैटरी लगाई गई हो, जिसमें दमदार करेंट है। इस प्राकृतिक सत्य को, इस ईश्वरीय सत्य को भारतवासियों ने अनुभवों के द्वारा पहचाना उसमें अनुसंधान किए, सत्य की खोज की, सनातन परम्परा के मार्ग पर चल कर कालचक्र के गहरे रहस्यों को जाना-समझा। इसी सारे ताने-बाने को अपने में समेटे है भारतीय पंचांग। जो भारतीय जीवन पद्धती का एक अभिन्न अंग और भारतीय नववर्ष शुभारम्भ का महान दस्तावेज भी है।

भारतीय कालगणना-

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 18 मार्च, रविवार से भारतीय संवत्सर विक्रमी 2075 का शुभारम्भ होने जा रहा है, इस अवसर पर हमारे बीच यह जिज्ञासा सहज जाग उठती है कि संवत्सर क्या है, कब से है, क्यों है, इसका एक संक्षिप्त विश्लेषण की कोशिश प्रस्तुत है।

भारत के द्वारा अंतरिक्ष में छोड़ा गया उपग्रह आर्यभट्ट, कालगणना व खगोल के महान भारतीय वैज्ञानिक आर्यभट्ट का अभिनंदन है, सम्मान है। भारतीय वेदों के अनुसार पृथ्वी पर सृजन की उत्पत्ति 197 करोड़ वर्ष पूर्व हुई है, आश्चर्य है कि आज की आधुनिकतम तमाम वैज्ञानिक खोज भी इसी नतीजे पर पहुँची कि लगभग 2 अरब वर्ष पूर्व से सृजन अस्तित्व में आया, दोनों गणनाएँ पूरी तरह एक दूसरे से मिल रही है, भारतीय गणना पर विश्व का वैज्ञानिक समाज अचम्भित है कि भारतीयों ने इतनी सटीक गणना कैसे की, ग्रहों की चाल कैसे जानी, सूर्यग्रहण-चंद्र ग्रहण को कैसे पहचाना!

ऋग्वेद के प्रथम अध्याय के 130 वें सूक्त में चंद्रमा को नक्षत्रेश कहा गया है, वेदों को पाश्चात्य विश्लेषक भी 10-15 हजार वर्ष पूर्व रचित मानते हैं। हमारे महाभारत में भी आया है कि वेदों का पुनःलेखन वेदव्यासजी ने किया है। इस प्रकार इतना तो स्पष्ट है कि विश्व को कालगणना का प्रथम कार्य व विचार भारत ने ही किया व दिया।

जिस सूर्य सिद्धांत पर अंग्रेजी वर्ष चल रहा है, उस सूर्य सिद्धांत को आर्यभट्ट ने परिष्कृत किया, उन्होंने घोषित किया था कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है। वर्षमान 365.8586805 दिन भी उन्होंने ही तय किया व त्रिकोणमिति का आविष्कार किया था। इसी प्रकार उज्जैन में जन्मे वराह मिहिर ने खगोल पिण्डों की गहन छानबीन की, भास्कराचार्य ने सबसे पहले गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत को स्थापित करते हुए बताया कि सारा ब्रह्मांड एक दूसरे के गुरुबल अंतरों पर अवलंबित व गतिशील है।

इसलिए सबसे पहले हमें यह जानना चाहिए कि हमारी पृथ्वी के निवासियों को पूर्व दिशा से दो महान अनुभूतियाँ पश्चिम को जाती है। पहला सूर्य का प्रकाश जो पूर्व से प्रारम्भ हो कर पश्चिम की ओर जाता है दूसरी सनातन संस्कृति (सत्य का न्यूनतम ज्ञान जानने वाली संस्कृति)के ज्ञान का प्रकाश जिसने पश्चिम को कदम दर कदम मार्गदर्शित किया।

भारतीय संस्कृति विलक्षण प्रतिभा के मनीषियों की एक ऐसी शृंखला है जिसने सत्य की खोज में कठिन परिश्रम किया और समाज की व्यवस्था को व्यवस्थित किया। भारतीय अनुसंधानकर्त्ताओं के विश्व स्तरीय ज्ञान के रूप में कालगणना व खगोल सम्बंधी वैज्ञानिकता आज तक प्रामाणिकता से अपना सीना ताने खड़ी है।

कई बार अंग्रेजी वर्ष की संवत् से तुलना की जाने लगती है जो गलत है। सन् महज एक सुविधाजनक कैलेंडर है जिससे दैनिक राजकार्यों को निर्धारित करने व मजदूरी आदि के भुगतान के लिए काम में लिया गया, इसे सूर्य पर आधारित वर्षगणना मानी जा सकती है, हिसाब-किताब की व्यवस्था की एक विधा मानी जा सकती है।

मगर यह खगोल पिण्डों की स्थिति, गति,

प्रभाव सहित भारतीय व्रत-त्यौहार आदि में बहुत ही बौना साबित है।

हजारों वर्षों से व्रत, त्यौहार, विवाह, जन्म, पूजा-अर्चना, शुभाशुभ कार्य आदि में भारतीय संवत्सर ही अपनी विशेष भूमिका निभाता है। चाहे दीपावली हो, चाहे होली हो, चाहे कृष्ण जन्माष्टमी हो अथवा रामनवमी हो, संवत्सर से ही इनकी गणना होती है। विवाह, जन्मपत्री बनाने, मुण्डन, भविष्यवाणी करने, उद्घाटन, शिलान्यास, शुभ मुहूर्त अथवा किसी भी प्रकार के शुभ कार्य आदि में महत्ती भूमिका भारतीय कालगणना की है।

सृष्टि की उत्पत्ति, उसके विविध स्वरूपों की व्यवस्था और उनकी निरंतरतम गतिविधियों और अन्त (प्रलय) के संदर्भ में जब अध्ययन प्रारम्भ होता है तो सबसे पहला प्रश्न यही उत्पन्न होता है कि खगोल क्या है, कब से है, कब तक रहेगा? हमारे पूर्वजों की इसी जिज्ञासा और सामाजिक व्यवस्थापन की आवश्यकताओं ने कालगणना को जन्म दिया।

सनातन ऋषियों ने सबसे पहले यह महसूस किया कि पृथ्वी पर होने वाले दिन व रात का समय घटता-बढ़ता रहता है मगर दिन और रात का संयुक्त समय एक ही रहता है, चन्द्रमा का रात्रि दर्शन लगभग निश्चित क्रम में बढ़ता और घटता है एवं लगभग निश्चित अंतर से रात्रि में पूर्ण प्रकाश (पूर्णिमा) और अप्रकाश (अमावस्या) आता है। यह भी सामने आया कि पूर्णिमा या अमावस्या भी एक निश्चित समय के पश्चात् पुनः आते हैं जो माह से जाना गया। इतना ही नहीं जब अन्य क्षेत्रों पर ध्यान दिया गया तो पाया कि वर्षा, सर्दी, गर्मी के तीनों मौसम निश्चित अंतर से पुनः आते हैं। सभी 6 ऋतुओं का भी सुनिश्चित चक्र है और इसी चक्र से अन्ततः स्थापित हुआ वर्ष, क्योंकि यह महसूस किया गया कि बारह पूर्णिमाओं के बाद हम ठीक उसी स्थिति में होंगे जिस स्थिति में इस समय हैं। इसी कारण 12 माह की एक इकाई के रूप में वर्ष शब्द आया और इस वर्ष के शुभारम्भ को वर्ष प्रतिपदा कहा गया।

काल व्यवस्थापन की आवश्यकता व रोजमर्रा के कार्यों में इसकी भूमिका बढ़ती गई और इसी क्रम में अध्ययन भी बढ़ता गया और मनुष्य की आयु के कारण आया शताब्दि! फिर अपनी निशानियों को याद रखने और वंश की शृंखला निश्चित करने या किसी विशेष घटना को याद रखने के क्रम मे नाम वाले संवत् आए। इस तरह के संवतों में विक्रमी संवत् नवीनतम है। जो विक्रमादित्य द्वारा विदेशियों पर विजय प्राप्त कर, उन्हें भारत से बाहर खदेड़ देने की स्मृति में है।

किन्तु इन सभी कृत्यों के चलते हुए भी काल की सही गणना, उसके वैज्ञानिक विश्लेषण, घटित होने वाले प्रभावों से लेकर मानव जीवन तक पर पड़ने वाले प्रभावों का गहन अध्ययन हुआ, जाँचा परखा और खरा पाया गया तत्व संग्रहीत किया गया। वह निरंतर चलता रहा, ज्योतिष के रूप में निरंतर परीक्षा की कसौटी पर कसा जाता रहा। यह सारा गणित शुद्ध रूप से वैज्ञानिक अनुसंधान की वह विद्या है जो निरंतर नई खोजों में व्याप्त है।

समय के लघु, मध्यम, वृहद् और वृहदेत्तर स्थितियों को लेकर सनातन अनुसंधानों में कई इकाइयों और सिद्धांतों को स्थापित किया। लघु क्षेत्र में एक दिन और रात्रि का संयुक्त समय 60 घटी अथवा 24 होरा में विभाजित हुआ, उसमें पल, विपल, वलिप्त, पर और तत्पर का भी अन्तर विभाजन हुआ। भास्कराचार्य ने जिस त्रुटि को समय की इकाई का अंश माना वह सैकेंड का 33750वाँ हिस्सा है। वहीं काल की महानतम इकाई महाकल्प घोषित की जो कि वर्तमान ब्रह्माण्ड की सम्पूर्ण आयु अर्थात् 31, 10, 40, 00, 00, 00, 000 वर्ष है।

समय की छोटी इकाइयों में –

1 पूर्ण दिन(दिन व रात्रि)=60 घटी=24 होरा
1 घटी = 60 पल = 24 मिनिट
1 पल = 60 विपल = 24 सेकेंड
1 विपल = 60 वलिप्त
1 वलिप्त = 60 पर
1 पर = 60 तत्पर

समय की दैनिक इकाइयाँ-
7 दिन = 1 सप्ताह
15 दिन = 1 पक्ष (कृष्णपक्ष, शुक्लपक्ष)
2 पक्ष = 1 माह
2 माह = 1 ऋतु
6 ऋतु = 1 वर्ष
2 आयन = 1 वर्ष
100 वर्ष = 1 शताब्दी

समय की बड़ी इकाइयों में-
सतयुग= 17,28,000 वर्ष
त्रेतायुग= 12,96,000 वर्ष
द्वापरयुग= 8,64,000 वर्ष
कलयुग= 4,32,000 वर्ष

इन चारों युगों के जोड़ को महायुग कहा जाता है।
महायुग= 43,20,000 वर्ष
1 ब्रह्मदिवस=2 कल्प (1 कल्पदिन व 1 कल्परात) = 864 करोड वर्ष 360 ब्रह्म दिवसों (720 कल्प) का एक ब्रह्म वर्ष
1000 ब्रह्म वर्ष, ब्रह्मा की आयु मानी जाती है।

कुल मिलाकर ब्रह्माण्ड और उसमें व्याप्त ऊर्जा अनंत है, न तो उसका प्रारम्भ ज्ञात हो सकता न अंत हो सकता। यह सतत् व निरंतर है, मगर वर्तमान ब्रह्माण्ड संदर्भ में जो पूर्वजों द्वारा खोजी गई आयु और अंत की वैज्ञानिक खोज है, उसी का नाम संवत्सर की कालगणना है।

भारत में नववर्ष संवत्सर चैत्र शुक्ल एकम् से प्रारम्भ होता है। 1752 ई. तक इग्लैंड में भी नववर्ष 25 मार्च से ही प्रारम्भ होता था। बाद में इसे जनवरी से प्रारम्भ किया गया। संवत् पहले दिन से ही पूर्ण व्यवस्थित रहा मगर सन् में कई बार सुधार हुए, यहाँ तक कि यह पहले मात्र 10 महीने का ही था।

अंग्रेज सुविधाभोगी अधिक रहे, इससे कुछ विसंगतियाँ हैं। हमारे ऋषिवर जटिलताओं व कठिनाइयों से घबराते नहीं थे वे गूढ़ रहस्यों को भी खोज कर स्पष्टता से सामने लाते थे। चुनौतियों को स्वीकार करते थे और सत्यता को स्थापित करने की कोशिश होती थी। इसी कारण हमारा कालचक्र व उससे जुड़े विविध उपयोग मौसम और भविष्यवाणियाँ अधिक सटीक हैं।

सौर एवं चन्द्र वर्ष: –

भारत में वर्ष गणना दो प्रकार की स्वीकारी गई हैं। चन्द्रमा के पृथ्वी परिभ्रमण काल को आधार मानकर जो गणना की जाती है, उससे चन्द्र वर्ष का निर्धारण होता है एवं पृथ्वी के सूर्य परिभ्रमण को आधार मान कर जो गणना की जाती है उससे सौर वर्ष का निर्धारण होता है।

चन्द्रमा पृथ्वी का परिभ्रमण जितने समय में पूरा कर लेता है, सामान्यतः वह समय एक चन्द्रमास कहलाता है। मास के जिस पक्ष में चन्द्रमा घटता है, उसे कृष्ण पक्ष एवं जिस पक्ष में बढ़ता है, उसे शुक्ल पक्ष कहते हैं। सम्पूर्ण गोल 360 अंशों में समाहित है। इन 360 अंशों में व्याप्त गोल 30-30 अंश के 12 भाग है। 12 राशियाँ एक-एक राशि में 2 नक्षत्र आते है, (एक नक्षत्र 13 अंश 20 कला का होता है।)

पृथ्वी, चंद्र, सूर्य, ग्रह, धूमकेतु, आकाशगंगाएँ, निहारिकाएँ सबके सब घूम रहे हैं, घूमते हुए परिक्रमा कर रहे हैं, ऐसी स्थिति में

स्थिर चिह्नों की खोज हुई, ताकि दिशाओं का निश्चित निर्धारण हो सके, परिणामस्वरूप ब्रह्मांड के 27 स्थिर तारा समूह नक्षत्र के रूप पाए गए जिनका नाम अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पू. फाल्गुनी, उ. फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, रेवती।

ब्रह्मांड को निश्चित 12 भागों में बाँटा गया ये भाग राशि कहलाते हैं, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन आदि 12 राशियाँ हैं। नक्षत्रों एवं राशियों से ही ग्रहों की गत्यात्मक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। ग्रह गतिशील ज्योतिर्पिण्ड है, जो निरन्तर सूर्य की परिक्रमा करते रहते हैं। पृथ्वी अन्य ग्रहों की भाँति सूर्य की परिक्रमा करती है एवं चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है।

एक चन्द्र मास लगभग 29 दिन का होता है। सूक्ष्म गणनानुसार चन्द्रमा के बारह महीनों का वर्ष सौर वर्ष से 11 दिन 3 घटि 48 पल छोटा है। इस प्रकार 36 माह (लगभग तीन वर्षों) में चन्द्र वर्ष; सौर वर्ष से लगभग एक माह पिछड़ जाता है, चन्द्र वर्ष एवं सौर वर्ष में गणना में संगति अथवा सामंजस्य बनाए रखने के लिए लगभग 35 माह के बाद एक अधिमास आता है जिसे मल मास भी कहा जाता है।

शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा बढ़ते-बढ़ते जिस नक्षत्र में जाकर पूर्ण होता है उसी नक्षत्र के नाम के आधार पर मास का नाम होता है, इसे यों समझें कि किसी मास में पूर्णिमा के दिन यदि चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र में है तो वह माह चैत्र होगा। यदि विशाखा में है तो वह माह वैशाख होगा। पूर्णिमा की इन नाक्षत्रिक स्थितियों के आधार पर बारह माहों का नाम निर्धारण किया गया है। चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावन, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन आदि बारह माह हैं। भारतीय मासों के नाम किसी हीरो अथवा देवता के नाम पर न होकर शुद्ध खगोलीय स्थिति पर आधारित है, प्रत्येक पूर्णिमा की संध्या को पूर्व क्षितिज में विद्यमान नक्षत्र को पहचान कर चन्द्र स्थिति से इस सत्य की पुष्टि की जा सकती है।

नक्षत्रों के सापेक्ष सूर्य एक दिन में एक अंश चलता है एवं चन्द्रमा लगभग 13 अंश। अमावस्या को सूर्य एवं चन्द्र साथ होने से उनके बीच अन्तर शून्य अंश हो जाता है। आगामी 24 घण्टें में सूर्य एक अंश चलता है एवं चन्द्र 13 अंश। परिणामतः इन दोनों के बीच (13-1) याने 12 अंश का अन्तर हो जाता है। चन्द्रमा एवं सूर्य के बीच 12 अंश को अन्तर होने की जो समयाविधि होती है उसे ही तिथि कहते है। जब कोई तिथि दो क्रमागत सूर्योदयों तक रहती है तो तिथि की वृद्धि कहलाती है अर्थात् दोनों दिन एक ही तिथि मानी जाती है क्योंकि सूर्योदय के दिन जो तिथि होती है वही तिथि सारे दिन मानी जाती है। दो क्रमागत सूर्योदयों के बीच जब कोई तिथि पड़ती है तब उस तिथि का क्षय माना जाता है ऐसी तिथि की अवधि प्रायः 60 घड़ी से भी कम होती है। प्रत्येक तिथि क्रम से प्रतितिथि सूर्य एवं चन्द्रमा का अन्तर 12-12 अंश करके बढ़ता जाता है। पूर्णिमा को यह अन्तर 15 गुणा 12=180 अंश हो जाता है। पूर्णिमा को सूर्य एवं चन्द्र पृथ्वी से आमने सामने दिखाई देते हैं। पूर्णिमा की आगामी तिथि (कृष्ण पक्ष प्रतिपदा) से सूर्य एवं चन्द्रमा का अन्तर 12 अंश घटते घटते लगभग 15 दिन में यह शून्य हो जाता है तब अमावस्या की स्थिति आ जाती है अर्थात् चन्द्रमास में तिथियों का क्रम मनमाने आधार पर नहीं है यह क्रम चन्द्रमा एवं सूर्य की गति एवं उनकी दूरी पर निर्भर करता है। जो लोग भारतीय तिथियों में मनमानापन बताते हैं उन्हें भारतीय कालगणना का ज्ञान नही है। तिथि गणना साधार एवं वैज्ञानिक है। पृथ्वी से सबसे निकट चन्द्र है उसके पश्चात् बुध, शुक्र, सूर्य, मंगल, बृहस्पति एवं शनि है। यदि निकटता एवं दूरी को ध्यान में रखकर इनकी गणना सूर्य से आरंभ करें तो एक वृत्ताकार क्रम बनता है सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्र, शनि, गुरु एवं मंगल। प्रत्येक अहोरात्र (रात दिन) में 24 होरा (घण्टे) होते हैं एवं प्रत्येक होरा एवं प्रत्येक होरा पर किसी ग्रह का आधिपत्य होता है। सूर्योदय के समय पर प्रथम होरा पर जिस ग्रह का अधिकार होता है वह दिन उसी ग्रह के नाम से माना जाता है। सृष्टि के आरंभ के दिन चैत्र, शुक्ला प्रतिपदा थी एवं रविवार था, अतः दिन की गणना रविवार से एवं होरा गणना रवि (सूर्य) से की जाती है। पूर्वोक्त क्रम से 24 होरा के मध्य सातों ग्रहों का प्रभाव क्रमशः होता है एवं 25वां होरा आगामी दिन का प्रथम होरा होता है। रविवार के प्रथम होरा से गणना करे तो सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्र, शनि, गुरु, मंगल इस क्रम से गणना करने पर 25वां होरा चन्द्र का होता है। अतः रविवार से आगामी वार चन्द्रवार है, चन्द्रवार से गणना, प्रथम होरा से चन्द्रमा से आरंभ करेंगें तो 25 वां होरा अर्थात् आगामी दिन का प्रथम होरा मंगल को आएगा अतः सोमवार से आगामी वार मंगल हुआ। स्पष्ट है कि वारों के क्रम निर्धारण में एक व्यवस्थित आधार को लेकर चला गया है और आज विश्व के लगभग सभी पंचांग भारत के इसी वार क्रम को अपना रहे है। यह वार क्रम भी वैज्ञानिक है, साधार है।

सूर्य सिद्धान्त के अनुसार पृथ्वी सूर्य का परिभ्रमण करने में 365 दिन, 15 घड़ी, 31 पल, 31 विपल एवं 24 प्रतिविपल का समय लेती है। वस्तुतः यही एक वर्ष का मान है। ईस्वी सन् का दिनांक मध्य रात्रि 12 से आरंभ होता है अर्थात् रात्रि के 12 बजे के पश्चात् अगला दिन वहाँ आरंभ हो जाता है, इसका सीधा सा अर्थ है कि उस समय भारत में सूर्योदय हो रहा होता है, इस तरह से इतना तो स्पष्ट है कि पाश्चात्य कालगणना भारतीय कालगणना से अत्यधिक प्रभावित है।

हमारा राष्ट्रीय संवत् शक संवत् है जो सौर गणना पर आधारित है। शकों को पराजित करने वाले प्रतिष्ठानपुर के राजा शालिवाहन की स्मृति में शक-शालिवाहन संवत् आरंभ हुआ। इसमें एवं विक्रमी संवत् में वर्षों का अन्तर है। सम्राट विक्रमादित्य इनसे पूर्व के है उन्होंने सिन्धु तट पर शकों को निर्णायक रूप से परास्त किया था। उन्होंने 'शाकारि' की उपाधि धारण की थी एवं विक्रमी संवत् आरंभ किया था। यह चन्द्र वर्ष है एवं हमारे सभी पर्वों एवं सांस्कृतिक उत्सवों का आधार है। वस्तुतः चन्द्र वर्ष एवं सौर वर्ष दोनों ही हमारी संस्कृति की अभेद्य कालगणनाएँ है एवं दोनो को ही आधार मानकर भारतीय जनजीवन निरन्तर विकास की ओर अग्रसर रहा है। ऋतु निर्धारण, उत्तरायण, दक्षिणायण, लग्न, आनयन आदि में सौर गणना मुख्य है। व्रत उत्सव, यज्ञ, देवार्चन, विवाह आदि एवं अन्यान्य मुहूर्त प्रकरणों में चन्द्रगणना का विशेष महत्त्व है। आप सभी को नव वर्ष की ढेरों शुभकामनाएँ, नव वर्ष आप सभी के जीवन में, सम्पूर्ण शिक्षा विभाग में और अपने राष्ट्र में अपार हर्ष और खुशहाली ले कर आए। यही आकांक्षा है।

व्याख्याता
आ.रा.उ.मा.वि. रेवत, जालोर
मो: 9414544197

(संदर्भ ग्रंथ : भारत में विज्ञान की उज्ज्वल परम्परा)

महिला दिवस विशेष

शिक्षा और साहित्य के विकास में नारी की भागीदारी

❒ आकांक्षा यादव

भारतीय संस्कृति में नारी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वह शिव भी है और शक्ति भी, तभी तो भारतीय संस्कृति में सनातन काल से अर्द्धनारीश्वर की कल्पना सटीक बैठती है। इतिहास गवाह है कि भारतीय समाज ने कभी मातृशक्ति के महत्त्व का आकलन कम नहीं किया और जब भी ऐसा करने की कोशिश की और उन्हें ज्ञानार्जन से रोका तो समाज में कुरीतियाँ और कमजोरियाँ ही पनपी। नारी को आरंभ से ही सृजन, सम्मान और शक्ति का प्रतीक माना गया है। शास्त्र से लेकर साहित्य तक नारी की महत्ता को स्वीकार किया गया है– ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।'' सिंधु संस्कृति में भी मातृदेवी की पूजा का प्रचलन परिलक्षित होता है। नारी का कार्यक्षेत्र न केवल घर वरन् सारा संसार है। प्रकृति ने वंश वृद्धि की जो जिम्मेदारी नारी को दे रखी है, वह न केवल एक दायित्त्व है अपितु एक चमत्कार और अलौकिक सुख भी। इन सबके बीच नारी आरंभ से ही अपनी भूमिकाओं के प्रति सचेत रही है।

भारतीय संस्कृति में महिलाओं की शिक्षा और साहित्य में उनके योगदान पर नजर डालें तो वैदिक काल में यह पूर्ण विकास पर थी। वैदिक काल में शिक्षा के द्वार सभी स्त्रियों के लिए खुले थे और पुस्तक रचना, शास्त्रार्थ, साहित्य तथा अध्यापनकार्य के द्वारा नारी उच्च शिक्षा का उपयोग करती थी। ईसा से 500 वर्ष पूर्व वैयाकरण पाणिनि ने भी नारियों के द्वारा वेद अध्ययन की चर्चा की है। वैदिक युग में छात्राओं के दो वर्ग थे। प्रथमतः सद्योवधु वे छात्राएँ थीं जो विवाह के पूर्व तक कुछ वेद मंत्र व याज्ञिक प्रार्थनाएँ पढ़ लेती थी। द्वितीयतः ब्रह्मवादिनी, जो आजीवन शिक्षा ग्रहण करने में लगी रहती थी। पुत्री का उपनयन संस्कार व स्त्रियों को यज्ञ करने का अधिकार भी प्राप्त था। उच्च शिक्षा के लिए पुरुषों की भाँति स्त्रियाँ भी शैक्षिक अनुशासन के अनुसार ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर शिक्षा ग्रहण करती, तत्पश्चात विवाह करती

थी। विश्ववरा, अपाला, लोमशा तथा घोषा जैसी विदुषियों ने वेद मंत्रों की रचना की और ऋषि पद को प्राप्त कर लिया था। अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा भी विदुषी थी और भी कई ऋषि स्त्रियों की रचनाएँ ऋग्वेद संहिता में मिलती है। ऋग्वेद में तो सरस्वती को सबसे पवित्र नदी मानने के साथ-साथ 'वाणी प्रार्थना', 'कविता की देवी' एवं 'बुद्धि को तीव्र करने वाली और संगीत की प्रेरणादायी' कहा गया है।

महिलाओं की शिक्षा का अनन्य संबंध स्वतंत्रता आंदोलन से भी जुड़ा हुआ है। शिक्षित और जागरूक होती महिलाओं ने समानांतर रूप में अपने हकों की लड़ाई भी लड़ी। आखिर तभी तो महात्मा गाँधी ने कहा था–''भारत में ब्रिटिश राज मिनटों में समाप्त हो सकता है, बशर्ते भारत की महिलाएँ ऐसा चाहें और इसकी आवश्यकता को समझें।'' आजादी के दौर में तमाम सुशिक्षित महिलाओं ने स्वतंत्रता-आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। एक तरफ इन्होंने स्त्री-चेतना को प्रज्वलित किया, वहीं आजादी के आंदोलन में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ी। इसी क्रम में महिला मताधिकार को लेकर 1917 में सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में वायसराय से भी एक प्रतिनिधिमण्डल मिला। 'भारत कोकिला' के नाम से मशहूर सरोजिनी नायडू एक अच्छी कवयित्री भी थी। स्वामी विवेकानन्द की शिष्या मार्गरेट एलिजाबेथ नोबेल (भगिनी निवेदिता) ने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षिका बनकर 'निवेदिता पाठशाला' के माध्यम से एक प्रभावी शिक्षा-पद्धति का आरंभ किया। उनका मानना था कि– ''पत्नीत्व से पहले नारीत्व और नारीत्व से पहले मानवता, बालिका शिक्षण का ध्येय होना चाहिए।'' कलकत्ता विश्वविद्यालय में 11 फरवरी, 1905 को आयोजित दीक्षान्त समारोह में वायसराय कर्जन द्वारा भारतीय युवकों के प्रति अपमानजनक शब्दों का उपयोग करने पर भगिनी निवेदिता ने खड़े होकर निर्भीकता के साथ प्रतिकार किया। थियोसोफिकल सोसायटी के बैनर तले एनी बेसेंट ने भी स्त्री शिक्षा के लिए पुरजोर प्रयास किया। एनी बेसेंट ने ही 1898 में बनारस में सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की नींव रखी, जिसे 1916 में महामना मदनमोहन मालवीय ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में विकसित किया। मदनमोहन मालवीय जी सदा बालिका शिक्षा को बालकों की शिक्षा से ज्यादा महत्त्व देते थे। उनका मानना था कि–''पुरुषों की शिक्षा से स्त्रियों की शिक्षा का प्रश्न अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वही भारत की भावी संतानों की माता हैं। वे हमारे भावी राजनीतिज्ञों, विद्वानों, तत्वविज्ञानियों, व्यापार तथा कला कौशल के नेताओं की प्रथम शिक्षिका हैं।''

20वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में भारत में इस बात पर ध्यान दिया गया कि नारी शिक्षा उनके सामाजिक जीवन के लिए उपयोगी होनी चाहिए क्योंकि उस समय जहाँ तक लिखने-पढ़ने का संबंध था, लड़कों और लड़कियों की शिक्षा में कोई अंतर न था। एक लंबे समय तक उच्च शिक्षा पाने के पश्चात् स्त्रियाँ अध्यापन, चिकित्सा कार्य अथवा कार्यालयों में ही अधिकतर काम करती नजर आती थी पर वर्तमान दौर में देखें तो नारी हर क्षेत्र में परचम फैला रही हैं। शिक्षा के चलते नारी जागरूक हुई और इस जागरूकता ने नारी के कार्यक्षेत्र की

सीमा को घर की चहारदीवारी से बाहर की दुनिया तक फैला दिया। इससे जहाँ नारी अपने पैरों पर खड़ी हो सकी, वहीं आर्थिक आत्मनिर्भरता ने उसे रचनात्मक कार्यों हेतु प्रेरित किया। पर अभी भी नारी-शिक्षा के क्षेत्र में बहुत प्रगति होनी बाकी है। जिन पर गंभीरता से कार्य करने की जरूरत है।

शिक्षा की बदौलत ही आज नारी जीवन के हर क्षेत्र में कदम बढ़ा रही है। राजनीति, प्रशासन, उद्योग, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, फिल्म, साहित्य, मीडिया, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, वकालत, कला-संस्कृति, शिक्षा, आई.टी., खेलकूद, सैन्य से लेकर अंतरिक्ष तक नारी ने छलांग लगाई है। शिक्षा के साथ नारी का स्वभाव और चरित्र भी बदला है एवं अपने अधिकारों के प्रति वह जागरूक हुई है। घरेलू महिला हिंसा अधिनियम, सार्वजनिक जगहों पर यौन उत्पीड़न के विरुद्ध नियम एवं लैंगिक भेदभाव के विरुद्ध उठती आवाज नारी को मुखर कर रही हैं। पंचायतों में मिले आरक्षण का उपयोग करते हुए शिक्षित नारी जहाँ नए आयाम रच रही हैं, वहीं विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका में भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा है। अब शिक्षित व जागरूक नारी-समाज की अवहेलना करना आसान नहीं रहा। एक तरफ लड़कियाँ हाईस्कूल व इंटर की परीक्षाओं में बाजी मार रही हैं, वहीं देश की सर्वाधिक प्रतिष्ठित सिविल सेवाओं में भी उनका नाम हर साल बखूबी जगमगा रहा है। कल्पना चावला व सुनीता विलियम्स ने तो अंतरिक्ष तक की सैर की। दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, शराबखोरी, लिंग विभेद जैसी तमाम बुराइयों के विरुद्ध शिक्षित नारी आगे आ रही है और दहेज लोभियों को बैरंग लौटाने, शराब के ठेकों को बंद करने एवं लड़कियों को स्कूल भेजने व अपने कैरियर को प्राथमिकता देने जैसी पहल अपना रंग लाने लगी है।

यही नहीं प्राचीनकाल में जहाँ लोमशा एवं लोपामुद्रा आदि नारियों ने ऋग्वेद के अनेक सूक्तों की रचना करके और मैत्रेयी, गार्गी, घोषा, अदिति इत्यादि विदुषियों ने अपने ज्ञान से तब के तत्वज्ञानी पुरुषों को कायल बना रखा था, उसी परम्परा में अब पुरुष पुरोहितों की परम्परा को महिलाओं ने तोड़ दिया है। ये महिलाएँ वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच पुरोहिती का कार्य करती हैं और विवाह के साथ-साथ शांति यज्ञ, गृह प्रवेश, मुंडन, नामकरण और यज्ञोपवीत भी करा रही हैं और यह जरूरी नहीं कि वे ब्राह्मण ही हों। वस्तुतः समाज की यह पारंपरिक सोच कि महिलाओं के जीवन का अधिकांश हिस्सा घर-परिवार के मध्य व्यतीत हो जाता है और बाहरी जीवन से संतुलन बनाने में उन्हें समस्या आएगी, बेहद दकियानूसी लगती है। शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के चलते आज महिला भी अपने कैरियर के प्रति संजीदा है। इस अवधारणा को बदलने की जरूरत है कि बच्चों का लालन-पोषण और गृहस्थी चलाना सिर्फ नारी का काम है। यह एक पारस्परिक जिम्मेदारी है, जिसे पति-पत्नी दोनों को उठाना चाहिए। इस बदलाव का कारण शिक्षा के चलते महिलाओं में आई जागरूकता है, जिसके चलते महिलाएँ अपने को दोयम नहीं मानती और कैरियर के साथ-साथ पारिवारिक-सामाजिक परम्पराओं के क्षेत्र में भी बराबरी का हक चाहती हैं। वर्षों से रस्मो-रिवाज के दरवाजों के पीछे शर्मायी-सकुचायी-सी खड़ी महिलाओं की छवि अब सजग और आत्मविश्वासी व्यक्तित्व में तब्दील हो चुकी है। जहाँ प्रकृति पुरुष-स्त्री को बिना किसी भेदभाव के बराबर धूप-छाँव बाँटती हो, वहाँ कोई महिला यदि किसी क्षेत्र में जाना चाहती है तो मात्र इसलिए कि वह एक महिला है, उसको उस क्षेत्र में जाने से नहीं रोका जा सकता। आखिर अपनी पसन्द का क्षेत्र चुनने का सभी को अधिकार है।

शिक्षा ने जहाँ नारी को जागरूक बनाया वहीं अपनी अभिव्यक्ति के विस्तार का सुनहरा मौका भी दिया। साहित्य व लेखन के क्षेत्र में भी नारी का प्रभाव बढ़ा है। सरोजिनी नायडू, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता (1956), प्रथम महिला साहित्यकार अमृता प्रीतम, प्रथम भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त महिला (1976) आशापूर्णा देवी, इस्मत चुगतई, शिवानी, कुर्रतुल हैदर, महाश्वेता देवी, मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया, मृणाल पांडेय, चित्रा मुद्गल इत्यादि नामों की एक लंबी सूची है, जिन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं को ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उनका साहित्य आधुनिक जीवन की जटिल परिस्थितियों को अपने में समेटे, समय के साथ परिवर्तित होते मानवीय सम्बन्धों का जीता-जागता दस्तावेज है। भारतीय समाज की सांस्कृतिक और दार्शनिक बुनियादों को समकालीन परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करते हुए उन्होंने अपनी वैविध्यपूर्ण रचनाशीलता का एक ऐसा आकर्षक, भव्य और गम्भीर संसार निर्मित किया, जिसका चमत्कार सारा साहित्यिक जगत महसूस करता है।

साहित्य के माध्यम से नारी ने जहाँ पुराने समय से चली आ रही कुप्रथाओं पर चोट की है, वहीं समाज को नए विचार भी दिए। अपनी विशिष्ट पहचान के साथ नारी साहित्यिक व सांस्कृतिक गरिमा को नई ऊँचाईयाँ दे रही है। उसके लिए चीजें जिस रूप में बाह्य स्तर पर दिखती हैं, सिर्फ वही सच नहीं होतीं बल्कि उनके पीछे छिपे तत्वों को भी वह बखूबी समझती है। साहित्य व लेखन के क्षेत्र में सत्य अब स्पष्ट रूप से सामने आ रहा है। समस्याएँ नए रूप में सामने आ रही हैं और उन समस्याओं के समाधान में नारी साहित्यकार का दृष्टिकोण उन प्रताड़नाओं के यथार्थवादी चित्रांकन से भिन्न समाधान की दशाओं के निरूपण की मंजिल की ओर चल पड़ा है। नारी को 'परिसीमित दायरे' से परे एक स्वतंत्र व समग्र व्यक्तित्व के रूप में देखने की जरूरत है। रोती-बिलखती और परिस्थितियों से हर पल समझौता कर अपना 'स्व' मिटाने को मजबूर नारी आज की कविता, कहानी, उपन्यासों में अपना 'स्व' न सिर्फ तलाश रही हैं, बल्कि उसे ऊँचाइयों पर ले जाकर नए आयाम भी दे रही है। उसका लेखन परम्पराओं, विमर्शों, विविध रुचियों एवं विशद अध्ययन को लेकर अंततः संवेदनशील लेखन में बदल जाता है। नारी-शिक्षा आज सिर्फ एक जरूरत नहीं बल्कि विकास और प्रगति का अनिवार्य तत्व है।

आएँ! हम सभी मिलकर नारी शिक्षा अभियान को गति प्रदान कर राष्ट्र को सबल बनाने में सहभागी बनें।

टाइप-5, निदेशक बंगला, पोस्टल ऑफिसर्स कॉलोनी, जेडीए सर्किल के निकट, जोधपुर, राजस्थान-342001
मो: 9413666599

बालिका संरक्षण

कन्या भ्रूण हत्या - जघन्य अपराध

❐ सरोज लोयल

भारतीय संस्कृति और समाज में नारी का आदरणीय, विशिष्ट व गौरवपूर्ण स्थान है-'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'- अर्थात् हमारी संस्कृति में तो जननी (माता) और जन्मभूमि को स्वर्ग से भी महान माना गया है। मनुस्मृति में तो सुख और कुल की उन्नति आदि का आधार नारी को ही माना है, जैसे- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।' अर्थात् जिस घर में नारियों का सत्कार होता है उस घर में साक्षात् देवताओं का वास होता है, जिस घर या कुल में स्त्रियाँ कष्ट पाती है वह कुल शीघ्र नष्ट हो जाता है और जिस कुल में स्त्रियाँ आनन्द, उत्साह व प्रसन्नता से रहती है वह कुल सदैव उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त होता है। ऐसा सम्मान जिस नारी को, जिस संस्कृति ने दिया उसी संस्कृति में आज कई नासमझ, अज्ञानी लोग कन्या भ्रूण हत्या जैसा जघन्य अपराध कर रहे हैं।

जब गर्भ में स्थित जीव के हाथ-पैर-मस्तक आदि अंग निकल आते हैं और यह लड़का है या लड़की का भेद स्पष्ट होने लगता है तब उसे गर्भ में ही मरवा देना भ्रूण हत्या कहलाती है। गर्भ में आया जीव जन्म लेने के बाद कितने श्रेष्ठ लौकिक और परमार्थ के कार्य करता, समाज व देश की सेवा करता, अपना व औरों का कल्याण करता। परन्तु जन्म से पूर्व उसकी हत्या कर देना कितना घोर पाप है।

क्या हम जानते हैं कि गर्भ में आया जीव कौन है, कैसा है? अगर रानी लक्ष्मीबाई, मीरा बाई, रानी करमावती, कल्पना चावला आदि का जन्म से पहले ही गर्भपात कर दिया गया होता तो देश को कितनी क्षति हुई होती? जीव मात्र को जीने का अधिकार है। उसको गर्भ में नष्ट करके उसके जीने का अधिकार छीनना जघन्य अपराध है।

कन्या भ्रूण हत्या कानूनी रूप से ही नहीं, नैतिक रूप से भी गम्भीर अपराध है। भ्रूण हत्या के प्रमुख कारणों में अतार्किक लोक मान्यता (पितृ-ऋण से मुक्त होने की सोच), दहेज प्रथा, अशिक्षा, सामाजिक असमानता आदि हैं।

हमारी सरकार ने भ्रूण हत्या को रोकने की पूरी कोशिश की है। पी.सी.पी.एन.डी.टी. एक्ट के तहत लिंग निर्धारण का पता लगाने पर 5 साल की कैद और 50 हजार रुपये जुर्माना तक हो सकता है। यह अस्पतालों एवं प्रयोगशालाओं में भी लिखा होता है 'यहाँ लिंग जाँच नहीं की जाती।'

वैदिक काल से लेकर आज तक नारी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करती आई है। नारी स्नेह, त्याग व समर्पण की प्रतिमूर्ति है।

दया, करुणा व श्रद्धा की आगार है, वह देवी है। सीता, सावित्री, गार्गी, मैत्रेयी, अनुसूया, सरोजिनी नायडू, सुभद्रा कुमारी चौहान, सावित्री बाई फुले आदि के द्वारा किए गए सद्कार्यों को कौन भुला सकता है।

अतः नारी पूज्या है, वन्दनीया है उसकी गर्भ में हत्या महापाप है। सम्पूर्ण मानवता पर कलंक है।

आइए, हम सब मिलकर यह प्रण करें कि लक्ष्मी रूपी कन्या का स्वागत खुशियों से करेंगे और भ्रूण हत्या जैसे पाप को जड़ से उखाड़ने हेतु कटिबद्ध होंगे-क्योंकि जब हमारे देश में पुनः नारी को उसका गौरव प्राप्त होगा तो वह दिन दूर नहीं जब राम, कृष्ण, ध्रुव, प्रहलाद, गुरु गोविन्द सिंह, बन्दा बैरागी, संत ज्ञानेश्वर, शिवाजी, राणाप्रताप, भगतसिंह, चन्द्रशेखर, विवेकानन्द, सुभाष चन्द्र बोस, दयानन्द जैसी श्रेष्ठ व संस्कारित संतानें होगी और हमारा भारत पुनः विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित होगा।

व्याख्याता
10/21 न्यू हाऊसिंग बोर्ड
शिवसिंहपुरा, सीकर (राज.)-332024
मो:9414424207

कविता

मेरा परिचय

❐ सतीश चन्द्र श्रीमाली

मैं धरा हूँ, पालक हूँ।
मैं प्रकृति हूँ, सृष्टि हूँ।
धैर्य, क्षमा, दया, ममता
मुझमें है।
मुझे बढ़ने दो, जग की प्रगति
मुझमें है।
मेरा स्वरूप शक्ति भरा है,
मेरे न होने से
'शिव', शव हो जाते हैं।
मुझे पहिचानो
मैं, अग्नि तत्त्व प्रधान हूँ
पवित्र हूँ!
मुझे, नष्ट मत करो
मैं, कल्याणी हूँ।
मुझे, विकसित होने दो।
मेरे, आदर में सृजन
निरादर में विध्वंस है।
यही मेरा परिचय है।
यही मेरा परिचय है।

जस्सूसर गेट रोड, धर्म काँटे के पास
बीकानेर (राज.)
मो: 9414144456

वतन पर मिटने वाले अमर है,
अमर है उनकी कहानियाँ।
जीते तो सब हैं ही,
ज़िंदादिल है उन्हीं की जवानियाँ।
खाक में मिल जाती है हस्ती
हर खास-ओ-आम की,
याद करता है बच्चा-बच्चा
जिए जो जिंदगी वतन के नाम की।

हिंदुस्तान की मिट्टी सदियों से शहादत को अपना कर्म और धर्म मानने वाले शूरवीरों को बनाती आई है। इस देश की हवा, पानी और रोशनी के साये में फूल-पौधे ही नहीं बलिदानी भी अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित होते हैं। यह धरती सिर्फ वीरभोग्या नहीं बल्कि वीरजननी है। ऐसी प्यारी मातृभूमि को हम सबका सौ-सौ बार नमन है। अमर राष्ट्र, उन्मुक्त राष्ट्र ने जब-जब आक्रामकों का सामना किया है तो यह उद्दंड भी बन उठा है। हमने कभी किसी को अधीन करने की नहीं सोची, तो अधीन होने पर संघर्ष के लिए भी हम तैयार हुए, लड़े। फिर चाहे जिए या मरे। जीते या लड़ते रहे। माखन लाल चतुर्वेदी जी की कविता की पंक्तियाँ जीवंत हो उठती है-

अमर राष्ट्र, उद्दण्ड राष्ट्र, उन्मुक्त राष्ट्र!
यह मेरी बोली।
यह सुधार समझौतों वाली,
मुझको भाती नहीं ठिठोली।

ऐसे में अंग्रेजों के शासन का वह दौर भारतीय इतिहास के संघर्ष का स्वर्णिम पृष्ठ है जिसने देश को एक से एक त्याग, तपस्या, बलिदान के मूर्तिमान स्वरूप दिए हैं। जनजागरण क्रांति के सूत्रधार महात्मा गाँधी और उनके साथी, जो सशस्त्र क्राँति के प्रतीक बनकर उभरे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस आदि। ये सब लोग व्यक्तित्व नहीं बल्कि संघर्ष, बलिदान और विजिगीषु प्रवृत्ति की विचारधारा के प्रतिनिधि रहे। अँग्रेजी शासन न केवल विदेशी शासन था, बल्कि ये शोषण, अन्याय और साम्राज्यवाद का भी प्रतिनिधि था जिसने स्वर्ण विहग भारत देश को 200 वर्षों के भीतर ही कंगाल कर दिया था। 23 मार्च, 1931 को शहीद हुए तीनों नायक इसी अन्याय और शोषण के विरुद्ध खड़े हुए भारतीय जनमानस के प्रतिनिधि थे। गाँव-गरीब-मजदूर-किसान परिवारों से आए क्राँतिकारी फाका-कशी के उस दौर को कैसे फाका-मस्ती में बदलकर दुनिया के सबसे बड़े अंग्रेज़ साम्राज्य की नींव हिला रहे थे, ये कथा आज भी दुनिया के सभी स्वतन्त्रता

शहादत जहाँ पर्व और गर्व है

ऐसा देश है हिन्दुस्तान

❒ डॉ. जयप्रकाश राजपुरोहित

प्रेमियों के लिए हर्ष और रोमांच का विषय है। साथ पढ़ते-पढ़ते भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु, यतीन्द्र नाथ दुनिया में भूचाल लाने वाली क्रांति के संदेशवाहक बन गए। इनके विचार अंग्रेजों के प्रत्यक्ष-परोक्ष शोषणवादी साम्राज्य के खिलाफ थे, जिसने उपनिवेशों की जनता का जीवन स्तर अंतिम स्तर तक पहुँचा दिया था। समर्थ किसान हताश था। चतुर कारीगर-कलाकार विवश हो गया था। जन में निराशा का कोई पारावार न था। ऐसे में मुट्ठीभर युवकों ने विश्वविजयी अँग्रेजी साम्राज्य का सूर्यास्त करने के लिए कमर कस ली। ये कहानी है दिए की और तूफान की। ये कहानी है बाज के साथ चिड़ियों की लड़ाई की।

जौहर और साका हिन्दुस्तान के इतिहास के ऐसे स्वर्णिम पृष्ठ है, जिनका मुक़ाबला पूरी दुनिया के किसी भी पराक्रम में संभव नहीं है। आधुनिक भारतीय इतिहास के महाबली क्राँतिकारियों ने अंग्रेजों से टक्कर लेकर जौहर-साके की परंपरा को ही आगे बढ़ाया था। पंजाब के लाला लाजपत राय पर अंग्रेजों के लाठी चार्ज का बदला लेने के लिए भगत सिंह और साथियों ने अंग्रेज़ अधिकारी सांडर्स को मार गिराया था, ऐसे वातावरण में जहाँ अंग्रेज़ अधिकारियों के सामने भारतीय को बोलने और साथ उठने-बैठने तक की आजादी तक नहीं थी, ये काम करना पूरे अँग्रेजी साम्राज्य को चुनौती देने के समान था। पूरी अंग्रेज़ पुलिस इन क्राँतिकारियों की तलाश में लग गई। फाँसी और उम्रक़ैद उन दिनों क्राँतिकारियों के लिए आम सजा थी। भगतसिंह और इनके साथियों को लगा कि क्राँति का काम तो आगे बढ़ना चाहिए लेकिन उससे भी जरूरी है अँग्रेजी शासन तक भारतीय जनमानस का संदेश पहुँचाना। दूसरे शब्दों में कहें तो कम सुनने वाली अंग्रेज़ सरकार को सुनाने के लिए ज़ोर की आवाज और इसके लिए दिल्ली स्थित केंद्रीय असेंबली में बम फेंकने की योजना बनी। यह बम धमाका हत्याओं के लिए नहीं था, बल्कि बम के साथ ही पर्चे फेंके गए जिनमें अँग्रेजी शासन के खिलाफ नारे लिखे गए थे। 8 अप्रैल, 1929 के दिन भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय सभा में बम फेंके। इन दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। ये गिरफ्तारी दोनों के द्वारा स्वयं अंगीकृत थी। जेल के दिनों को भगत सिंह ने आनंदोत्सव की तरह बिताया। जेल में भगत सिंह ने बहुत से पत्र और साहित्य भी लिखा। ये क्राँतिकारी अपने को सामान्य आदमी बताते और दिखाते लेकिन इनके आदर्श राजाओं और विद्वानों से भी ऊँचे थे। फाँसी के पहले 3 मार्च को अपने भाई कुलतार को भेजे एक पत्र में भगत सिंह ने लिखा था -

उन्हें यह फ़िक्र है हरदम, नयी तर्ज़-ए-ज़फ़ा क्या है
हमें यह शौक है देखें, सितम की इन्तहा क्या है?
दहर से क्यों खफ़ा रहें, चर्ख का क्या ग़िला करें।
सारा जहाँ अदू सही, आओ! मुक़ाबला करें।।

इन जोशीली पंक्तियों से उनके शौर्य का अनुमान लगाया जा सकता है। राजगुरु और सुखदेव भगत सिंह की हर योजना के साथी थे। इन लोगों के आपसी प्रेम का कोई सानी नहीं था। इन्होंने अपने छोटे से जीवन में जो क्राँति का दीपक जगाया आगे चलकर उसने अँग्रेजी साम्राज्य की 'लंका' जलाकर भस्म कर दी। फाँसी के लिए ले जाते समय ये तीनों भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव मस्ती से गा रहे थे -

मेरा रँग दे बसन्ती चोला, मेरा रँग दे;
मेरा रँग दे बसन्ती चोला। माय रँग दे बसन्ती चोला।।

लाहौर सेंट्रल जेल का वह फांसी का तख़्ता भी शायद इन शहीदों के लिए रोया होगा जिन्होंने भारतीय जाति का मान स्वतंत्र, संघर्ष और शहादत के इतिहास में अजेय बना दिया। अंग्रेजों ने इनकी चिताओं को भी मान नहीं दिया क्योंकि उन्हें संदेह था कि इनकी पार्थिव देह भी अंग्रेज़ साम्राज्य को भूमिसात न कर दे। लेकिन अंग्रेज शहीदों की ताकत को कमजोर आंक गए। 20-25 साल के भीतर ही उन पंचतत्व शरीरों की सुगंध ने हिंदुस्तान ही नहीं सारी दुनिया से अंग्रेजी साम्राज्यवाद की दुर्गंध को समाप्त कर दिया। क्राँति का बीज सारी दुनिया में आत्मसम्मान और स्वतन्त्रता का वट-वृक्ष फैला गया।

माँ का दूध धन्य है, धन्य बहिन की राखी है।
बलिदानी रक्त से सींच-सींच कर पवित्र देश की माटी है।

व्याख्याता
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय,
ग्राम-हदाँ, तहसील-कोलायत, जिला-बीकानेर
मो : 9414012028

रामनवमी पर विशेष

श्रीरामचन्द्र जी से हम सीखें

❒ टेकचन्द्र शर्मा

आज रामचन्द्र जी को भगवान का (विष्णु भगवान) का अवतार माने या न माने यह एक आस्था से संबंधित प्रकरण है। किन्तु वे एक महापुरुष थे, जो मर्यादा पुरुषोत्तम के नाम से जाने जाते हैं। मैं इस आलेख के माध्यम से 'शिविरा' के पाठकों को विशेष कर छात्रों एवं शिक्षकों को उनकी विशिष्टताओं का पुनःस्मरण करवाना चाहता हूँ, जिनका अनुकरण/अनुसरण करके हम भी श्रीराम के मार्ग पर चलने का दृढ़ संकल्प ले सकते हैं।

यहाँ मैं उनकी कुछेक विशिष्टताओं को प्रस्तुत करूँगा जो व्यावहारिक है जिनको आसानी तथा सहज भाव से अपनाया जा सकता है।

गुरु व बड़ों के प्रति श्रद्धा आदर व सम्मानः– श्रीराम में बचपन से ही गुरु व बड़ों के प्रति श्रद्धा व आदर भाव थे।

एक छोटा सा दृष्टांत– जब राम लक्ष्मण गुरु विश्वामित्र के साथ जनकपुरी में पहुँचे। उनकी दिनचर्या पर गौर कीजिए–

उठे लखन निसि बिगत सुनि, अरून सिखा धुनि कान।
गुरु ते पहिले ही जगतपति, जागे राम सुजान।

गुरु से पहले जगना–उठना, जगतपति राम की गुरु के प्रति श्रद्धा आदर का परिचायक।

तत्पश्चात् राजा जनक के यह कहने पर कि 'वीर विहीन महि मैं जानी।'

सामर्थ्यवान, सर्वशक्तिमान राम का चुपचाप बैठे रहना, बिना गुरु की आज्ञा के शिव धनु भंग न करना, गुरु के प्रति सम्मान प्रकट कर रहा है।

विश्वामित्र समय शुभ जानी।
बोले अति स्नेहमय वाणी।
उठहुँ राम भजहुँ भव चापा।
मेटहुँ तात् जनक परितापा।
सुनि गुरु वचन गुरु सिरनामा।
हर्ष विषाद न कछु डर आना।
लेत चढ़ावत खेचत गाढ़े।
काहूँ न लखा देख सब ठाढ़े।
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा।
भरे भुवन धुनि धोर कठोरा।।

इससे पूर्व गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या जो पत्थर शिला थी उसका उद्धार भी गुरु विश्वामित्र की आज्ञा पाकर ही किया था। कुल गुरु वशिष्ठ के प्रति श्रद्धा तो जीवन पर्यन्त ही रही थी।

विनम्रताः– मधुर वचन व विनम्रता उनका सहज स्वभाव था, इसका उल्लंघन कभी स्वीकार नहीं किया। शिव धनुष भंग के बाद ऋषि परशुराम जो अत्यंत क्रोधी स्वभाव के थे, को अपने मधुर व विनम्र वचनों से तत्काल शांत कर दिया।

देखियेः–

राम कहेउ रिस तजिअ मुनिसा।
कर कुठार आगे यह सीसा।।
नाथ शंभु धनु भंजन हारा।
होइहि कोउ एक दास तुम्हारा।।
सब प्रकार हम तुमसे हारे।
छमउ विप्र अपराध हमारे।।
राम मात्र लघु नाम हमारा।
परशु सहित बड़नाम तुम्हारा।।

मैत्रीभावः– मित्रता निभाने में उनका कोई सानी नहीं।

सुग्रीव से मित्रता की उनके बड़े भाई बालि को वृक्ष की ओट लेकर छिप कर मारा। सामने उन्हें कोई मार नहीं सकता था, ऐसा बालि को वरदान था पर मैत्री निभाने के लिए ऐसा किया। बाली ने कहाः–

मै बैरी सुग्रीव पियारा।
कारण कवन नाथ मोहि मारा।।

प्रत्युत्तर में राम ने कहाः–

अनुजबंधु भगिनि सुत नारी।
सुन सठ ये कन्या सम चारी।।
इन्हें बधे कछु पाप न होई।।

विभीषण को लंका का राज्य दिया; यह उनकी मैत्री का, शरणागत वत्सलता का द्योतक है।

पितृ मातृ भक्तः– सहर्ष 14 वर्ष के वनवास को स्वीकार करना उनके पितृ भक्ति की चरम सीमा है, आज इसका अभाव देखने में आ रहा है।

अपने अनुजों, बन्धुओं और सेवकों के प्रति अतीव प्रेमः–

भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न से प्राणों के समान प्रेम करते थे। हनुमान जी को संसार में प्रसिद्धि दिलाना सेवकों के प्रति प्रेम व स्नेह दिखलाता है।

अपने छोटे भाई लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम द्वारा किया गया विलाप : छोटे भाई लक्ष्मण के प्रति प्रेम की पराकाष्ठा है। काश आज सगे भाईयों में ऐसा प्रेम स्नेह होता।

राम कहते हैंः–

जो जनते बन बन्धु बिछोहू।
पिता बचन मनते नहीं आहू।।

गुण ग्राहकताः– जहाँ भी, जिसमें गुण देखा, उसको तुरन्त ग्रहण कर लिया।

समुद्र पर शिवलिंग स्थापना पर अपने धुर दुश्मन रावण को महापंडित मान शिवलिंग स्थापना के लिए उसे ही आमंत्रित किया।

रावण के अंतिम समय में छोटे भाई लक्ष्मण को उपदेश लेने हेतु भेजाः– रावण का अंतिम उपदेश थाः–

'लक्ष्मण, मैं चार काम नहीं कर सकता, क्योंकि अपनी शक्ति की तुलना में इन कामों को छोटा समझकर टालता रहा। अतः किसी भी काम की उपेक्षा करना, उसे टालना, उसे छोटा मान लेना, उसे कल के लिए छोड़ देना मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है।'

देशभक्ति : मातृभूमि के प्रति अनन्य भक्ति व श्रद्धा व्यक्त करते हुए राम अपने अनुज लक्ष्मण से कहते है–

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

इस प्रकार इन गुणों का अनुसरण करना राम के प्रति कृतज्ञता व आभार प्रकट करना है। शिविरा के पाठक इन गुणों पर मंथन करें मनन करें और इन्हें अपनाएँ, इसी आशा के साथ।

'शर्मा सदन' मुनि आश्रम के पास, झुंझुनूं
मो. 9672973792

बोर्ड परीक्षा

केन्द्राधीक्षक की भूमिका

❒ नेहा

कक्षा दसवीं व बारहवीं की बोर्ड परीक्षाओं का सफल संचालन केन्द्राधीक्षक की योग्यता, क्षमता, नियमों की जानकारी तथा उनकी रचनात्मक एवं सृजनात्मक सोच पर निर्भर करता है। सम्पूर्ण परीक्षा का केन्द्र बिंदु केन्द्राधीक्षक ही होता है। इस परीक्षा की सफलता से राज्य की प्रतिष्ठा जुड़ी होती है। अतः केन्द्राधीक्षक को इस दौरान पूर्ण सजग व सक्रिय होने के साथ-साथ निर्देशों का ज्ञान होना अति आवश्यक है। प्रश्न पत्रों की सुरक्षा हेतु राज्य सरकार की उच्चाधिकार समिति के निर्णयानुसार उन्हें केन्द्र के निकटतम 10 किमी. की परिधि में पुलिस थाना/चौकी में रखा जाना होता है। जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक शिक्षा) के आदेशानुसार इससे अधिक दूरी होने पर उसी राजकीय विद्यालय में इन्हें सुरक्षित रखा जाएगा तथा एकल परीक्षा केन्द्र बनाया जाएगा। यदि इस एकल परीक्षा केन्द्र पर अन्य केन्द्र के प्रश्नपत्र भी सुरक्षित रखे गए हैं तो इस केन्द्र को नोडल परीक्षा केन्द्र के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इस एकल/नोडल परीक्षा केन्द्र पर 8-8 घन्टों की 2-2 शिक्षकों, 2-2 चौकीदारों तथा 2-2 होमगार्ड की ड्यूटी लगाते हुए दो ताले लगाने होंगे जिसमें एक ताले की चाबियाँ केन्द्राधीक्षक के पास तथा दूसरे ताले की चाबियाँ अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक के पास होगी। अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक उसी राजकीय विद्यालय का जहाँ केन्द्र है वरिष्ठतम व्याख्याता/अन्य राजकीय विद्यालय का प्रधानाध्यापक होगा जो जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा नियुक्त होगा। थाना/चौकी तथा एकल परीक्षा केन्द्र/नोडल परीक्षा केन्द्र पर एक पेपर कोर्डिनेटर की नियुक्ति की जाएगी। यह पेपर कोर्डिनेटर प्रश्न-पत्र बण्डल वितरण के पश्चात् एकल या नोडल परीक्षा केन्द्र होने पर उसी केन्द्र पर तथा थाने की स्थिति में अन्य किसी एक केन्द्र पर परीक्षा के दौरान अपनी उपस्थिति देंगे। प्रश्न-पत्र सम्बन्धित केन्द्राधीक्षक के साथ ही पुलिस थाना/ चौकी/ एकल/ नोडल केन्द्र पर भिजवाए जाने होते हैं। केन्द्राधीक्षक प्रश्न-पत्र बॉक्स प्राप्त करने के साथ परीक्षा संचालन में आवश्यक सामग्री को भी जाँच कर लेवें। उक्त सामग्री में परीक्षार्थियों के उपस्थिति पत्रक, नामावली, परीक्षावार/विषयवार बैठक व्यवस्था, परीक्षा कार्यक्रम, परीक्षा संचालन निर्देशिका (प्रपत्र 21), वीक्षक निर्देश (प्रपत्र 22), परीक्षार्थियों के सहायतार्थ निर्देश प्रपत्र (प्रपत्र 23), चेतावनी पोस्टर (प्रपत्र 24), अनुपस्थिति पत्र (प्रपत्र 26), उत्तर पुस्तिका बण्डल पैकिंग प्रमाणपत्र (प्रपत्र 27), शेष प्रपत्र 29,30,31, ग्राफ पेपर, बोर्ड मोनोग्राम की रबड़ व पीतल सील, केन्द्र कोड सील, वर्ण अक्षर सील, केन्द्र व्यय बिल प्रपत्र इत्यादि शामिल है। केन्द्राधीक्षक को प्रश्न-पत्र बॉक्स को खोल लिफाफों की संख्या विषय अनुसार जाँच लेनी चाहिए। लिफाफे पर विषय, दिनांक, सील इत्यादि जाँच लेनी चाहिए। लिफाफे कम या ज्यादा प्राप्त होने की स्थिति में जिला शिक्षा अधिकारी तथा बोर्ड को तुरन्त सूचना देना अति आवश्यक है। कम होने पर बोर्ड अतिरिक्त लिफाफा भिजवाता है उस लिफाफे पर अतिरिक्त प्रश्न-पत्र अंकित रहेगा। इन लिफाफों को परीक्षावार/ विषयवार/तिथिवार जमा कर ही अलमारी में रखा जाना चाहिए। प्रश्न-पत्रों को परीक्षा के दिन केन्द्राधीक्षक, अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक तथा पेपर कोर्डिनेटर की उपस्थिति में निकाला जाना है। केन्द्र पर प्रश्न-पत्र लिफाफा परीक्षा प्रारंभ होने से 15 मिनट पूर्व ही खोला जाना है। यदि गलती से उसमें ऐसा प्रश्न-पत्र बण्डल आ जाए जिनकी परीक्षा उक्त केन्द्र पर नहीं है तो तुरन्त इसकी सूचना बोर्ड तथा जिला शिक्षा अधिकारी को देते हुए पुनः प्रश्न-पत्र बण्डल अलमारी में अलग से 'उपयोग में नहीं लेने' का टैग लगाते हुए सुरक्षित रखना है। प्रश्न-पत्र एक खिड़कीनुमा पॉलीथीन में पैक आते हैं जिसमें बिना पॉलीथीन खोले देखने से ही पता चल जाता है कि उस दिनांक को किस विषय की परीक्षा है। अतः आश्वस्त होकर ही उस पॉलीथीन लिफाफे को खोले। यह प्लास्टिक लिफाफा जिन पैकेट में बन्द है, इन पर भी परीक्षा दिनांक, वार अंकित होता है अतः केन्द्राधीक्षक व अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक उन पर सही का निशान लगा, लिफाफों पर हस्ताक्षर कर फिर ही लिफाफा खोले। उसके पश्चात् प्लास्टिक लिफाफे की खिड़की से भी जाँच कर ले तभी प्रश्न-पत्र बाहर निकाले। यदि प्रश्न-पत्र संख्या में कम प्राप्त हुए तो जिन परीक्षार्थियों को नहीं मिले उन्हें अतिरिक्त कक्षाकक्ष में बैठा वह प्रश्न-पत्र लिखवा दें तथा प्रश्न-पत्र लिखवाने में जो समय लगा, वह अतिरिक्त समय केवल उन्हीं परीक्षार्थियों को दिया जाए। परीक्षा कक्ष के चयन में यह ध्यान रखा जाए कि ऐसे कक्ष को नहीं लिया जाए जहाँ 10 से कम परीक्षार्थी बैठ सकते हो। विकलांग एवं नेत्रहीन छात्र के लिए अलग से बैठने की व्यवस्था कर दृष्टिहीन या विकलांग सम्बन्धित वर्ग अनुसार लिख दें। 25 परीक्षार्थियों पर 02 वीक्षक नियुक्त होंगे। ये वीक्षक राजकीय सेवा में नियुक्त होने चाहिए। जिन परीक्षा कक्षों में एक वीक्षक नियुक्त है वहाँ उनके लिए पर्यवेक्षक नियुक्त किए जाएँगे। एक वीक्षक वाले केवल एक कक्ष के लिए कोई पर्यवेक्षक नियुक्त नहीं होगा। 2 से 5 के कक्षों के लिए एक, 6 से 9 के लिए दो, 10 से 13 कक्षों के लिए तीन तथा 14 से 17 कक्षों के लिए चार पर्यवेक्षक नियुक्त होंगे। परीक्षा प्रभारी को आरक्षित वीक्षक नियुक्त किया जाएगा जो प्रतिदिन के हिसाब से वीक्षक के अनुसार पारिश्रमिक का पात्र होगा। सम्बन्धित केन्द्र पर यदि चारदीवारी नहीं है या केन्द्राधीक्षक आवश्यक समझता है तो जिला शिक्षा अधिकारी से फील्ड सुपरवाईजर की माँग कर सकता है। यदि अनुज्ञा प्राप्त हो जाती है तो फील्ड सुपरवाईजर को भी नियमानुसार पारिश्रमिक प्रतिदिन के हिसाब से देय होगा। छात्र संख्या 10

से कम होने पर फील्ड सुपरवाईजर नियुक्त नहीं किया जाएगा। सुपरवाईजर इन-चीफ को विशेष परिस्थितियों में जिला शिक्षा अधिकारी की अनुशंसा पर बोर्ड द्वारा नियुक्त किया जाएगा।

जिन केन्द्रों को संवेदनशील तथा अति संवेदनशील माना गया है वहाँ सम्बन्धित जिले के कलक्टर द्वारा केन्द्र पर माइक्रो ऑब्जर्वर नियुक्त किया जाएगा जो शिक्षा विभाग से अलग अन्य विभाग के भी हो सकते हैं। माइक्रो ऑब्जर्वर अपनी रिपोर्ट बोर्ड और कलक्टर को भेजेंगे। माइक्रो ऑब्जर्वर प्रतिदिन परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिकाओं को अपने समक्ष पैक करना सुनिश्चित करेंगे। परीक्षार्थियों में दृष्टिहीन, सूर्यमुखी, मायोपिया, लकवा, पोलियो, मूक-बधिर इत्यादि विकलांगता से ग्रस्त को 60 मिनट अतिरिक्त समय देय है। विकलांग तथा आकस्मिक दुर्घटनाग्रस्त बालक-बालिका को श्रुतलेखक देय होगा। केन्द्राधीक्षक स्वयं श्रुतलेखक चुनेगा। श्रुतलेखक नियुक्ति के समय यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि श्रुतलेखक परीक्षार्थी का रिश्तेदार या परिचित नहीं हो। साथ ही श्रुतलेखक की योग्यता सम्बन्धित विकलांग परीक्षार्थी की योग्यता से कम होनी चाहिए। श्रुतलेखक हेतु पूर्वानुमति आवश्यक है। आपात स्थिति में केन्द्राधीक्षक, अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक, एक पर्यवेक्षक या वीक्षक द्वारा श्रुतलेखक की नियुक्ति की जाएगी। लेकिन इसकी पुष्टि बोर्ड द्वारा करवाई जानी आवश्यक है। दृष्टिहीन परीक्षार्थी की उत्तर-पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर दृष्टिहीन अंकित किया जाना आवश्यक है।

उत्तर पुस्तिका संबंधी जानकारी होना केन्द्राधीक्षक के लिए आवश्यक है। उच्च माध्यमिक परीक्षा की पुस्तिका में 32 पृष्ठ तथा माध्यमिक परीक्षा में 24 पृष्ठ होंगे। यदि उत्तर पुस्तिका क्षतिग्रस्त है या बिना क्रमांक की है तो उसे निरस्त कर स्टॉक रजिस्टर में घटा देना चाहिए। परीक्षार्थी द्वारा पूरक उत्तर पुस्तिका माँगने पर उसकी मुख्य पुस्तिका देख यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि वह भर चुकी है तथा उसे पूरक उत्तर पुस्तिका अवश्य देनी चाहिए। उत्तर पुस्तिका पर प्रतिदिन वर्ण मोहर लगानी चाहिए। यदि वर्ण मोहर लगी पुस्तिका शेष रह जाती है तो वर्ण मोहर निरस्त कर उस पर परीक्षा प्रभारी एवं केन्द्राधीक्षक के लघु हस्ताक्षर कर दूसरे दिन नई वर्ण मोहर लगा काम में ले लेनी चाहिए। परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिकाएँ नामांक अनुसार आरोही क्रम में जमा कर विषयानुसार अलग-अलग बण्डल बनाने चाहिए। परीक्षक को भेजे जाने वाले बण्डल में उत्तर पुस्तिकाएँ, अनुपस्थिति विवरण पत्र (प्रपत्र 26) एवं परीक्षक प्रति रखें। बण्डल को सीलबद्ध कर उस पर प्रपत्र-25 की पूर्ति कर चिपका देवें। यदि विषयवार एक से ज्यादा बण्डल है तो उन सभी को एक साथ सिलवा कर प्रपत्र-28 की पूर्ति कर उसे चिपका दें।

इस प्रकार केन्द्राधीक्षक उक्त निर्देशों की अनुपालना कर शिक्षा-विभाग के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में अपना योगदान दे सकता है।

व्याख्याता
रा.आदर्श उ.मा.वि. पिचकराई ताल
सरदारशहर (चूरू)
मो: 9414993341

कर्त्तव्य कर्म ही यज्ञ है, यज्ञ की साधना करो।
मिला जीवन अनमोल है, जीवन की आराधना करो।

मासिक गीत

जीवन में हो दिव्य सुगन्ध

अच्छे-अच्छे संस्कार से, जीवन में हो दिव्य सुगन्ध!
रोम-रोम में परम् आनन्द।।

श्रद्धा से माथा झुकता
गौरव सेवा में लगता
स्वाध्यायी हो श्रेष्ठ चिन्तना-शान्त करें सब मिथ्या द्वंद्व।।
जीवन में हो दिव्य सुगन्ध।।

स्नेह भरा अपनत्व निखारें
मंथन कर कर भूल सँवारें
भेद नहीं वैविध्य दृष्टि से, पहिचाने नव सज्जन-वृंद।।
जीवन में हो दिव्य सुगन्ध।।

श्रम निष्ठा मन में धारण कर
कर्म करें निर्लिप्त भाव भर
निज कर्त्तव्य कभी न छूटे, भले चुनौती दिखे अनन्त।।
जीवन में हो दिव्य सुगन्ध।।

हमसे कोई कष्ट न पाए
सभी सुखी तो मन हर्षाए
पुण्य धरा हो साधन शुद्ध-सत्य एक है अनगिन पंथ।।
जीवन में हो दिव्य सुगन्ध।।

साभार-**प्रेरणा पुष्पांजलि**
ज्ञान गंगा प्रकाशन

प्रतिभा-सृजन

बिरवा के होत चिकने पात.....

❒ डॉ. मूलचन्द बोहरा

दृश्य–एक

(माध्यमिक स्तर की कक्षा। हिन्दी का कालांश। शिक्षक–छात्रों की आपसी बात–चीत।)

शिक्षकः बच्चों, कुछ शब्द वर्तनीगत कठिन होते हैं, कुछ सरल। आज हम कुछ कठिन शब्दों को लिखने का अभ्यास करेंगे। मैं बोलता हूँ। तुम लिखो।

(शिक्षक एक–एक कर के बोलता है– अनधिकार, शरदिन्दु, सेवा–शुश्रूषा, उपर्युक्त सहस्र आदि। बच्चे श्रुत शब्दों को सही–सही लिखने की कोशिश करते हैं, पर वे कुछ शब्द सही नहीं लिख पाते। दो–चार बच्चे तो सभी शब्दों में कुछ न कुछ गलती कर देते हैं।)

शिक्षकः (एक–एक की कॉपी देखते हुए) मैंने कहा था न। तुम सब निकम्मे हो। इस कक्षा के लायक ही नहीं हो। तुम्हें ठीक से लिखना तक नहीं आता। हं...हं... फिर भी, साहबजादे हिन्दी पढ़ने चले हैं। (कुछ ठहरकर)

दीपक, कोमल, पूजा! तुम लोगों ने एक शब्द भी ठीक नहीं लिखा। क्यों? ऐसे ही दसवीं पास कर ली? सेंटर कहाँ था? क्यों टाईम खराब कर रहे हो। हमारा; और तुम्हारा भी।

(इसके बाद शिक्षक महोदय झल्लाते हुए उक्त शब्दों की सही वर्तनी बोर्ड पर लिखते हैं और गृह कार्य के रूप में इन्हें दस–दस बार लिखने को कहते हैं।)

दृश्य–दो

(उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षा। हिन्दी का कालांश। बोर्ड पर कुछ शब्द लिखे हैं– आशीर्वाद, किंकर्त्तव्यविमूढ़, कैलास, स्रोत, उपर्युक्त, संन्यासी आदि। शिक्षक–छात्रों की आपसी बातचीत।)

शिक्षकः (बोर्ड की ओर इशारा करते हुए) इन शब्दों को पढ़िए। इनके अर्थ को जानिए। फिर इन शब्दों को काम में लेते हुए एक कहानी लिखिए।

मानसीः सर! मुझे कविता अच्छी लगती है। कविता लिख लूँ।

शिक्षकः हाँ, हाँ, जरूर।

करीमः सर! यह कैलास, वही शिव जी वाला है? क्या यह ऐसे लिखा जाता है?

शिक्षकः हाँ, बेटे।

(एक घड़ी तक शब्दों को लेकर इसी

प्रकार के सवाल–जवाब। फिर पूरी कक्षा लिखने में लीन। लिखने के बाद। एक–एक रचना की प्रस्तुति। उसकी सराहना। उसके रूप बनाव पर चर्चा। तत्पश्चात् कल चर्चा जारी रखने व ऐसे नये शब्द घर से लिखकर लाने के निर्देशों के साथ कालांश समाप्त।)

अब हमारे सामने दो दृश्य हैं। दोनों में शब्द संरचना पर बात हो रही है परंतु जहाँ दृश्य–एक में शिक्षक मात्र शब्द संरचना की बात कर रहा है वहाँ दृश्य–दो में शिक्षक शब्द संरचना, अर्थ एवं प्रयोग की समग्र बात कर रहा है व साथ ही वह बच्चों में मौलिक लेखन की संभावना तलाश रहा है। जाहिर है, दृश्य–दो मौलिक लेखन के लिए बहुत माकूल है। पर अफसोस, कि दृश्य–एक स्कूलों में बहुत आम है और दृश्य–दो बहुत खास। हमें इस 'बहुत खास' को 'बहुत आम' बनाना है अर्थात सभी स्कूलों में मौलिक लेखन का माहौल बनाना है। यह माहौल कब और कैसे बनेगा? आगे इसी विषय पर बात करेंगे।

विगत और अब

दृश्य दो की स्थिति एक आदर्श स्थिति है। शिक्षकों से हमारी ऐसी ही अपेक्षा है, परन्तु कक्षा शिक्षण में यह स्थिति कमोबेश उलटी है। आज से तीस–चालीस साल पहले भाषायी शिक्षकों का शुद्धता का आग्रह रहता था–शुद्ध बोलना/शुद्ध लिखना/ यहाँ तक कि एक–एक नुक्ता व मात्रा का ध्यान रखना। उस समय वर्तनी की मामूली सी गलती भी अक्षम्य थी। उस समय की कई स्कूलों में तो आज की अंग्रेजी स्कूलों की तरह हिन्दी स्कूलों में भी हिन्दी नहीं बोलने पर 'फाईन' लगता था। स्थानीय भाषा प्रयोग की तो बिलकुल मनाही होती थी। अतः बच्चा अपनी संस्कृति, विरासत व पर्यावरण की बातें अन्य के साथ साझा ही नहीं कर पाता था। वह अपने संदर्भों से कटा–कटा एक तरह से दहशत में जीता था। उस दमघोट माहौल में सर्जन/उत्प्रेरण के लिए कोई जगह नहीं थी। वहाँ तो ध्यान यह रहता था कि सेवा–सुश्रुषा में मात्रा तो सही है। चिन्ह सही है या चिह्न। दम्पति ठीक है या दम्पती। पूरा समय इन शब्दों की माथापच्ची में ही बीत जाता था। नया सोचने और नया करने के लिए तो समय बचता ही नहीं था। स्कूली प्रतियोगिताएँ भी इसी विषय केन्द्रित रहती थी कि कौन शुद्ध बांचता है और कौन शुद्ध लिखता है? इस कारण बच्चों का पूरा ध्यान शुद्ध/अशुद्ध में ही लगा रहता था। हालांकि 'शुद्ध' शब्द अपने आप में अर्थवान नहीं है, यह व्याख्या की माँग करता है। यह शब्द विज्ञान या धर्मशास्त्र का है, न कि भाषा शास्त्र का। अतः भाषा शास्त्र में शब्द के विशेषण–विशेष के तौर पर इसका प्रयोग उचित नहीं है।

शब्दों का प्रयोग मनुष्य अपनी बात कहने के लिए करता है। यहाँ बात महत्त्वपूर्ण है, न कि शब्द। शब्द केवल माध्यम है, बात, मंतव्य या विषयवस्तु का। इस माध्यम में प्रकृतितः परिवर्तन होना लाजिमी है। यथा जागरित से जाग्रत, गर्मी से गरमी, आदित्यवार से अदीतवार आदि बनना शब्दों का स्वाभाविक परिवर्तन है। यहाँ पहले को शुद्ध और दूसरे को अशुद्ध मानना सही नहीं है। हाँ, लिपि के मानकीकरण के लिहाज से कौनसा शब्द वर्तनीगत सही है अथवा कौनसा गलत? कहकर बात को समझाया जा सकता है। हालाँकि लिपि के मानकीकरण के मानदण्ड भी परिवर्तनशील है। पुनश्च, ऊपर हमने 30–40 साल पहले की कक्षाओं के शिक्षण की कमियों का जिक्र किया था, परन्तु हालात आज भी कोई ज्यादा अच्छे

नहीं है। हुआ यूँ कि कालांतर में उन्हीं कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थी शिक्षक बने, तो उनकी मूलभूत सोच में कोई अन्तर नहीं आया। वे भी वर्तमान में इसी तरह शब्दों के खेल में उलझ रहे हैं।

गृह कार्य व उसकी जाँच

अभी इन दिनों गृह कार्य पर जोर दिया जा रहा है। यह एक अच्छी बात है, परन्तु यहाँ भी मौलिकता का हनन हो रहा है। इसकी मिसाल देख लीजिए। आम तौर पर गृह कार्य देते समय यह निर्देश रहता है कि पाठ के अन्त में दिए प्रश्नों को घर पर हल करना है। इन प्रश्नों के रेडीमेड उत्तर पास बुक/रिफ्रेशर बुक में मिल जाते हैं। इस मामले में स्थिति पहले से अधिक बदतर हो गई है क्योंकि अब पास बुक, वन-वीक, रिफ्रेशर, मॉडल पेपर जैसी कई चीजें और आ गई हैं। पाठ्य-पुस्तकें पढ़ने का चलन ही धीरे-धीरे खत्म हो रहा है। कई स्कूलें तो शिक्षण भी पासबुक्स से करवाती हैं। इस तरह बच्चे को सारा मसाला रेडीमेड मिल जाता है। बच्चे को अपनी तरफ से लिखने की कोई माथापच्ची नहीं करनी पड़ती। कई थोड़े मेहनती शिक्षक बोलकर या बोर्ड पर लिखकर इन प्रश्नों के उत्तर लिखवा देते हैं। दोनों ही स्थिति मौलिक लेखन-उत्प्रेरण के लिए अधिक कारगर नहीं है। बच्चे इस दृष्टि से मात्र अनुलेखन या श्रुतलेखन ही सीख पाते हैं, इससे ज्यादा नहीं।

यह तो था गृहकार्य लेखन। अब जाँच का तरीका देख लीजिए। प्रथम तो शिक्षक समय पर गृह कार्य जाँचते नहीं है, फिर जाँचते भी है, तो अनमने से। आमतौर पर वे कॉपी जाँचते समय सही-सही का निशान लगाते जाते हैं और आखिरी पन्ने पर तारीख सहित हस्ताक्षर अंकित कर देते हैं। कुछ परिश्रमी व जागरूक शिक्षक/शिक्षिका गौर से पढ़ते हुए शब्दों की वर्तनीगत गलतियाँ 'मार्क' करते हैं। फिर उनके सही रूपों को स्वयं लिखते हैं और आखिर में उन पर लम्बा-चौड़ा निर्देशनुमा सख्त नोट लगा देते हैं। लेखन में वाक्य संरचना, लयात्मकता, मौलिकता, तार्किकता, क्रमबद्धता जैसे मानदण्ड काफी पीछे छूट जाते हैं। उस पर किसी प्रकार की सकारात्मक या नकारात्मक टिप्पणी इनके द्वारा प्रायः नहीं की जाती है। हालाँकि यहाँ पर यह कहना सही नहीं है कि टेस्ट, परीक्षा, जाँच आदि सब फालतू कार्य है, अपितु कहना यह है कि इससे मूल सर्जनात्मक प्रवृत्ति का जिसमें मौलिकता का समावेश हो, का बहुत कम विकास हो पाता है। इस संबंध में रेजुल्ली को उद्धृत करना प्रासंगिक है। रेजुल्ली ने सर्जनशीलता के संदर्भ में प्रतिभा को दो प्रकार से विभाजित किया हैः-

1. शाला गृह प्रतिभा संपन्नता
2. सर्जनात्मक-उत्पादक प्रतिभा संपन्नता

टेस्ट देना, पाठ याद करना, उसे याद करना आदि ये सब पहली श्रेणी की प्रतिभा है। दूसरी प्रतिभा का संबंध मौलिकता से है। यह एक इस प्रकार की प्रतिभा संपन्नता है, जिस पर अध्यापकों द्वारा सामान्य रूप से ध्यान नहीं दिया जाता।

देखने में आया है कि शिक्षक पहला कार्य तो पूरी तल्लीनता के साथ सम्पन्न करवाता है, परंतु दूसरे कार्य में उसकी रुचि कभी-कभार ही प्रकट होती है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों का पूरा ध्यान उस तथाकथित परख व्यवस्था शुद्धता/अशुद्धता पर केन्द्रित रहता है। विद्यार्थी लोह-पथ गामिनी/श्वेत-श्याम धूम्र नलिका जैसे शब्दों के इन्द्रजाल में ही खोए रहते हैं। उनकी मौलिकता इन्हीं शब्दों के भ्रमजाल में उलझती/फँसती रहती है।

अब सवाल है, बच्चे सर्जनशील कैसे बनें? इसके लिए उन्हें कैसा माहौल दिया जाए? इसके लिए शिक्षक क्या करें और क्या नहीं? आइए? हम सब इनके उत्तर तलाशने की कोशिश करें।

भाषा-प्रयोग

सबसे पहले हमें स्कूली शिक्षण के शुरूआती तौर-तरीकों को जानना जरूरी होगा। यह देखना होगा कि स्कूली पढ़ाई में सर्जनात्मक लेखन को किस प्रकार बढ़ावा मिल रहा है? हालांकि मनुष्य प्रकृति प्रदत्त सर्जनधर्मी होता है। उसकी एक मिसाल है, उसका भाषायी ज्ञान और कौशल। भाषा-प्रयोग अपने आप में ही सर्जन कर्म है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति एक ही भाषा का वैयक्तिक प्रयोग करता है। मैंने खाना खा लिया, मेरा खाना हो गया, मैं खाना खा चुका, मैंने भोजन ले लिया। एक ही भाषा, एक जैसे ही शब्द, एक ही अर्थ, फिर भी कितनी रूप भिन्नता। यही है भाषा की सर्जनशीलता। शब्दों का नवीन रूपांतरण, वाक्य की नवीन भंगिमा, शैली का उतार-चढ़ाव आदि इसी सर्जनशीलता के विविध आयाम हैं। भाषा शिक्षक भाषायी सर्जनशीलता की इस विशेष स्थिति को भाँपकर बच्चों में सर्जनशीलता के बीज बो सकता है और अपनी ऊर्जा, प्रज्ञा और परिश्रम से ताप, जल, खाद आदि दे कर बीज को पल्लवित-पुष्पित कर सकता है। यदि शिक्षक स्कूली पड़ाव में सावचेती से इस कार्य को सम्पन्न करता है, तो बच्चों को स्वाभाविक रूप से सर्जनशील बनाया जा सकता है।

प्रतिभा और प्रयास

कुछ विद्यार्थी नैसर्गिक रूप से सर्जनशील होते हैं। उन्हें सर्जनात्मक लेखन की ओर अग्रसर करने में अधिक दिक्कत नहीं है, परन्तु फिर भी मात्र प्रतिभा से ही कोई बड़ा लेखक या कवि नहीं बन सकता। बड़ा लेखक बनने के लिए उसे निरन्तर पठन, लेखन, चिंतन एवं मनन करना पड़ता है। इस कार्य में प्रारंभिक तौर पर शिक्षक सहभागी बनकर उसकी मदद कर सकता है। अब रही बात, ऐसे बच्चों की जिनमें प्रत्यक्षतः मौलिक लेखन की संभावना नजर नहीं आती। फिर भी उन्हें हमें सर्जनात्मक लेखन की ओर उन्मुख करना चाहिए। इससे उनमें शब्दावली का विकास, विषय के विविध आयामों से परिचय, तार्किकता, सूक्ष्मता, जैसे गुणों का स्वाभाविक विकास हो सकेगा। इस तरह चाहे वे स्वयं बड़े लेखक बनें या न बनें, पर लेखन की रमणीयता को जरूर समझ पाएँगे। कहा भी गया है-

रागी, बागी, पागी
पारखी और न्याव
इन पांचन को गुरु होत
पर उपजत अंग स्वभाव

सर्जन का पहला क्षण

सर्जनात्मक लेखन वास्तव में लेखन का अंतिम चरण है। इससे पूर्व बहुत सारे पापड़ बेलने पड़ते हैं। कई क्रिया-कलाप करने पड़ते हैं। शुरू-शुरू में बच्चे कच्ची, अधपकी व बेतरतीब सामग्री को अपने तरीके से लिखते हैं। इस पर शिक्षक उन्हें झिड़के नहीं और न ही स्वयं हताश होवें। यह इन बच्चों का मौलिक लेखन में पहला कदम है, जो अभ्यास अध्ययन के अनवरत संचरण से सध जाएगा। शिक्षक छोटी-मोटी वर्तनी-वाक्यगत त्रुटि को नजर अंदाज करें। उनके लेखन की मौलिकता पर थपथपी

लगाएँ। कारण कि वर्तनीगत त्रुटि-निवारण अनंतर किया जा सकता है, परन्तु मौलिक लेखन का अनुभूति क्षण बहुत विरल होता है। उसे पुनः पाना कठिन ही नहीं, असंभव है। इस संदर्भ में चाहे तो बड़े-बड़े साहित्यकारों की रचनाएँ टटोल ली जाए। वे सभी रचनाएँ या उनके प्रसंग सब एक जैसे पठनीय एवं चिन्तनीय नहीं होंगे। उनमें उन्नीस-बीस, यहाँ तक कि अठारह-इक्कीस का अंतर भी मिलेगा। यह अंतर उस क्षण की विरलता ही है। कभी इसी क्षण को कवि मुक्तिबोध ने 'सृजन का पहला क्षण' कहा था। यह क्षण कभी कभार आता है। इस क्षण में विद्यार्थी स्वतः ही एक 'रौ' में लिखने को उद्यत हो उठता है। उस समय शिक्षक को चाहिए कि वह उसके लेखन पर किसी प्रकार की नकारात्मक टिप्पणी न करें, सुधार के भाव से भी नहीं। हाँ लेखन की पूर्णता के बाद स्वस्थ माहौल में इस पर चर्चा की जा सकती है।

अवलोकन

सर्जन के शरूआती दौर में सबसे अधिक आवश्यक है-अवलोकन और उसकी सही तकनीक। दिव्यांग हेलेन केलर अपनी बंद आँखों से उतना गहरा और सूक्ष्म अवलोकन कर लेती थी, जितना हम खुली आँखों से भी नहीं कर पाते हैं। वह स्पर्श कर अनुभव करने की कला में पारंगत होकर बोलना तक सीख गई थी। बच्चों को इस कहानी के माध्यम से अवलोकन के लिए प्रेरित किया जा सकता है। उन्हें निर्देशित किया जाए कि वे अपनी रुचि की वस्तुओं, स्थानों, आकृतियों, पेड़-पौधे, इमारत आदि को गौर से देखें, उनके साथ अपना आत्मीय संबंध जोड़ें अपना तादात्म्य बनाएँ, उनकी जीवंतता को महसूस करें। इसके बाद इन बातों को मन ही मन जीएँ। मन में आए भावों को बहने दें। उन्हें रोके नहीं, टोके नहीं। उन्हें तरह-तरह से लिखें। उन्हें इस दौरान किसी विधा या शैली विशेष में नहीं बाँधें, उन्हें खुलकर लिखने को कहें, जैसा सोचते हैं, जैसा बोलते है, वैसा लिखने को कहें। लिखने से पूर्व उनके समक्ष भवानी प्रसाद मिश्र की कविता रखी जा सकती है-

जिस तरह तू बोलता है
उस तरह तू लिख
और इसके बाद
तू सबसे बड़ा दिख

प्रश्न पूछने की आजादी

हम लोग परम्परा से इस बात को मानने के आदी हैं कि कक्षा में पिन ड्रॉप शांति होना कक्षा-शिक्षण की आदर्श स्थिति है, जबकि वास्तविकता इससे उलट है। यह शांति मात्र बाहरी शांति है, बच्चों के मन में तो उथल-पुथल मची ही रहती है। अगर जोर जबरदस्ती से उन्हे शान्त रहने को कहा जाता है, तो वे मन ही मन व्यवस्था और उसमें लगे लोगों को कोसने लगते हैं। इस तरह वह शांति मात्र दिखावे की शांति बनकर रह जाती है। संभव है, इससे बच्चों में रोष, नकारात्मकता, विद्रोह जैसे भाव पनपने शुरू हो जाएँ। इस संबंध में सुषमा गुलाटी पुस्तक 'सर्जनात्मकता के लिए शिक्षा' की भूमिका में लिखती है- ''यदि बच्चों को असाधारण प्रश्न पूछने, विचारों को नए ढंग से जाँच-पड़ताल करने, समस्या-समाधान के नए तरीके अपनाने, कल्पना करने, सामग्री से खेलने और परंपरागत विषयों को व्यवहार में लाने के लिए भिन्न भिन्न तरीके अपनाने की अनुमति न दी जाए। तो उनकी सर्जनात्मकता का स्तर क्षीण हो सकता है।'' कक्षा में सवाल-जवाब का माहौल बनना चाहिए। इससे बच्चों की समझ पक्की होती है। वे तर्कशील, विचारवान व बुद्धि सम्पन्न बनते है। प्रश्न पूछना भी एक कला है। जरूरी नहीं है, शिक्षक के पास सभी सवालों के जवाब हो, परंतु उनमें बच्चों से प्रश्न पूछने का कौशल होना चाहिए। इस संबंध में प्रसिद्ध भौतिकशास्त्री फाइनमैन का उद्धरण बहुत महत्त्वपूर्ण है। वे कहते हैं कि ''मैं अपनी सफलता का श्रेय अपनी माँ को देता हूँ। कारण कि वह मुझे हर रोज घर पहुँचने पर पूछा करती थी, 'आज तुमने स्कूल में क्या पूछा'। धीरे-धीरे मैं रोज सवाल पूछने लगा। कुछ के जवाब मिलते, कुछ खुद तलाशता। कुछ अनसुलझे रहते। पर आदत बनी रही। इसी आदत ने मुझे भौतिकी में इस मुकाम पर पहुँचाया।''

बातचीत का माहौल

सर्जनशील माहौल बनाने के लिए कक्षा में वार्तालाप का माहौल बनाया जाए। शुरूआत में यह प्रक्रिया सवाल-जवाब से शुरू की जा सकती है। पहले पहल शिक्षक को नेतृत्वकर्त्ता की भूमिका निभानी होगी। समयांतर से कोई न कोई मुखर बच्चा इस भूमिका में आ सकता है। यह संख्या एक से अधिक भी हो सकती है। शुरूआती चर्चा मूर्त्त विषयों, पहाड़, नदी, स्कूल, स्मारक आदि पर केन्द्रित की जानी चाहिए। बच्चों के खुलने या उनके विचारों में क्रमबद्धता, तार्किकता आदि आने पर उन्हें विषयों, विचारों, सिद्धांतों आदि पर लिखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। बातचीत के दौरान जरूरत मुताबिक शिक्षक को सहज भाव से अपनी भी बात कहनी चाहिए व विद्यार्थियों को विषय भटकाव से बचाना चाहिए। गौर रखें, बातचीत मात्र गाँव-गुवाड़ की हथाई तक न सिमट जाए। वह ऐसे किसी मोड़ पर पहुँचे, जहाँ से सर्जनशीलता के कपाट खुल सके।

वार्तालाप के मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखा भी जा सकता है। बच्चों को अपनी उत्तर-पुस्तिका में भी लिखने को कहा जा सकता है। तत्पश्चात उन्हें चर्चा की गई बातों पर लिखने को कहा जा सकता है। कुछ इस प्रकार के प्रयोग भी किए जा सकते हैं-

''एक अध्यापिका अपने बुद्धिमान छात्रों में से एक छात्र के लिए बोनस देती थी। जैसे ही वह अपना कक्षा कार्य समाप्त करता है (सामान्यतः वह सर्वप्रथम होगा) उसे कल्पना करने तथा कहानियाँ लिखने के लिए बैठा दिया जाता। यह उसे प्रफुल्तापूर्वक व्यस्त रखता और शैतानियों से दूर रखता। यह कक्षा के शेष छात्रों को भी अपना कार्य शीघ्रता से समाप्त करने के लिए एक प्रकार का प्रोत्साहन था।''

-प्रतिभा नाथ, सर्जनात्मक के लिए शिक्षा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

कहानी के साथ

कहानी बच्चों को सर्जनशील बनाने के लिए सबसे कारगर और रोचक माध्यम हैं। शुरूआत में बच्चों को विविध रूपा कहानी सुनाना, आवश्यक होने पर उसकी नाट्य प्रस्तुति देना, तत्संबंधी चित्र-पठन करवाना जैसी गतिविधियाँ करवाई जा सकती हैं। कहानी सुनाकर बच्चों को उसे हूबहू या अपने शब्दों में सुनाने का आदेश कदापि न दिया जाए। अगर बच्चा स्वप्रेरणा से श्रुत कहानी को अपने शब्दों में सुनाता है, तो कोई परहेज नहीं, अन्यथा सुनाने के डर से बच्चा कहानी मन लगाकर सुन ही नहीं पाएगा। कई बार शिक्षक एक वाक्य बोलता है, बच्चा-दूसरा, फिर दूसरा बच्चा तीसरा वाक्य

बोलता है। इस तरह कहानी पूरी कही जाती है। एक नजर में तो यह तरीका ठीक लगता है, परंतु वस्तुतः यह तरीका बहुत बोझिल और अरुचिकर है। इसके अलावा कहानी श्रवण-पठन के बाद- 'कहानी से क्या सीख मिली?' 'कहानी का क्या उद्देश्य था?' 'हमें क्या नहीं करना चाहिए?' जैसे प्रश्न बच्चों से नहीं पूछने चाहिए। इससे बच्चों का आनंदमय श्रवण-पठन बाधित होता है। हाँ, जब बच्चों की स्मृति कोश में 25-30 कहानियों का संग्रह हो जाए, तो फिर उन्हें अधूरी कहानी, शीर्षक, प्रारंभ, मध्य, अंत आदि पर लिखने को कहा जा सकता है। पर वह बच्चों पर किसी प्रकार की शैलीगत व विधागत बंदिश न लगाए। ध्यान रहे कि इस प्रक्रिया में शिक्षक कहानी के किसी एक प्रारूप में बंधा न रहे। वह बच्चों को खुलकर लिखने के लिए प्रेरित करे। उन्हें कहानी के अलावा लेख, नाट्यांश, चित्रकथा आदि पर लिखने को भी प्रेरित करे।

इसी के साथ वह बच्चों में सर्जन के मूल उत्स कल्पना को जीवन्त रखे। उसे परी, एलियन, तिलिस्म व जादू की दुनिया में निर्बाध विचरण करने दे। उसकी कल्पनाशीलता पर 'असंभाव्य' की दुहाई देकर पहरेदारी न बैठाई जाए। इस संबंध में ई. पॉल टोरेन्स अपनी पुस्तक 'क्रिएटिविटी- इट्स एजूकेशन इम्पलिकेशन्स' में लिखते हैं कि एक बार एक लड़का एक रंग कल्पना बूंद के रूप में करता है, जो दीवार पर बिना खुरचे या साथ हुए अपने आपको रोके रखने में सफल हो रही है। जिसकी अभी रंगाई हुई है। इसी प्रकार एक छोटी लड़की फिसलनदार कीचड़ में फीते के रंगों को एक मृत इन्द्रधनुष के रूप में वर्णित करती है। एक बुद्धिमान अध्यापक को इस सोच को सुधारना नहीं चाहिए, बल्कि उसे उत्साहित करना चाहिए।

कविता के साथ

एन. सी. एफ. 2005 का मानना है कि बच्चे अपने आस-पास के संदर्भों से सीखते हैं। लोरी गीत, अजान, आरती, प्रार्थना; ये सब उसके आस-पास के संदर्भ हैं और जान-पहचान के भी। इन सब संदर्भों में लय, तुक व तान है, जो बाल कविता में भी अपेक्षित है। अतःबच्चों को इन संदर्भों से जोड़ते हुए उन्हें बाल कविता की ओर ले जाया जाए। इसके लिए उन्हें आस-पास के जीव-जंतु, पेड़-पौधों की छोटी छोटी बाल कविताएँ सुनाई जाए। उन्हें रिदम के साथ एक स्वर में बोलने के लिए कहा जाए। इस तरह की कविताओं का अभ्यास होने पर उन्हें स्वरचित कविताएँ बनाने के लिए कहा जाए। उदाहरण के तौर पर बच्चों को इस प्रकार की अधूरी कविताएँ देकर, उन्हें पूरी करने को कहा जाए-

मामा आया
बाजा.....
चाचा आया
.....लाया
नाना आया
.....गाया
मजा आया
.....आया

बात-बात में बात ठन गई
बाँह उठीं और मूँछें.....
इसने उसकी गर्दन भींची
उसने उसकी दाड़ी.....

वाक्य के साथ

हमें आचार्य विश्वनाथ की कही बात 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' को समझना होगा। उन्होंने कहा था 'रसपूर्ण वाक्य ही काव्य है।' उनका वाक्य से मतलब मात्र एक वाक्य से नहीं था, कई वाक्यों की विचार, भाव व अर्थगत संयोजकता से था। अतः मात्र शब्द शुद्धि/शब्द लालित्य से मौलिक लेखन नहीं किया जा सकता। लेखन में आदि से अंत तक एक क्रमबद्धता, तार्किकता व आंतरिक लय आदि का होना जरूरी है। इसी से लेखन पठनीय एवं रोचक बनता है। हम देखते हैं कि स्कूल दीवार पर लिखे नीति के वचन, श्लोक, कोटेशन आदि ने भी विद्यार्थियों में नैतिकता का विकास कम और उन्हें बोरियत या बोझिल वातावरण देने का काम अधिक किया है। हाँ, बुद्धि विकसित होने पर उन्हें सूक्ति वाक्य, सुभाषित, दोहे आदि जरूर अच्छे लग सकते हैं, परन्तु शुरूआती दौर में नहीं, क्योंकि इनकी रचना के मूल में वर्षों का अनुभव, परिश्रम, तप आदि होता है। प्रारंभिक अवस्था के बच्चे इनसे गुजरे हुए नहीं होते। इस कारण वे उनमें निहित अर्थ गौरव/भंगिमा को महसूस नहीं कर पाते। उन्हें तो विस्तार से ही कही/लिखी बात, किस्से, कहानी आदि अधिक भाते हैं। वे इन सार सूत्रों को रट जरूर लेंगे, शब्दशः, पर उनमें निहित अर्थ को ग्रहण कर जीवन में नहीं उतार पाएँगे। नतीजन वे भी तोता-रटू बन जाएँगे। हूबहू हिज्जे में होशियार, कोरे शब्द साधक, अर्थ से अनजान, उदासीन।

पाठ्यक्रम के साथ

पाठ्यक्रम में मौलिक लेखन को बढ़ावा देने वाली सामग्री का संयोजन होना चाहिए। इसमें ऐसी कविता, कहानी व गद्य विधा का संकलन किया जाए जो मौलिक लेखन को प्रेरित करने वाली हो। शिक्षक उनके आधार पर मौलिक लेखन संबंधी कई गतिविधियाँ आयोजित करवा सकता है।। पाठ्यक्रम में कालक्रम के लिहाज से सभी कालों की रचनाओं का संकलन किया जाए जिससे बच्चा रचना की भाषा शैली और रूप की परिवर्तनशीलता को समझ सके। इसके साथ ही कुछ रचनाएँ पाठ्यक्रम में ऐसी भी शामिल करनी चाहिए, जो सीधी-सीधी मौलिक लेखन की सराहना करती हो। बड़े रचनाकारों की आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण आदि में इस प्रकार के अंश मिल सकते हैं। बानगी के तौर पर इस तरह के अंश पाठ्यक्रम में रखे जा सकते हैंः-

''मैं क्यों लिखता हूँ? यह प्रश्न सरल जान पड़ता है, पर बड़ा कठिन भी है। एक उत्तर तो यह है कि मैं इसीलिए लिखता हूँ कि स्वयं जानना चाहता हूँ कि क्यों लिखता हूँ- लिखे बिना इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिल सकता है। वास्तव में सच्चा उत्तर यही है। लिख कर ही लेखक उस अभ्यन्तर विवशता को पहचानता है जिसके कारण उसने लिखा- और लिखकर ही वह उससे मुक्त हो जाता है।''

अज्ञेय, आत्मने पद से

इस तरह के कई तरीके, नुस्खे अथवा क्रियाकलाप अपनाकर बच्चों को मौलिक लेखन की ओर उन्मुख किया जा सकता है। मौलिक लेखन एक ऐसा अनंत आकाश है, जिसका कोई ओर-छोर नहीं है, इसलिए यह कहना कि ऊपर जो तरीके गिनाए गए हैं, वे ही सर्जनशील लेखन के लिए उत्तम है, गलत है। सर्जनशीलता सतत् चलने वाली एक सहज प्रक्रिया है, जिसमें खुलापन, नयापन, काल्पनिकता, तार्किकता आदि का होना बहुत लाजिमी है।

उपनिदेशक, आरटीई.
प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर
मो. 8003801094

शिक्षक जीवन शैली

प्रभावित होता छात्र जीवन

❐ वृद्धि चन्द गोठवाल

शिक्षा का सम्बन्ध अनिवार्यतः उज्ज्वल भविष्य से है। इसलिए इसमें मुख्य तौर पर योगदान करने वाले शिक्षक का दायित्व है कि वह शिक्षा को इसी परिप्रेक्ष्य में देखे। मानव जीवन का महत्त्व जीवन मूल्यों के पालन करने में है। इन्हें अलग कर दें तो धरती पर जन्म लेने का प्रयोजन ही निष्फल हो जाता है। महापुरुषों, देशभक्तों और श्रेष्ठ जीवन के गुरुजनों को उनके जीवन मूल्यों से ही याद किया जाता है। आज का परिवार, समाज और राष्ट्र समुन्नत हो, चरित्रवान बने, इस हेतु विद्यार्थी जीवन में जीवन मूल्यों का समावेश अत्यावश्यक है। इसमें शिक्षक जीवन शैली का योगदान प्रभावी एवं महत्त्वपूर्ण है। पाश्चात्य सभ्यता एवं वर्तमान गिरते सामाजिक वातावरण से प्रभावित विद्यार्थियों के जीवन को टटोलें तो लगेगा कि नैतिक मूल्यों में न्यूनता आ रही है। मोबाइल और टी.वी. संस्कृति के प्रभाव को भी नकारा नहीं जा सकता। फिर जीवन मूल्यों की परख में आजकल हर जगह जड़ों की बजाय पत्तों को सींचने की आदतें हैं, अर्थात् मात्र दिखावा ही दिखावा हो रहा है तो सुपरिणाम कैसे प्राप्त हो?

विद्यार्थियों में बढ़ती हुई अवांछनीय हरकतों एवं आदतों पर रोक नहीं हो तो शिक्षा के स्तर एवं शिक्षक की जीवनशैली पर सीधा प्रहार होता ही है। आजकल विद्यार्थियों में नशीली वस्तुओं का सेवन, बड़े-बुजुर्गों, गुरुजनों की आज्ञा अवहेलना, अपशब्दों का प्रयोग, अनुशासनहीनता, परीक्षा में नकल, हड़ताल, झगड़ना, सदाचार के बाहर का व्यवहार, अध्ययन के प्रति अरुचि, असहनशीलता, भद्दी फैशन, रहन-सहन एवं खानपान के बिगड़ने से मानवता चरमरा उठी है। इस तरह जिस गति से जीवन मूल्यों की क्षति हो रही है, उसमें परिवर्तन और गुणवत्ता लाने के लिए निःसंदेह शिक्षक की जीवनशैली का योगदान महत्त्वपूर्ण है क्योंकि छात्रों के जीवन पर अपने अभिभावकों का प्रभाव इतना अधिक नहीं पड़ता जितना शिक्षक की जीवन पद्धति एवं आदर्शों का पड़ता है। गौरतलब है कि जीवन मूल्यों को मात्र श्रवण कराने से कुछ नहीं होता बल्कि उन्हें विद्यार्थियों के दिलो-दिमाग में बैठाने की आवश्यकता है। इसके लिए गुरु-शिष्य के बीच मधुर सम्बन्ध होना ही चाहिए।

शिक्षक की जीवन शैली का प्रभाव छात्र पर जीवन भर रहता है। कहा भी जाता है कि जैसा शिक्षक वैसा ही शिष्य। यानि छात्र का आचरण शिक्षक के गुणों एवं चरित्रबल को इंगित करता है। प्रायः परिवारों के सदस्य बोल पड़ते हैं कि तुम्हारे मास्टर सा ने यही सिखाया है कि माता-पिता को परेशान करो? तो प्रश्न उठता है और समझ में आता है कि शिक्षक में उच्च कोटि के जीवनादर्शों का होना लाज़मी और निहायत जरूरी है। जनसाधारण की चर्चा में शिक्षक समाया हुआ है। वह शिक्षक के गुण-दोषों का मूल्यांकन प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से करता रहता है। आज का शिक्षक प्राचीन गुरुजनों के समान आदर्श प्रस्तुत कर सके यह तो कहना और मानना मुश्किल लगता है, किन्तु अपने आचरण-व्यवहार के प्रदर्शन से सद्गुणों के माध्यम से छात्रों में जीवन मूल्यों का निर्माण तो अवश्य कर ही सकता है। जैसे-समय प्रबन्धन को अपनी जीवन शैली का अभिन्न अंग बनाकर, सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत को अपना कर, अध्यापन कार्य को प्रभावशाली बनाकर, समर्पण की भावना से काम करके, रहन-सहन, शुद्ध खान-पान की प्रवृत्ति से, राष्ट्र सेवा से, समाज सेवा से, कर्त्तव्यनिष्ठा से, भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के आचरण से, छात्र प्रेम से, अनुशासन से, चरित्रबल से और मानवीय गुणों की जीवन पद्धति से छात्रों के जीवन को प्रभावित किया जा सकता है। एक समय था जब शिक्षक को देश का मस्तिष्क, समाज का दर्पण, साहित्य की धुरी, संस्कृति का प्रहरी, सद्गुणों का खजाना समझा जाता था और वे अपना दायित्व समझकर अपने शिष्यों में भावनाओं को जगाते, सहृदय, करुणा, प्रेम, सत्य, ज्ञान आदि से चरित्र का निर्माण करते थे। फिर सद्वृत्तियों से शिक्षक ने मुँह मोड़ क्यों लिया? शिक्षक विचारे।

कोई माने अथवा न माने मेरा तो मानना है कि आज भी शिक्षक पर विश्वास किया जाता है कि वह कर्त्तव्य विमुख नहीं है। बस, कर्त्तव्यनिष्ठ, कर्मनिष्ठ होकर छात्रों में जीवन मूल्यों का विकास करे। प्रसंगवश कहूँ कि आज भी ऐसे अधिकारी एवं शिक्षक हैं जो समय एवं सदाचार का ख्याल करके अच्छे आदर्श की प्रस्तुति से छात्र वर्ग एवं शिक्षक वर्ग को प्रेरणा देते हैं। एक प्रधानाचार्य मोटर की देरी हो जाने से बीस मिनट विद्यालय में विलम्ब से पहुँचे और अपना अवकाश प्रार्थना-पत्र मेज पर रख दिया। साथियों ने देखा तो कहा कि- सर, यह क्या? आप तो संस्था के अधिकारी हैं। वे दो शब्द ''तभी तो'' बोलकर विद्यालय में हर दिन की भाँति अध्ययन-अध्यापन कार्य में संलग्न हो गए। एक आदर्श ने प्रत्येक के लिए शिक्षा प्रस्तुत कर दी। मेरे एक गुरुजी हँसी मजाक में कहा करते थे कि शिक्षक बहुत भोला है। वह पॉकेट डायरी में टी.ए., मेडिकल, एरियर, बोनस आदि पर टिप्पणी दे देता है किन्तु अध्यापक दैनन्दिनी का उसे ख्याल नहीं रहता। मैं पूछ सकता हूँ यह सच है तो ऐसे शिक्षक विद्यार्थी जीवन का उद्धार कभी नहीं कर सकते हैं। समय का तकाजा है शिक्षक अपनी महानता में वृद्धि कर अपनी जीवन शैली में हर पल सावधान होकर छात्रों के जीवन में सद्गुणों का विकास करें। ऐसी अपेक्षा परिवार, समाज एवं राष्ट्र शिक्षक से करता है।

सेवानिवृत्त व्याख्याता
कपासन, चित्तौड़गढ़-राज.-312202
मो: 9414732090

आवश्यक सूचना

रचनाएँ आमंत्रित

'शिक्षक दिवस' के उपलक्ष्य में प्रकाशनार्थ विविध विषयों व विधाओं पर शिक्षकवृंद व सुधी पाठकों से रचनाएँ दिनांक 31 मई, 2018 तक आमंत्रित की जाती हैं। अतः अपने शैक्षिक चिंतन-अनुभव, कहानी, संस्मरण, एकांकी, बाल साहित्य, कविता एवं राजस्थानी साहित्य (गद्य-पद्य) आदि मौलिक रचनाएँ 'वरिष्ठ संपादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर' के नाम से प्रेषित करें। रचना के अंत में मौलिकता की घोषणा एवं हस्ताक्षर भी आवश्यक है। साथ ही बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की छायाप्रति प्रत्येक रचनानुसार अलग-अलग संलग्न करें। निर्धारित तिथि पश्चात प्राप्त रचनाओं पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

-संपादक

आदेश-परिपत्र : मार्च, 2018

1. एस.आई.क्यू.ई. आधारित प्रशिक्षणों हेतु दिशा-निर्देश।
2. अनुपयांगी विश्रामकाल दिवसों की एवज में उपार्जित अवकाश स्वीकृति बाबत।

1. एस.आई.क्यू.ई. आधारित प्रशिक्षणों हेतु दिशा-निर्देश।

● कार्यालय निदेशक प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/प्रारं/एसआईक्यूई./19509/2017/633 दिनांकः 09-02-2018 ● विषयः एसआईक्यूई. आधारित प्रशिक्षणों हेतु दिशा-निर्देश।

राज्य सरकार के दिशा-निर्देशों की पालना में कक्षा 1 से 5 तथा कक्षा 6 से 8 के शिक्षकों (प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा में कार्यरत) को एसआईक्यूई. आधारित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर द्वारा आयोजित किए जा रहे हैं। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में संवर्धन के साथ उनके द्वारा प्रभावी अध्यापन एवं प्रारम्भिक शिक्षा की नींव को मजबूत आधार प्रदान करते हुए शिक्षकों हेतु लाभकारी है। इस प्रक्रिया में एसआईईआरटी., उदयपुर में प्रथम चरण में प्रत्येक ब्लॉक से 5 के.आर.पी. प्रति विषय अर्थात् 302 ब्लॉक हेतु 6040 के.आर.पी. तैयार किए जाएँगे जो द्वितीय चरण में अपने ब्लॉक/जिले में शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।

एसआईईआरटी., उदयपुर के पत्रांक राराशैअप्रस-उदय/वि-4/प्र-2/फा. 3693/2018 दिनांक 06.02.2018 के द्वारा इस कार्यालय को अवगत करवाया गया है कि प्रथम चरण के के.आर.पी. प्रशिक्षण में आमंत्रित संभागियों की उपस्थिति 45.64 प्रतिशत रही है जो अत्यन्त खेदजनक स्थिति है।

राज्य सरकार के पत्रांक प.7(10) प्राशि/आयो./2017 जयपुर दिनांक 26.10.2017 के द्वारा भी समस्त उपनिदेशक/जिला शिक्षा अधिकारियों को निर्देश जारी कर यह पाबंद किया गया है कि एसआईईआरटी. उदयपुर द्वारा आमंत्रित शिक्षकों को प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु अनिवार्यतः यथा समय कार्यमुक्त किया जावें।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों की महत्ता को ध्यान में रखते हुए निम्नांकित निर्देश प्रसारित किए जाते हैं-

- राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा के.आर.पी. प्रशिक्षण हेतु जारी आदेशों की अधीनस्थ कार्यालय (यथा-उपनिदेशक (मा./प्रा.शि)/जिला शिक्षा अधिकारी (मा./प्रा.शि)/ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी/पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी/संस्थाप्रधान द्वारा अक्षरशः पालना सुनिश्चित कर के.आर.पी. शिक्षकों को यथा समय कार्यमुक्त करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम में भेजेंगे। साथ ही संबंधित अधिकारी आमंत्रित के.आर.पी. के कार्यमुक्ति आदेशों में यह आवश्यक रूप से अंकन करें कि एसआईईआरटी. से के.आर.पी. प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त उपस्थिति प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर ही आलोच्य माह का वेतन आहरित किया जावेगा।
- निदेशक एसआईईआरटी. का यह उत्तरदायित्व होगा कि यदि उपर्युक्त अधिकारियों द्वारा के.आर.पी. को कार्यमुक्त कर यथा समय नहीं भेजा जाता है तो उत्तरदायी अधिकारी जि.शि.अ./बी.ई.ई.ओ./पी.ई.ई.ओ./संस्थाप्रधान के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही के विस्तृत प्रस्ताव यथा आरोप पत्र, विवरण पत्र, प्रपत्र अ, ब, स, व द तथा राजस्थान असैनिक सेवाएँ नियम 1958 के तहत आवश्यक अभिलेख आदि तैयार कर सक्षम स्तर पर प्रेषित किया जावे। अन्यथा एसआईईआरटी. इस हेतु स्वयं उत्तरदायी होगी।

जिला/ब्लॉक स्तर पर आयोजित होने वाले आगामी एसआईक्यूई. के समस्त प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु के.आर.पी. एवं शिक्षकों को कार्यमुक्त करने में भी उपर्युक्त प्रक्रिया की निर्देशानुसार पालना सुनिश्चित की जानी है। जिससे शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम निर्बाध संचालित हो सके। के.आर.पी. प्रशिक्षण पूर्ण होने के पश्चात् दिनांक 01.05.2018 को एसआईईआरटी. निम्न प्रारूप में सूचना निदेशालय को प्रेषित करें।

क्र. सं.	जिले का नाम	जिले से आमंत्रित केआरपी की संख्या	उपस्थित केआरपी की संख्या	अनुपस्थित केआरपी की संख्या	अनुपस्थिति का कारण

उपर्युक्त सूचना में जिन जिला शिक्षा अधिकारियों (मा./प्रा.शिक्षा) के द्वारा लक्ष्यों की शत-प्रतिशत प्राप्ति नहीं की जाती है तो एसआईईआरटी. का यह उत्तरदायित्व है कि वह उन अधिकारियों के विरुद्ध सीसीए. नियमों के तहत अनुशासनात्मक कार्यवाही के विस्तृत प्रस्ताव भी प्रेषित करें। जिला/ब्लॉक स्तर पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में एसआईईआरटी. उदयपुर द्वारा प्रति दिवस सतत् प्रबोधन किया जावें।

● **(नथमल डिडेल)**IAS निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● **(पूर्ण चन्द्र किशन)**IAS निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. अनुपयोगी विश्रामकाल दिवसों की एवज में उपार्जित अवकाश स्वीकृति बाबत।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● परिपत्र ● शासन उप सचिव, शिक्षा (ग्रुप-2) विभाग राजस्थान, जयपुर के पत्र क्रमांक : प. 19 (08) शिक्षा-2/2016 जयपुर, दिनांक 04.01.2018 के क्रम में राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल के द्वारा संचालित 419 विद्यालयों को सन्दर्भ केन्द्रों के रूप में स्थापित किए जाने के फलस्वरूप इन सन्दर्भ केन्द्रों पर परीक्षा आवेदन भरने एवं व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम सम्बन्धी गतिविधियाँ ग्रीष्मकालीन एवं शीतकालीन अवकाश अवधि में सम्पादित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल द्वारा वर्ष में दो बार (माह अक्टूबर-नवम्बर एवं मार्च-मई) माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर की परीक्षाओं का आयोजन भी

लगभग 300-350 परीक्षा केन्द्रों पर भी किया जाता है। इस हेतु सम्बन्धित विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्य/ प्रधानाध्यापक/अध्यापकों द्वारा शिविरा कलैण्डर के अनुसार घोषित अवकाश अवधि में सम्पादन हेतु विद्यालय में उपस्थिति दी जाती है।

अतः 'राजस्थान सेवा नियम-1951' के नियम-92 (ख) के अनुसार विश्रामकालीन विभाग के अध्यापन में कार्यरत कार्मिक यदि किसी कलैण्डर वर्ष में विश्रामकालों का उपभोग नहीं कर सके, तो उसे ऐसे अनुपयोगी विश्रामकालों के एवज में 15 दिनों के अनुपात में (03 दिवस के एवज में एक उपार्जित अवकाश) नियमानुसार उपार्जित अवकाश कार्यालयाध्यक्ष/सक्षम प्राधिकारी द्वारा स्वीकृत किए जाने की स्वीकृति एतद् द्वारा प्रदान की जाती है।

● **(नथमल डिडेल)** आई.ए.एस., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा-स/ओपन स्कूल/2007-2017/282 दिनांक : 22-02-2018

माह : मार्च, 2018	**विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम**					प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक
दिनांक	**वार**	**आकाशवाणी केन्द्र**	**कक्षा**	**विषय**	**पाठ क्रमांक**	**पाठ का नाम**
3.3.2018	शनिवार	जयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	23	आजादी के बाद का भारत
5.3.2018	सोमवार	उदयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	18	1857 का स्वतंत्रता संग्राम
6.3.2018	मंगलवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	19	जब आई आपदा
7.3.2018	बुधवार	उदयपुर	9	संस्कृत (तृ. भाषा)	14	कार्यं खलु साधयेयम्
8.3.2018	गुरुवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
9.3.2018	शुक्रवार	उदयपुर	8	विज्ञान	15	प्राकृतिक परिघटनाएँ
10.3.2018	शनिवार	जयपुर	9	हिन्दी	20	निबन्ध
12.3.2018	सोमवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
13.3.2018	मंगलवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
14.3.2018	बुधवार	उदयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	15	जब चाहें तब खाएँ
15.3.2018	गुरुवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		विश्व उपभोक्ता दिवस
16.3.2018	शुक्रवार	उदयपुर	3	हिन्दी	15	अटल ध्रुव
17.3.2018	शनिवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		जय झूलेलाल
20.3.2018	मंगलवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
21.3.2018	बुधवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
22.3.2018	गुरुवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
23.3.2018	शुक्रवार	जयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	21	सड़क सुरक्षा : शिक्षा
24.3.2018	शनिवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		मर्यादा पुरुषोत्तम-श्रीराम
26.3.2018	सोमवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
27.3.2018	मंगलवार	उदयपुर	3	पर्यावरण अध्ययन	20	संचार के साधन
28.3.2018	बुधवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		अहिंसा के पुजारी-महावीर स्वामी
31.3.2018	शनिवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		राजस्थान दिवस की जानकारी

निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।

मार्च 2018

रवि		4	11	18	25
सोम		5	12	19	26
मंगल		6	13	20	27
बुध		7	14	21	28
गुरु	1	8	15	22	29
शुक्र	2	9	16	23	30
शनि	3	10	17	24	31

पञ्चाङ्ग

मार्च 2018 ● कार्य दिवस-22, रविवार-04, अवकाश-05, उत्सव-05 ● 1 मार्च-होलिका दहन (अवकाश) **2 मार्च-**धूलण्डी (अवकाश) **15 मार्च-**विश्व उपभोक्ता दिवस (उत्सव) **19 मार्च-**चेटीचण्ड (अवकाश-उत्सव) **25 मार्च-**रामनवमी (अवकाश-उत्सव) **29 मार्च-**महावीर जयन्ती, अहिंसा दिवस (अवकाश-उत्सव) **30 मार्च-**राजस्थान दिवस (उत्सव), गुड-फ्राइडे (अवकाश)

राष्ट्रीय विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम

विद्यालय आपदा प्रबंधन

❒ महावीर प्रसाद प्रजापत

अंतर्राष्ट्रीय बाल अधिकार अभिघोषणा में बच्चों को पालन-पोषण का ही नहीं, उन्हें सुरक्षा का अधिकार भी मानव अधिकार के अन्तर्गत प्रदत्त किया गया है। बच्चों को परिवार के अधीन न मानकर स्वतंत्र इकाई के रूप में मानव अधिकारों का हकदार माना गया है। बच्चे वास्तव में बहुत अधिक कोमल व संवेदनशील होते हैं। फलतः उनकी सुरक्षा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। बच्चों का काफी समय शिक्षा प्राप्ति के लिए सहज रूप से विद्यालयों में भी बीतता है। सुरक्षा के दृष्टिकोण से देखा जाए तो बच्चों को आपदाओं से सुरक्षा वर्तमान परिवेश में बहुत महत्त्वपूर्ण हो गई है। शिक्षण संस्थानों व उनके आसपास के परिवेश में प्राकृतिक आपदाओं के अलावा परिवेशजनित आपदाओं का भी प्रवेश हो चुका है। मंच दुर्घटना की भगदड़, वाहन दुर्घटना या खाइयों में बच्चों का दफन हो जाना इसके उदाहरण है। ऐसी स्थिति में शिक्षण संस्थाओं में आपदा से सुरक्षा प्राथमिकता में आता है।

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने राष्ट्रीय विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षण संस्थाओं के लिए 'राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन निर्देशिका विद्यालय सुरक्षा नीति 2016' नाम से दिशानिर्देश भी जारी किए हैं। इन दिशा-निर्देशों की महत्ता इस बात से भी इंगित होती है कि सर्वोच्च न्यायालय में इन निर्देशों में दर्शित मार्गदर्शक पंक्तियों (Guide Lines) की क्रियान्विति से संबंधित पालना रिपोर्ट मांगी है।

विद्यालय आपदा प्रबंधन योजना के अंतर्गत भारतीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने राज्य, जिला व विद्यालय स्तर पर गाइड लाइन्स की क्रियान्विति के संबंध में किए जाने वाले कार्यों को निश्चित किया है।

विद्यालय स्तर पर राष्ट्रीय विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम (National School Safety Programme NSSP) के अन्तर्गत विद्यालय की वार्षिक योजना में विद्यालय आपदा प्रबंधन योजना का प्रावधान किया जाता है। इस योजना की प्रारूपी रूपरेखा में पाँच खण्ड हैं-

1. प्रस्तावना
2. विपदा, जोखिम व असुरक्षितता आकलन
3. आपदा से निपटने की तैयारी
4. कार्यवाही
5. प्रशमन उपाय

खण्ड-1 प्रस्तावना : योजना के इस खण्ड में विद्यालय का विवरण, योजना का लक्ष्य तथा उद्देश्य के साथ ही साथ विद्यालय की भौगोलिक अवस्थिति को शामिल किया जाता है।

खण्ड-2 विपदा, जोखिम व असुरक्षितता आकलन : इस खण्ड में संरचनात्मक और गैर-संरचनात्मक तत्वों के कारण उत्पन्न हुए संभावित जोखिमों तथा विद्यालय भवन के अन्दर स्थित असुरक्षित क्षेत्रों की पहचान करने पर सारा ध्यान केन्द्रित किया जाता है। विद्यालय परिसर के बाहर की विपदाओं की पहचान, विद्यालय को प्रभावित करने वाली पहले (पूर्व) की आपदाओं का डाटाबेस, विद्यालय के भीतर असुरक्षित स्थानों की पहचान और प्रशमन के मुख्य निष्कर्ष-कार्यों का सार भी इसी खण्ड में शामिल होता है।

खण्ड-3 आपदा से निपटने की तैयारी : योजना का यह सबसे महत्त्वपूर्ण भाग है। इस खण्ड में एक तरफ से आपदा प्रबंधन की सम्पूर्ण व्यूह रचना शामिल मानी जाती है। योजना के इस खण्ड में निम्नांकित बातें शामिल होनी चाहिए-

(क) विद्यालय आपदा प्रबंधन समिति का गठन, उसकी भूमिका व उत्तरदायित्व
(ख) उप समूहों का गठन
(ग) संसाधन माल सूची
(घ) चेतावनी प्रक्रम
(ड) सुरक्षित निकास योजना
(च) वार्षिक कलैण्डर
(छ) कृत्रिम अभ्यास के संचालन की योजना
(ज) आपदा प्रबंधन योजना के अद्यतन हेतु कार्य

(क) विद्यालय आपदा प्रबंधन : विद्यालय आपदा प्रबंधन समिति की अनुशंसित रूपरेखा निम्नानुसार है-

1. अध्यक्ष : प्रधानाचार्य
2. उपप्रधानाचार्य, प्राइमरी तथा मिडिल क्लासों के प्रमुख
3. क्षेत्रीय शिक्षा अधिकारी/उप शिक्षा अधिकारी
4. अभिभावक शिक्षक संघ अध्यक्ष
5. 4 छात्र (एन.सी.सी., एन.एस.एस., स्काउट तथा गाइड, हेड बॉय तथा हेड गर्ल)
6. राहत/राजस्व/आपदा प्रबंधन विभाग/जिला प्रशासन/नगर निगम के प्रतिनिधि
7. अग्निशमन सेवाओं के प्रतिनिधि (निकटतम दमकल केंद्र से) अथवा नागरिक रक्षा कार्मिक
8. पुलिस के प्रतिनिधि (निकटतम पुलिस थाने से)
9. स्वास्थ्य विभाग के प्रतिनिधि (स्थानीय डॉक्टर)
10. सिविल डिफेंस से एक वार्डन

(ख) संसाधन सूची : संसाधन सूची के अन्तर्गत पाँच प्रकार की सूचियाँ हो सकती हैं-

1. **विद्यालय परिसर में संसाधन** : यह सूची विद्यालय परिसर में उपलब्ध उन संसाधनों की सूची होती है, जिनका उपयोग आपदा की स्थिति के दौरान कारगर कार्यवाही के लिए किया जा सकता है। इस प्रकार की माल सूची के मार्गदर्शक टिप्पणी में बताया गया है कि आपदा से निपटने की तैयारी के अभ्यास के भाग के रूप में प्रत्येक विद्यालय को अनिवार्य रूप से एक विद्यालय आपदा प्रबंधन किट तैयार करनी चाहिए। यह प्रस्ताव किया गया है कि आपातकाल में मदद के लिए निकटतम अस्पताल/स्वास्थ्य केन्द्र/स्वास्थ्यकर्त्ता के साथ विद्यालय प्रबंधन

द्वारा एक नेटवर्क की स्थापना की जाए। विद्यालय आपदा प्रबंधन किट के लिए खरीदने हेतु मदों की प्रस्तावित सूची नीचे दी गई है। तथापि यह प्रस्ताव किया गया है कि प्रत्येक विद्यालय में इस संसाधन में और बढ़ोतरी के लिए अन्य बाहरी संसाधन (राज्य सरकारों द्वारा दिए गए अनुदान जैसे एम.पी.एल.डी./एम.एल.ए.एल.ए.डी. आदि) के लिए प्रावधान होना अनिवार्य है।

1. स्ट्रेचर
2. सीढ़ियाँ (लैडर)
3. मोटी रस्सी
4. टॉर्च
5. प्रथम उपचार बक्सा
6. स्थायी शरण व्यवस्था (तम्बू तथा तिरपाल)
7. रेत की बाल्टियाँ
8. आग बुझाने वाले यंत्र (फायर एक्सटिंगुशर्स)

2. **परिसर के बाहर** : इस सूची में विद्यालय के 1 कि.मी. से 5 कि.मी. की सीमा में स्थित बाहरी संसाधनों की पहचान कर सूचीबद्ध किया जाए। इसमें निम्न को सूचीबद्ध किया जाता है–
   1. आपातकालीन इलाज के लिए अस्पताल, स्वास्थ्य केन्द्र
   2. पुलिस थाना
   3. दमकल केन्द्र
3. **प्रधानाचार्य कक्ष सूची** : इसमें महत्त्वपूर्ण टेलीफोन नम्बर अद्यतन कर उनकी सूची तैयार की जाती है।
4. **विद्यार्थी सूचना सूची** : इसमें प्रत्येक बच्चे की गंभीर स्वास्थ्य समस्या के रिकॉर्ड का रखरखाव, पहचान पत्र व अभिभावक संपर्क के अद्यतन संपर्क का ब्यौरा रखा जाता है।
5. **जाँच सूची** : यह सूची आपदा से निपटने की तैयारी संबंधी जाँच सूची है। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण सूची है। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने विद्यालयों में इसी सूची की पालना संबंधी जानकारी चाही है। इस सूची के सबसे ऊपर विद्यालय का नाम व जाँच सूची, अद्यतन की तिथि लिखी जाती है। तत्पश्चात् सूची की 12 बिंदुओं में जाँच होती है।

आपातकालीन प्रबंधन योजना : जाँच सूची
विद्यालय का नाम एवं स्थान.....
तिथि : .....

		हाँ
1.	क्या संबंधित विभागों से आपातकालीन नम्बरों की पुष्टि कर ली गई है?	☐
2.	क्या प्रधानाचार्य कक्ष में आपातकालीन नम्बरों को प्रमुखता से दर्शाया गया है?	☐
3.	क्या योजना में सरकारी सेवाओं तथा संबंधित शिक्षा प्राधिकरणों को आपातस्थिति की सूचना देने के लिए प्रक्रियाओं का स्पष्ट उल्लेख है?	☐
4.	क्या पहचान किए गए कार्यस्थल से एक किलोमीटर के भीतर और उतनी दूरी तक आपदा के संभावित जोखिम मौजूद है?	☐
5.	क्या योजना में निकास योजना का स्पष्ट उल्लेख है?	☐
6.	क्या मुख्य कार्मिकों यथा कार्य बल टीम के प्रमुख, कक्षा अध्यापक, कार्यालय स्टाफ तथा छात्रों की भूमिकाएँ और उत्तरदायित्वों का स्पष्ट वर्णन किया गया है?	☐
7.	क्या आपातस्थिति के दौरान तथा उसके बाद छात्रों की सुरक्षा तथा पर्यवेक्षण के लिए स्टाफ के उत्तरदायित्वों का स्पष्ट वर्णन किया गया है?	☐
8.	क्या कक्षा 5 से नीचे की कक्षाओं वाले अधिक असुरक्षित छात्रों पर योजना में जोर दिया गया है?	☐
9.	क्या योजना में छात्रों की विशेष शारीरिक, मानसिक तथा चिकित्सा आवश्यकताओं का समाधान किया गया है?	☐
10.	क्या योजना में यह वर्णन है कि आपदा प्रबंधन टीम को किस तरह प्रशिक्षित किया जाए?	☐
11.	क्या योजना में संचालित किए जाने वाले कृत्रिम अभ्यासों के लिए कलैण्डर की व्यवस्था की गई है?	☐
12.	क्या योजना को स्थानीय पुलिस तथा फायर ब्रिगेड द्वारा पृष्ठांकित किया गया है?	☐

(ग) चेतावनी प्रक्रम : इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों और शिक्षकों को चेतावनी देने वाली प्रक्रम को सुनिश्चित किया जाता है, जिसमें अलार्म की स्थापना सुनिश्चित की जाती है।

(घ) सुरक्षित निकास योजना : इसके अन्तर्गत विद्यालय का मानचित्र तैयार किया जाता है, जिसमें उचित स्थान पर सुरक्षित निकास होना भी इंगित हो। इसके लिए यह सिफारिश की गई है कि प्रत्येक तल के लिए एक सुरक्षित निकास योजना तैयार की जाए और उसे प्रमुखता से प्रत्येक तल (फ्लौर) के नोटिस बोर्ड पर दर्शाया जाए। सुरक्षित निकास योजना पर सुरक्षित निकास टीम द्वारा अध्यापकों तथा छात्रों के साथ चर्चा की जाए ताकि कृत्रिम अभ्यास संचालन में मदद के लिए उनके बीच जागरूकता पैदा की जा सके।

(ड़) वार्षिक कलैण्डर : विभिन्न तैयारी, कार्यकलापों के संचालन के लिए इन्हें लागू करने की योजना का वार्षिक कलैण्डर तैयार किया जाता है। इसमें वर्षभर के विभिन्न कार्यक्रमों की समयबद्ध सूची होती है। जिसमें जागरूकता सृजन कार्यक्रम प्रमुख है। जागरूकता सृजन/सुग्राहीकरण आपदा से निपटने की तैयारी के उपायों का एक हिस्सा है, जिसका लक्ष्य जिनमें छात्र, अध्यापक तथा अधिकारी/अभिभावक सहित सभी हितधारकों और विद्यालय सुरक्षा से संबंधित मुद्दों के प्रति सुग्राहीकरण तथा उन पर शिक्षा प्रदान करना है। यह प्रस्ताव किया गया है कि छात्र/अध्यापक आदि की संलिप्तता वाले विभिन्न कार्यकलापों को शामिल करके ऐसे कार्यक्रमों का एक वार्षिक कलैण्डर तैयार किया जाए और उन कार्यक्रमों में बाहर के विशेषज्ञों को भी विद्यालय सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर अपनी राय देने के लिए आमंत्रित किया जाए।

जागरूकता पैदा करने के लिए विद्यालय प्रबंधन द्वारा किए जा सकने वाले कुछ उपाय निम्नानुसार है :

1. विद्यालयों में पोस्टर, ऑडियो-विजुअल क्लिप, वाद-विवाद प्रतियोगिता,

प्रश्नोत्तरी, खेल क्रियाकलाप, चित्रकारी प्रतियोगिता, रैली के आयोजन के माध्यम से।

2. विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर महत्त्वपूर्ण सूचना को प्रदर्शित करना, जिसमें विद्यालय से सुरक्षित निकास की योजना तथा मौसम के हाल संबंधी अखबार की कतरन को लगाया जाना शामिल है।
3. शिक्षा के वातावरण को सुरक्षित बनाने पर सम्मेलन तथा भाषणों का आयोजन करना और ऐसे सम्मेलन में अभिभावकों को शामिल करना।
4. विद्यालय के वार्षिक कलैण्डर में किसी एक महीने को आपदा से निपटने के लिए तैयारी मास के रूप में मनाना।

(च) कृत्रिम अभ्यास संचालन योजना : कृत्रिम अभ्यास हेतु मार्गदर्शक टिप्पणी यह की गई है कि कृत्रिम अभ्यास, आपदा से निपटने की तैयारी योजना से संबंधित बातों की सूची तैयार करने का एक उपाय है। भूकंप, आग से बचाव आदि पर कृत्रिम अभ्यास कुछ अवधियों मुख्यतः हर छह महीनों में एक बार के अंतर पर किया जा सकता है और योजना के अद्यतन (अपडेशन) के लिए अभ्यास की कमियों का आकलन किया जा सकता है। योजना के इस खंड में कृत्रिम अभ्यासों के संचालन के लिए अपनाए जाने वाले कदमों तथा अध्यापकों, गैर-अध्यापन स्टाफ तथा छात्रों के उत्तरदायित्व का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। यदि जरूरत हो तो विद्यालय को सहायता के लिए अग्निशमन सेवा अधिकारियों तथा प्रशिक्षित सिविल डिफेंस स्वयंसेवकों को आमंत्रित करना चाहिए। भूकंप पर अभ्यास के लिए अपनाए जाने वाले कुछ कदमों का उल्लेख नीचे किया गया है-

भूकंप अभ्यास :

1. झुको, ढको तथा पकड़ों का अभ्यास।
2. बिना धक्का-मुक्की किए तथा गिरे एक मिनट से कम समय में कक्षा को खाली करना।
3. बाहर निकलने के विभिन्न रास्तों का उपयोग करते हुए चार मिनट से कम समय में विद्यालय से बाहर निकलना।
4. अपने मित्रों की तलाश करना।
5. कमजोर इलाकों/टूटी-फूटी इमारतों से दूर रहना।
6. उनकी मदद करना, जिन्हें सहायता की जरूरत है। (विकलांग बच्चों के बचाव के लिए अग्रिम में कार्य बल के सदस्यों को तय करना।)

आग/रासायनिक दुर्घटना से बचाव के लिए अभ्यास :

1. कक्षा से सुरक्षित बाहर निकलना।
2. ज्वलनशील द्रव/रसायन के सुरक्षित भंडारण को सुनिश्चित करना।
3. बिजली के स्विचों को बंद करना तथा गैस कनेक्शनों को हटाना अथवा बंद करना।

(छ) आपदा प्रबंधन योजना के अद्यतन हेतु कार्य : इस तैयारी में आपदा प्रबंधन योजना के अद्यतन किए जाने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाते है। योजना की समय सीमा, कार्यकर्त्ताओं की भूमिकाओं व प्रक्रिया को दिखाते हुए अपेक्षित कदम उठाए जाते हैं। इसके अन्तर्गत क्षमता निर्माण व प्रशिक्षण को भी शामिल किया जाता है।

खण्ड-4 कार्यवाही : योजना के इस खण्ड में निम्न कार्य संपादित होते हैं-

(क) विपदा-विशिष्ट कार्यवाही योजना, जिसमें वार्षिक समारोह, खेल दिवस आदि जैसे विशेष दिनों पर भगदड़ से बचने के लिए भीड़ का प्रबंधन शामिल है।

(ख) विद्यालय शिक्षा को जारी रखने के लिए वैकल्पिक इंतजाम। (आपदा के दौरान तथा बाद में शिक्षा को प्रदान किया जाना, विशेष रूप से उन मामलों में जहाँ विद्यालय का राहत शिविरों के रूप में उपयोग किया जाएगा।)

(ग) सरकार को आपात स्थिति/आपदाओं की रिपोर्ट देना।

(घ) विकलांग छात्रों के लिए विशेष प्रावधान।

योजना का यह खण्ड बहुत स्पष्ट और सुनिश्चित होना चाहिए, जिसमें आपदा की स्थिति के दौरान अध्यापक, गैर-अध्यापन स्टाफ तथा छात्रों की विभिन्न भूमिकाओं तथा जिम्मेदारियों को दर्शाया गया हो। योजना में यह स्पष्ट उल्लेख हो कि भूकंप, आग, बाढ़, चक्रवात अथवा भगदड़ या किसी छात्र द्वारा झेली जा रही स्वास्थ्य समस्याओं जैसी किसी आपातिक स्थिति के मामले में क्या कदम उठाए जाएँ? योजना में विद्यालय प्रबंधन द्वारा बच्चों की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए किए जाने वाले सभी कदम शामिल होने चाहिए, जिनमें प्रभावित स्थल से बच्चों को सुरक्षित निकाले जाने से लेकर, उनको उनके अभिभावकों को सौंपना शामिल है। इस योजना में विद्यालय में किसी आपदा के दौरान अथवा इसके तुरंत बाद बिजली, पानी तथा भोजन, प्रारंभिक प्रथम उपचार जैसी अनिवार्य सेवाओं की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए प्रबंधन द्वारा उठाए जाने वाले सभी अन्य कदम शामिल है।

खण्ड-5 प्रशमन उपाय : इसमें मुख्यतः दो बिन्दुओं पर कार्य होता है-

(क) विद्यालय द्वारा एक समय सीमा में किए जाने वाले विभिन्न गैर-संरचनात्मक उपायों की सूची बनाना।

1. सुरक्षित निकास, सीढ़ियों को सुनिश्चित करना जिनका आपदा के दौरान सुरक्षित निकास मार्ग के रूप में प्रयोग किया जाना है।
2. रसायन प्रयोगशाला-रसायनों के भंडारण के लिए उपयोग की गई बोतलों को सुरक्षित रखा गया है और उन्हें टूट-फूट से बचा कर रखा गया है।
3. अलमारियों को स्टाफ रूम की दीवारों के साथ भलीभाँति फिक्स किया गया है।
4. पंखों तथा बिजली-तारों आदि को सीलिंग से भलीभाँति जोड़ना।
5. अग्नि सुरक्षा उपाय।

(ख) सुरक्षा की जाँच (सेफ्टी ऑडिट) :

1. बिजली-मैकेनिक द्वारा बिजली के तारों आदि की सुरक्षा जाँच करना।
2. विद्यालय के अंदर आग लगने के संभावित स्रोतों तथा ज्वलनशील चीजों की पहचान करके उनकी अग्नि सुरक्षा संबंधित जाँच करना।
3. दोपहर के भोजन के दौरान दिए गए खाने (मिड-डे मील) की गुणवत्ता की जाँच-पड़ताल करना।

4. विद्यालय में जलापूर्ति की शुद्धता की जाँच करना।
5. रसोई तथा शौचालयों में सफाई की स्थिति की जाँच करना।

योजना के इस खण्ड में सारा ध्यान विद्यालय द्वारा किए जाने वाले प्रशमन उपायों पर रखा जाएगा। प्रशमन की योजना बनाना एक दीर्घावधिक प्रक्रिया है और इसलिए निश्चित समय सीमा में कार्यों की प्राथमिकताओं के आधार पर रणनीति को हिस्सों में बाँटना अनिवार्य है। यह भी जरूरी है कि आपदा के खतरे की प्रकृति और आपदा द्वारा मनुष्य की जान को हानि पहुँचाने तथा उसको चोट पहुँचाने की क्षमता के आधार पर कार्यों की प्राथमिकता बनाई जाए। कुछ गैर-संरचनात्मक उपाय जैसे- अलमारियों को दीवार के साथ फिक्स करना, बाहर निकलने के मार्गों को बाधा-रहित बनाना, प्रयोगशाला के सामान के भंडारण की उचित व्यवस्था तथा चेतावनी अलार्म को लगाने का कार्य आदि तुरंत मामूली लागत पर किए जा सकते हैं। कुछ अन्य प्रशमन उपाय जैसे-बड़ी इमारतों के मरम्मत कार्य के लिए अधिक समय तथा फंड की जरूरत होगी।

प्रशमन कार्यवाही के भाग के रूप में विद्यालय द्वारा आवधिक आधार पर अग्नि सुरक्षा तथा विद्युत सुरक्षा के लिए विद्युत विभाग/बोर्ड, अग्निशमन सेवाओं, पी.डब्ल्यू.डी. आदि के अधिकारियों की मदद से सुरक्षा जाँच भी कराई जानी चाहिए। अन्य उपाय जैसे-विद्यालय में पीने के पानी की शुद्धता की जाँच तथा सफाई की स्थिति की देखरेख आदि का काम भी किया जाना चाहिए।

शारीरिक शिक्षक
रा.उ.मा.वि., सुनारी, नागौर
(राजस्थान)-341306

जाग्रत मनुष्य कभी क्रियाहीन नहीं रहेगा। प्राप्त परिस्थितियों में जो लोग प्रसन्नतापूर्वक लगे रहते हैं जीवन का सुख उन्हीं को मिलता है।

स्वच्छता : अग्रिम पथ

❐ पुष्पा यादव

हमारा भारत देश प्राचीन काल से ही प्राकृतिक संपदा, पर्यावरण, जैव विविधता एवं सभ्यता विकास में अग्रणी रहा है। पौराणिक कहानियों तथा वेदों में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता प्रमुख आधार रहा। इसलिए स्वच्छता आज हमारे बीच एक महत्त्वपूर्ण विषय है। हम समस्त पृथ्वी ग्रह पर प्राकृतिक संसाधनों का संतुलन, पर्यावरण एवं मानव विकास में संसाधनों की उपयोगिता का ध्यान दोहन में रखें यही स्वच्छता का मूल आधार है। महात्मा गाँधी ने इसकी कल्पना की एवं शनैः शनैः यह वर्तमान में पहुँच गई। इसका साकार रूप तब निखर कर आया जब वर्तमान में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी ने लाल किले की प्राचीर से स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त, 2014 के अपने भाषण में इसकी घोषणा की एवं महात्मा गाँधी जयंती 2 अक्टूबर, 2014 को इसकी विधिवत शुरुआत 'स्वच्छता अभियान-स्वच्छ भारत', 'स्वस्थ भारत एवं सुरक्षित भारत' के नारे के साथ स्वयं नई दिल्ली में सड़क पर झाड़ू लगाकर की।

अब प्रश्न यह है कि स्वच्छता का जो अग्रिम मुकाम या पथ है वह क्या हो? या कहें इसमें भविष्य में क्या क्या अपार संभावनाएँ या चुनौतियाँ हमारे समक्ष है? प्रत्येक मुहिम में एक कार्ययोजना, प्रबन्धन एवं चरण निर्धारित किए जाते हैं। हमारा स्वच्छता विषय भी इसी प्रक्रिया में चरणबद्ध है। अब क्रियान्वयन में सरकारी बजट, आँकड़े, योजनाएँ, प्रबुद्ध समाज का सरोकार, शिक्षा एवं सेवा में इसका विशेष प्रचार-प्रसार, समाज एवं देश के विभिन्न वर्गों तक इसका सरलीकरण रूप में पहुँचना या जागृति लाना हमारा अगला ध्येय होना चाहिए।

आज इस चर्चा में हम प्रमुख बिन्दुओं पर प्रकाश डाल रहे हैं कि हमारी सरकार या व्यवस्था के अनुरूप संचालित विभिन्न योजनाओं, राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय कार्यक्रमों में हमारे युवा विशेषकर राष्ट्रीय सेवाओं के लिए तत्पर कैडेट्स इस स्वच्छता बिन्दु एवं विषय को अंगीकार करें एवं नवीन, स्वच्छ एवं विकसित भारत की नींव में एक प्रेरणा स्रोत एवं मील का पत्थर साबित हों। भारत सरकार द्वारा- राष्ट्रीय स्वच्छता कार्यक्रम विकास एवं स्वच्छता तथा बिजली योजनाएँ, स्मार्ट सिटी या शहरी विकास योजना के प्रथम एवं द्वितीय चरण, ओडीएफ. तथा ग्रामीण एवं शहरी कचरा प्रबन्धन, पुनः चक्रण जैसी पर्यावरण हितैषी योजनाएँ संचालित है उनको विशेषकर संपूर्ण सहयोग, नव विचारों का समावेश एवं आमजन तक पहुँचाना हमारा स्वच्छता के लिए अगला मिशन होना चाहिए।

आधुनिक प्राद्यौगिकी विकास से बढ़ रहा ई-वेस्ट या इलैक्ट्रोनिक कचरा प्रबन्धन एक चुनौतीपूर्ण कार्य हम सभी के समक्ष उभरकर आ रहा है। अतः इससे निबटने के लिए हमारे युवा उद्यमशील एवं किशोर वैज्ञानिक भी ऐसे आविष्कार या 'इनोवेशन' करें जो इस वैश्विक समस्या का स्थायी हल खोजने में मददगार हो। केवल विचार करने मात्र से ही किसी कार्य को किया नहीं जाता उसके लिए पूर्ण मनोयोग, योजनाबद्ध कार्यशैली, कुशल प्रबन्धन, वित्तीय समावेशन एवं पर्यावरण हितैषी मानव जीवन शैली इसके लिए अति आवश्यक कारक है। स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण परस्पर पूरक है। पर्यावरण संरक्षण हेतु नीम, पीपल, खेजड़ी, तुलसी व अशोक के पौधे लगाने का अभियान चलाकर प्रयास किया जा सकता है। साथ ही विद्यालय स्तर पर बच्चों को यह कार्य घर, खेत, चौपाल, मैदानों में करने हेतु भी प्रेरित किया जा सकता है।

आओ हम सब मिलकर स्वच्छता को एक 'मिशन' मानकर, एकजुट होकर अंगीकृत करें एवं आने वाली पीढ़ियों के लिए सुन्दर, स्वच्छ, स्वस्थ, साक्षर, आधुनिक एवं सुरक्षित भारत की परिकल्पना को साकार करने में पूर्ण निष्ठा एवं कर्मशीलता से एकीकृत हो जाएँ।

व्याख्याता
रा.आ.उ.मा.वि. शाहजहाँपुर
नीमराना (अलवर)
मो. 9413068956

भाषा-शिक्षण

भाषा के साथ कुछ बातचीत

❒ अंजली कोठारी

अभी बच्चे बोर्ड परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। परीक्षा को लेकर उनके मन में क्या होगा, कैसे होगा जैसे प्रश्न उठ रहे हैं। वे थोड़े चिन्तित प्रतीत हो रहे हैं..... अच्छा लगता है कि बच्चे बोर्ड परीक्षा को लेकर गंभीर दिखाई दे रहे हैं। परंतु इसमें कोई चिंता की बात नहीं है, यह तो एक प्रक्रिया है जिससे वे कई बार गुजरे हैं और न जाने कितनी बार और गुजरेंगे। परन्तु हाँ, ... एक बात तो है कि हमें इसके लिए योजनाबद्ध काम करने की आवश्यकता है। क्योंकि किसी भी कार्य में सफल होने की प्रथम सीढ़ी उसके लिए एक अच्छी योजना बनाना है।

गौरतलब है कि सफलता 'हार्ड वर्क' से नहीं 'स्मार्ट वर्क' से प्राप्त होती है। सफलता की प्राप्ति इस बात पर निर्भर करती है कि आपकी योजना क्या है? लक्ष्य प्राप्ति के लिए आपके प्रयास एवं तैयारी कैसी है? सही दिशा में किए गए प्रयास आपको सफलता के प्रतिक्षण करीब ले जाते हैं सिर्फ कठिन श्रम करना ही सफलता की गारन्टी नहीं है बल्कि सोच-समझ कर रणनीति तैयार कर उसके अनुसार कार्य करना सफलता के लिए आवश्यक है। आइए, हम चर्चा करते हैं कि बोर्ड परीक्षा की तैयारी कैसे करें?

हम इस चर्चा को हिन्दी विषय को मद्देनजर रख कर करेंगे। हम सभी जानते हैं कि हिन्दी भाषा अधिगमित विद्यार्थियों की माध्यम भाषा है। राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी हमारी आम बोलचाल की भाषा भी है अत: बच्चे हिन्दी विषय को सरल मान कर उसकी तैयारी के प्रति थोड़ा..... बेफिक्र हो जाते हैं जबकि उन्हें ऐसा करना नहीं चाहिए। इसकी भी पूरे मनोयोग से तैयारी करनी चाहिए। जब हम भाषा के परिप्रेक्ष्य में बात करते हैं तो कुछ बातों पर हमारी समझ बननी अत्यन्त आवश्यक है।

भाषा मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है। मनुष्य जाति का हजारों सालों से संचित ज्ञान भाषा से ही सुरक्षित एवं भावी पीढ़ियों तक प्रेषित हो रहा है। इस मायने से भाषा का अध्ययन-अध्यापन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य है। हमारे लिए भाषा के अध्ययन का मतलब है अपनी विरासत से रूबरू होना। विश्लेषण के लिहाज से भाषा को सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना और संदर्भों के साथ व्याकरण के ज्ञान के कौशलों की प्राप्ति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। प्रतिष्ठित विद्वान डॉ. भोलानाथ तिवारी के मतानुसार-'भाषा मानव के मुखावयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसमें एक समाज विशेष के लोग परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।' कहना न होगा, भाषा एक अर्जित सम्पत्ति है। हिन्दी हमारी परस्पर सम्पर्क की भाषा भी है, हमने इस भाषा को प्रारंभ से ही सीखा है, अतः इसके साथ हमें अत्यन्त सहजता व लगाव का अनुभव होता है। हिन्दी भाषा के मौखिक रूप से तो हम जन्म के साथ ही जुड़ जाते हैं। जब विद्यालय जाना शुरु करते हैं तो इसके लिखित लिपि चिह्नों से लेकर अन्य रूपों से भी परिचित होते हैं। हमनें पहली कक्षा से नवमीं कक्षा तक के सफरनामे में भाषा की बारीकियों को न केवल सैद्धांतिक रूप से अपितु पाठ्यपुस्तकों के गहन अध्ययन एवं रचना खण्ड के अन्तर्गत पत्र, निबंध लेखन, अपठित अंश के विश्लेषण, काव्यांश की व्याख्या आदि के माध्यम से भाषा के कौशलों को अर्जित किया है।

जनसंचार माध्यम यथा समाचार पत्र, टेलीविजन, रेडियों एवं दैनिक जीवन के क्रिया-कलापों से हमारा भाषा विषयक ज्ञान निरंतर समृद्ध होता रहता है। यही ज्ञान माध्यमिक बोर्ड परीक्षा में हमारे लिए आधार का कार्य करता है। यही हमारे सृजनात्मक चिंतन एवं लेखन का आधार बनता हैं। पाठ्यपुस्तक के गंभीरतापूर्वक अध्ययन तथा लिखने के अभ्यास से ही हममें इतना आत्मविश्वास आ जाता है कि हम बिना किसी भय संकोच के पूछे गए प्रश्नों का जवाब लिख कर अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हैं। जो पढ़ा गया है उसे परीक्षा कक्ष में उत्तर-पुस्तिका में कैसे लिखा जाए यही कौशल बच्चों को प्राप्त करना है तभी अच्छे अंकों की प्राप्ति हो सकती है।

हिंदी भाषा के लिए निर्धारित पाठ्य-पुस्तकों के गंभीरतापूर्वक अध्ययन के साथ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं यथा लेखक परिचय, पाठ-सार, मुख्य संवेदना के लेखन, पाठांत में दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखने का निरंतर अभ्यास, समूह चर्चा से शंकाओं का निवारण, नए शब्दों के अर्थ का ज्ञान, पाठ्य प्रकरण का विवेचन विश्लेषण बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाता है वहीं निबंध, पत्र, अनुच्छेद लेखन, अपठित गद्यांश पढ़कर समझने तथा उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखने का अभ्यास लेखन कौशल को निखार देता है। सुपाठ्य-सुन्दर लिखावट, वर्तनीगत शुद्धता, शब्द सीमा का ज्ञान तथा भाषागत सहजता उत्तरों को प्रभावी बना देती है। यही समझ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षा में अच्छे अंक अर्जित करने में सहायक सिद्ध होती है।

कक्षा 10 की सत्र 2017-18 में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर द्वारा हिंदी विषय के लिए 100 अंक निर्धारित है। इसमें से 20 अंक सत्रांक के लिए एवं 80 अंक लिखित परीक्षा के लिए निर्धारित है। संत्राक आपके वर्ष भर विद्यालय में आयोजित परीक्षाओं, प्रोजेक्ट कार्य, उपस्थिति एवं व्यवहार के लिए निर्धारित है। ये परीक्षाएँ स्वयं के स्तर आकलन व कमजोर पक्षों को पहचानने में सहायता करती है। यह पहचान उन क्षेत्रों में तैयारी को प्रोत्साहित करती है एवं उन पक्षों को सबल बनाने की कार्ययोजना निर्माण में मदद करती है।

आइए! अब हम 10 वीं बोर्ड के हिन्दी प्रश्नपत्र पर बात करते हैं। साथ ही प्रश्न पत्र की रचना समझने का प्रयास करते हैं। हम किस तरह तैयारी करें कि अधिकाधिक अंक प्राप्त कर सकें? प्रश्न पत्र में पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर किस प्रकार लिखें कि पूरे अंक प्राप्त कर सकें? समय प्रबंधन कैसे करें?

निश्चित रूप से ये सभी प्रश्न आपके मनोमस्तिष्क में तैरते होंगे। इसमें भयाक्रान्त होने की आवश्यकता नहीं है। हम वर्षपर्यन्त जो अध्ययन करते हैं, वही प्रश्नपत्र में पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर होते हैं। आपका काम केवल शब्द सीमा को ध्यान में रखते हुए समयबद्धता के साथ व्यवस्थित उत्तर लिखना है। बोर्ड परीक्षा में हिन्दी विषय का एक प्रश्न-पत्र होगा जिसकी अंक योजना इस प्रकार है:-

अपठित बोध-	8 अंक
रचना-	12 अंक
व्यावहारिक व्याकरण-	12 अंक
पाठ्यपुस्तक क्षितिज-	48 अंक

इस प्रकार यह प्रश्न-पत्र चार खण्डों में विभाजित है।

प्रश्न पत्र के प्रथम खण्ड में अपठित गद्यांश तथा एक अपठित पद्यांश को हल करना है। प्रत्येक के लिए 4-4 अंक निर्धारित है। इनमें विषयवस्तु से संबंधित शीर्षक, बोध एवं भाषिक ज्ञान सम्बन्धी निर्धारित प्रश्न है। अपठित शब्द सुनकर घबराएँ नहीं, परेशान न हों, शान्तचित्त से ध्यानपूर्वक गद्यांश/पद्यांश को पढ़िए। दो-तीन बार पढ़ कर आप दिए गए प्रश्नों के उत्तर आसानी से लिख सकते हैं। दिए गए पद्यांश को 2-3 बार ध्यान से पढ़कर समझ बनाकर उत्तर लिखना हैं, ठीक उसी प्रकार जब आप अपनी अपरिचित पाठ्यपुस्तक को पढ़कर अभ्यास प्रश्नों के उत्तर लिखते हैं। इसकी तैयारी के लिए पाठ्यपुस्तक का पठन उक्त बिन्दुओं को ध्यान रखते हुए किया जाना श्रेष्ठ है।

प्रश्न पत्र का दूसरा खण्ड रचना संबंधी है। इस भाग में निबंध एवं पत्र लेखन करना होता है। इस कार्य के लिए 12 अंक निर्धारित किए गए हैं। निबंध लेखन के लिए 8 अंक एवं 4 अंक पत्र लेखन के लिए निर्धारित है। जैसे बिना बोले कोई भी बोलना नहीं सीख सकता वैसे ही लिखना सीखने के लिए लिखना आवश्यक है। हमें कई तरह के निबंध पढ़ने चाहिए फिर उन्हें अपनी भाषा में लिखना चाहिए, हमें स्वयं आश्चर्य होगा कि 5-7 बार लिखने पर ही आपकी लेखनी स्वत: ही प्रभावी होती चली जाएगी। 10वीं के प्रश्न-पत्र में आपको निबंध लेखन के लिए उपबिन्दु भी दिए जाते हैं, जिससे आपको निबंध लिखने में सहायता मिलती है।

प्रश्न पत्र में विविध विषयों पर निबंध लिखने को कहा जाता है। यथा पर्यावरण, शैक्षिक तकनीक, स्वच्छता, नारी विमर्श,कन्या भ्रूणहत्या जैसे सम-सामयिक विषयों में से कोई एक। निबंध लेखन करते हुए क्रमबद्धता, आंकड़े, विचार शृंखला, प्रस्तावना आदि बातों का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए आवश्यक समझे तो रंगीन पेन, स्लोगन, श्लोक का प्रयोग भी किया जा सकता है। निबंध लेखन की भाषा समयानुकूल हो इसे प्रभावी बनाने के लिए सुन्दर हस्तलेख, भाषा मुहावरेदार, शुद्ध लेखन तथा प्रवाहमयी होना श्रेष्ठ है।

अब हम पत्र लेखन की ओर बढ़ते हैं। पत्र लेखन का एक पूर्व निर्धारित प्रारूप होता है। पत्र इसी निर्धारित प्रारूप में लिखा जाता है। इसलिए प्रारूप की जानकारी आवश्यक है। आपके प्रश्न पत्र में कार्यालयी अथवा व्यावसायिक दोनों तरह के पत्र लिखने को दिए जा सकते हैं। इसलिए हमें दोनों प्रारूपों की जानकारी होना आवश्यक है। प्रारूप के अतिरिक्त पत्र प्राप्तकर्त्ता का अभिवादन, उम्र के अनुसार सम्बोधन आदि का ध्यान रखते हुए अपनी बात कहना। इसमें निबंध लेखन की तरह स्थान, सम्बोधन, अभिवादन के पश्चात् पत्र के विवरण में निबंधात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है।

इसके आगे की बात व्यावहारिक व्याकरण की, जो प्रश्न पत्र का तीसरा खंड है, इस हेतु 12 अंक निर्धारित है। व्याकरण में क्रिया विशेषण, वाक्य शुद्धि, कारक, काल, वाच्य, समास, मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि से संबंधित कुल 6 प्रश्न पूछे जाते हैं। क्रिया विशेषण-2 अंक, कारक, काल, वाच्य-3 अंक, समास-2 अंक, वाक्य शुद्धि-2 अंक, मुहावरे-2 अंक एवं लोकोक्ति हेतु-1 अंक निर्धारित है। व्याकरण के नाम से हमें घबराने की आवश्यकता नहीं है। इसकी तैयारी के लिए सबसे पहले हमें संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि के सामान्य एवं व्यावहारिक जानकारी करनी होगी। यदि आपको इनकी ठीक-ठीक जानकारी हो तो सभी प्रश्नों के उत्तर सरलता से दिए जा सकते हैं।

इसकी अगली कड़ी में खण्ड 4 हैं, जो क्षितिज पाठ्यपुस्तक से संबंधित है। इस हेतु कुल 48 अंक निर्धारित है। जिसमें गद्य एवं पद्य से विकल्प सहित व्याख्या है, जिसके लिए 6-6 अंक निर्धारित है। एक-गद्य एवं एक-पद्य से विकल्प सहित निबंधात्मक प्रश्न है, जिसके लिए 12 अंक निर्धारित है। इसी तरह 6 लघूत्तरात्मक प्रश्न हैं जिनके लिए 12 अंक निर्धारित हैं। 4-अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न है, जिसके लिए 4 अंक निर्धारित है। समस्त प्रश्न गद्य एवं पद्य दोनों से पूछे जाएँगे। इसके अतिरिक्त किन्हीं दो कवि एवं लेखकों का परिचय पूछा जाएगा, जिसके लिए 4 अंक निर्धारित है। अंत में आपके 4 अंक बचते हैं, जो सड़क सुरक्षा से संबंधित है, जिसकी तैयारी हेतु यातायात के नियमों से लेकर पैदल चलने तक के नियमों की जानकारी रखनी पड़ेगी। इस हेतु राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित 'सड़क सुरक्षा' पुस्तक का अध्ययन किया जा सकता है।

पद्यांश पर आधारित प्रश्न और अन्य अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नों को हल करने के लिए कविता के केन्द्रीय बोध और भाषिक सौंदर्य की समझ होनी चाहिए। इसमें कविता के सबल पक्ष की परख करनी जरूरी है।

इसी तरह गद्य भाग की तैयारी भी की जा सकती है। इसमें पूछे जाने वाले प्रश्न कुछ इस प्रकार के होते हैं।

-उसके स्थान पर आप होते तो क्या करते?

-आप फलां पात्र के पक्ष में हैं या नहीं?

यदि हाँ तो क्यों? और नहीं तो क्यों?

इस तरह के प्रश्नों के उत्तर देने हेतु पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता है। अत: इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर लिखने के अभ्यास हेतु अपने शिक्षक/शिक्षिका की बराबर मदद लेते रहना चाहिए। साथ ही कहानी, कविता आदि जो भी पाठ्येत्तर साहित्य उपलब्ध हो उसे भी पढ़कर अपनी समझ के कैनवास को विस्तृत करना चाहिए। यह समझ सृजनात्मक व मौलिक उत्तर लिखने में मदद करती है। इसके लिए पाठ से छोटे-छोटे अनुच्छेद में से प्रश्न बना कर उत्तर लिखने का भी अभ्यास करना चाहिए। ये सभी कार्य इस खण्ड में भी बेहतर अंक हासिल करने में हमारी मदद करेंगे।

इसके अतिरिक्त अन्य अर्थग्रहण एवं सराहना संबंधी प्रश्न पूछे जाते हैं। इनके माध्यम से मौलिकता, तार्किकता एवं विषय की समझ को परखा जाता है। अत: हमें इन बातों को ध्यान में रखते हुए अपने उत्तर देने चाहिए। उत्तर रटे-रटाए प्रतीत नहीं होने चाहिए, उनमें मौलिकता का समावेश होना चाहिए।

हमें उत्तर लिखते समय शब्द सीमा का पूरा पालन करना चाहिए। साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जो पूछा जाए उतना ही उत्तर दिया जाए। अनर्गल बातें उत्तर में न लिखें। उत्तर लिखने में मानक भाषा का प्रयोग करें। वर्तनीगत अशुद्धता से बचें एवं सहज व अलंकृत भाषा का प्रयोग करें। इस तरह हमने देखा कि भाषा के प्रश्न-पत्र की समग्रता के विविध आयाम हैं गद्य, पद्य, भाव-विचार, भाषा-शिल्प आदि। हम इन सभी रूपों की बेहतर समझ बनाकर भाषा की परीक्षा में वांछित सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

व्याख्याता, 1-जे 16 हिरणमगरी, सेक्टर-5,
मिलाप मेमोरियल, हॉस्पिटल के पास,
उदयपुर (राज.) 313002, **मो. 9828564764**

प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण

❐ विजय प्रकाश जैन

प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है; विशेषकर अल्पसाक्षर और असाक्षर परिवारों के ऐसे बच्चे जिनके घर की भाषा और स्कूल की भाषा असमान होती है तथा छपी हुई सामग्री का जिनके घरों में नितांत अभाव होता है। ऐसे बालकों को अर्थपूर्ण शिक्षण कराने से पूर्व आवश्यक है कि भाषा शिक्षण से जुड़े हुए शिक्षक भाषा, साक्षरता और प्रारंभिक शिक्षाओं में भाषा शिक्षण से जुड़े हुए मुद्दों पर अपनी समझ विकसित करें। इस हेतु सर्वप्रथम यह जानने की आवश्यकता होगी कि आखिर भाषा क्या है? भाषा विचार अभिव्यक्ति का साधन मात्र ही है या इससे कहीं ज्यादा है। यदि भाषा को व्यापक अर्थों से समझा जाए तो **मानवीय भाषा एक अनूठी संरचना है, क्योंकि यह थोड़े से प्रतीकों व ध्वनियों की मदद से असंख्य शब्द व वाक्य रचने की क्षमता प्रदान करती है। यह एक अत्यंत जटिल और विशिष्ट मानवीय कौशल है। भाषा बोलने, तर्क करने, निष्कर्ष निकालने, विश्लेषण करने, विचारों को व्यवस्थित करने और समस्याओं को हल करने का कार्य करती है।** भाषा सीखने का सबसे सशक्त माध्यम है, क्योंकि भाषा अर्थ निर्माण का महत्त्वपूर्ण जरिया है। यदि भाषा सीखते समय 'डिकोडिंग' के साथ भाषाई समझ की प्रक्रियाएँ भी विकसित होती हैं तो ही यह कहा जा सकता है कि यह भाषा सीखना है, अन्यथा नहीं। भाषा शिक्षण में सबसे ज्यादा कठिनाई उन बच्चों के साथ आती है जो अल्पसाक्षर और असाक्षर परिवारों के हैं और जिनके परिवेश में प्रिंट सामग्री का अभाव है और ऐसे बच्चों के साथ कक्षा कक्ष में अलग से कोई कार्य नहीं किया जाता अपितु भाषा शिक्षण की प्रचलित सामान्य पद्धतियों, चुप्पी की संस्कृति, सामूहिक दोहरान, बिना अर्थ सहित पढ़ना, 'डिकोडिंग' का अव्यवस्थित शिक्षण, सक्रिय भागीदारी की कमी आदि से ही शिक्षण कार्य करवाया जाता है और ऊपर से व्यवस्थागत दोष

जैसे विद्यालयों में कक्षा कक्षों की कमी, शिक्षकों की कमी, केवल पाठ्यपुस्तक आधारित शिक्षण, पिछड़ने वाले बालकों पर ध्यान नहीं देना जैसी कमियों की विविधता भी ऐसा मुद्दा है जिसे शिक्षक समझ नहीं पाता है कि ऐसी स्थिति को कैसे संभाले। लेकिन जब शिक्षक सिखाने को प्रतिबद्ध है तो सबसे पहले यह समझना होगा कि सीखना क्या है? क्या वर्ण मात्राओं को रटा देना, शब्द व वाक्य बना देना ही सीखना है या कुछ और है, मुझे लगता है कि **सीखना वह प्रक्रिया है जिसके जरिए हम नए अनुभव लेते हैं, अपने मस्तिष्क में अनुभवों पर सुनते व सोचते हैं और इस प्रकार नई समझ विकसित करते हैं। हम हर समय कुछ न कुछ अनुभव कर ही रहे होते हैं। हम हर समय सीखते रहते हैं।** जब बच्चे अनुभवों से सीखते हैं तो कक्षा-कक्ष का वातावरण इस तरह से खुशनुमा बना देना आवश्यक है जिसमें वे अपने पूर्वज्ञान व परिवेश की बहुत सारी बातें कर सकें। बच्चों को खुली व विस्तारित चर्चा के अवसर देने होंगे, खुले छोर वाले प्रश्नों से अंतःक्रिया करते हुए बच्चों को सोचने के अवसर देने होंगे एवं सतत् आकलन प्रक्रिया के द्वारा बच्चों के सीखने के अवरोधों व कमियों का पता लगाते हुए आवश्यकतानुसार सकारात्मक 'फीडबैक' देकर उन्हें सामान्य स्तर पर लाना होगा। साथ ही जरूरत होगी कि शिक्षक इसी अनुसार योजना बनाएँ। अतः सार रूप में देखें तो कक्षा कक्ष की योजना बनाते समय ध्यान देना होगा कि-

- गतिविधियों का चयन कुछ इस तरह से किया जाए जिससे बच्चों को आपस में सीखने के ज्यादा से ज्यादा अवसर मुहैया हो सकें।
- जेड.पी.डी. (शब्दशः इसका अर्थ है विकास का निकटवर्ती क्षेत्र, बच्चा स्वतंत्र रूप से क्या कर सकता है और निश्चित मदद के साथ वह क्या करने में सक्षम है इन दोनों के बीच का अंतर 'जोन ऑफ प्रोक्सीमल डवलपमेंट' होता है। बच्चों द्वारा सीखना इसी क्षेत्र में सम्पन्न होता है।) के आधार पर हमें यह समझना होगा कि बच्चे किस क्षेत्र में हैं एवं उन्हें किस तरह लगातार मदद दी जा सकती है जिससे वे अपने वर्तमान स्तर से आगे की ओर बढ़ें।
- कक्षा में बच्चों को विस्तारित वार्तालाप के अवसर देने के साथ-साथ कक्षा-कक्ष को जीवंत बनाने का प्रयास करना होगा।

वर्तमान में कक्षा कक्षों में चलने वाली 'डिकोडिंग' व समग्र भाषा शिक्षण पद्धति के बजाय ऐसी संतुलित शिक्षण पद्धति पर काम करना होगा जिसमें सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना चारों कौशलों पर अलग-अलग नहीं अपितु एक साथ प्रतिदिन काम हो तो ही शिक्षण अर्थपूर्ण और कौशल केन्द्रित होगा। इसके लिये संतुलित भाषा शिक्षण की चार खंडों की रूपरेखा को अपनाना होगा जिसके तहत प्रतिदिन प्रत्येक खंड मौखिक भाषा विकास, 'डिकोडिंग' (शब्द पहचान), पठन और लेखन की गतिविधियों पर काम करना होगा।

सारांशतः भाषा को समझने से लेकर प्रारंभिक कक्षाओं में संतुलित भाषा शिक्षण की रूपरेखा को समझकर कक्षा-कक्ष में भाषा शिक्षण करवाया जाए तो शिक्षण अर्थपूर्ण और कौशल केन्द्रित होगा।

प्रबोधक,
रा.उ.प्रा.वि.मेंदिया डिंडोर
(बाँसवाड़ा) राजस्थान

समय प्रबंधन

समउ फिरें रिपु होहिं पिरीते

❒ जगदीशचन्द्र मेहता

वर्तमान में हाथ की कलाई, मंदिर, मस्जिद, चर्च, विद्यालय, दुकान, रेलवे स्टेशन बस स्टेंड व मोबाइल में घड़ी देखी जाती है।

घड़ी कहती है–समय की कद्र करो। जो समय की कद्र करता है, समय उसकी कद्र करता है। समय उसे महान् बना देता है। समय की पाबन्दी ही शालीनता का प्रतीक है। जो समय को नष्ट करता है, समय उसे नष्ट कर देता है। कहा भी जाता है कि गया समय वापस नहीं आता है। अँग्रेजी की कहावत है Time and Tide wait for none, अर्थात् समय और लहर किसी का इंतजार नहीं करते हैं। परमात्मा से भी महान् समय है। भक्त अपनी निष्काम भक्ति, शरणागति के द्वारा परमात्मा को पा सकता है परन्तु बीता हुआ समय कोटि उपाय करने पर भी प्राप्त नहीं किया जा सकता है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने श्रीरामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड में लिखा है– 'समउ फिरें रिपु होहिं पिरीते' अर्थात समय फिर जाने पर मित्र भी शत्रु हो जाते हैं, आप अपनी दिनचर्या (प्रातःकाल से रात्रि शयन तक) का पालन कर समय पर कार्य करो। जीवन के सारे कार्य शान्तिपूर्ण तरीके से अनुशासित होकर कर सकते हैं।

जीवन सुखमय, तनावमुक्त और व्यवस्थित हो जाता है, क्योंकि समय सत्य का पथ–प्रदर्शक होता है।

आलसी लोग समय पर काम नहीं करते हैं जिनके कारण उन्हें जीवन भर पश्चाताप् करना पड़ता हैं, वे रोते रहते हैं, जीवन अभिशाप बन जाता है। ध्यान दें opportunity comes but once is human life समय का प्रत्येक क्षण सोने (Gold) के कण से भी मूल्यवान होता है। 'समय ही धन है।' (Time is money) कहावत चरितार्थ होती है। बालक/बालिकाओं को बचपन में सुसंस्कार समय पर मिल जाने पर वे महान् बन सकते हैं। जिससे उनकी किशोरावस्था, युवावस्था, बुढ़ापा आनन्द से व्यतीत होता है।

घड़ी कहती है–अंग्रेजी के पाँच अक्षर WATCH का आत्मदर्शन कर विद्यार्थी, बालक/बालिका, युवा/युवती, मनुष्य अपने जीवन दर्शन को इस प्रकार समझ सकते हैं–

W=watch your wish-इच्छाओं को देखो।

अपनी इच्छाओं, कामनाओं का आत्मदर्शन करो। क्या अच्छी है क्या बुरी है। उसी के अनुसार भावी जीवन का कल्याण हो सकता है।

A = watch your Action - कर्मों को देखो।

अपने सुकर्मों व कुकर्मों को आत्मदर्पण में देखकर निर्णय करो। जीवन का हित किसमें है।

T=Watch your Thought-विचारों को देखो।

अपने सकारात्मक या नकारात्मक विचारों को समझो, प्रेय और श्रेय मार्ग में से किसे अपनाना है।

C=Watch your Character-चरित्र को देखो।

हम 'श्रीराम' के चरित्र का पालन करते हैं या 'रावण' के चरित्र के अनुसार चलते हैं। कौनसा चरित्र अपनाने से कल्याण है।

H=Watch your Health-स्वास्थ्य को देखो।

मैं नीरोगी हूँ या रोगी। नीरोगी का आहार–विहार, आचार–विचार का प्रभाव शरीर पर देखा जाता है। रोगी का भोजन सात्विक के स्थान पर तामसिक एवं राजसी होने पर विपरीत प्रभाव शरीर पर पड़ता है।

विद्यार्थी, बालक/बालिका, युवा–युवती, जवान–वृद्ध व्यक्तियों को अपनी इच्छाओं को नियंत्रित रखकर समयानुसार कार्य करना चाहिए। इच्छाओं को सीमित रखने वाला ही सुखी व सम्पन्न होता है। अपने सुकर्मों व दैवीसम्मत गुणों के कारण ही दीर्घायु पाकर परमात्मा की प्राप्ति कर सकता है। मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य परमात्मा की प्राप्ति करना ही होता है। इसके लिए दैवीसम्पदा युक्त विचार रखकर कार्य समय पर ही करना पड़ता है। जब सुविचार होंगे उसका चरित्र भी महान् होगा। कहावत है– 'धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया और चरित्र गया तो सब कुछ चला गया।' धर्मशास्त्रों में लिखा है– 'चरित्र रघुनाथस्य शत कोटि प्रविस्तरम्' जहाँ चरित्र अच्छा होगा, 'चरितं मधुरं' तो स्वास्थ्य भी अच्छा होगा। चरित्र का प्रभाव स्वास्थ्य, शरीर, मन, विचार, कर्म पर पड़ता है। 'शरीरं माध्यम खलु धर्म साधनम्' स्वस्थ शरीर से ही जीवन के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। जीवन का कल्याण समय के साथ है। कहावत है– स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है।

घड़ी कहती है– समय बदलने पर लोगों की आँखे बदल जाती है। जो आज अपने होते है, कल बदल जाते है। समय पर कार्य करने वाला ही विजय को प्राप्त होता है।

घड़ी को पास में रखना, जीवन के कार्यों को समय पर करना है। वॉच WATCH (घड़ी) के दर्शन को अपनाने से जीवन की सार्थकता दिखाई देती है। समय कहता है–साँस रुक जाए कब? पर घड़ी रुकती नहीं। समय पर कार्य करो।

प्रधानाध्यापक (से.नि.)
पैलेस रोड गेट, भोजपालियाँ
बाँसवाड़ा (राजस्थान)–327001
मो. 09414101983

शिक्षा के साथ आवश्यक है संस्कार

❒ राजेन्द्र कुमार पंचाल

मानव जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण समय विद्यार्थी-जीवन काल है। इस काल में बालक को अधिक से अधिक ज्ञान कैसे प्राप्त हो? साथ ही वह अपने समय, बुद्धि और ऊर्जा का पूर्ण उपयोग कैसे कर सकें, यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण और चिंतनीय विषय है। इस हेतु शिक्षा जगत से जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति, संस्था और शिक्षाविद् अपने प्रयास करते रहे हैं और आगे भी करना ही है, क्योंकि गीता में भी कहा गया है-

''न ही ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते''

अर्थात् 'ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।' विद्यार्थी समय निकल जाने के बाद पुनः कभी प्राप्त नहीं होता है। वैसे शास्त्रों में मानव जीवन को ही दुर्लभ कहा गया है। मानव ही एक मात्र प्राणी है जिसे विचारशक्ति प्राप्त है इसलिए मानव इस धरती पर सबसे अधिक शक्तिशाली है।

मानव की महिमा रामधारीसिंह दिनकर ने इस प्रकार व्यक्त की है-

है कौन! विघ्न ऐसा जग में,
टिक सके आदमी के मग में।
खम ठोक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पाँव उखड़।
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।

इस सम्पूर्ण जीवन काल में विद्यार्थीजीवन को नींव माना जाता है। इस समय विविध कला, भाषा, तर्क, सामान्य ज्ञान और विज्ञान आदि का ज्ञान अच्छे विषयाध्यापकों द्वारा उसे प्रदान किया जाता है। बालक की रुचि जिस विषय के प्रति अधिक होती है वह उसमें पारंगत हो कर आगे बढ़ता है, निस्संदेह हर बालक अपने आप में प्रतिभाशाली होता है। कबीरदासजी ने बहुत सुंदर कहा है-

सुण्या सकना कोई नहीं, सबके भीतर लाल।
मूर्ख ग्रंथि खोले नहीं, करनी भयो कंगाल।।

कोई भी बालक या व्यक्ति बेकार या मूर्ख नहीं है, बस कर्म और परिश्रम के द्वारा अपने भाग्य को बनाना पड़ता है।

उचित मार्गदर्शन और प्रेरणा समय समय पर मिलती रहे तो कोई विद्यार्थी रुकेगा नहीं।

सबसे बड़ी बात यह है कि आज का विद्यार्थी प्रतियोगिता के इस युग में संघर्ष करना और मेहनत करना तो सीख रहा है परन्तु संयम, धैर्य, क्षमा, सत्य, कर्त्तव्य और नैतिक शिक्षा जैसे संस्कार भूलता जा रहा है।

इन महत्त्वपूर्ण पहलुओं को जीवन में आत्मसात नहीं करने के कारण आज कई बालक विद्यार्थीजीवन के पश्चात् कर्महीन होकर भटकते रहते हैं अथवा गलत रास्ते का उपयोग करना प्रारम्भ करते हैं। समाज में आ रही नई नई विडम्बनाएँ यथा माता-पिता की सेवा नहीं करना हो या असामाजिक कार्यों में लिप्तता, सब अनैतिक कारणों के मूल में खोती हुई इंसानियत अथवा मानवता है। शायद यही कारण है कि आज स्वामी विवेकानंद, गाँधीजी, शास्त्रीजी, भगतसिंह, अब्दुल कलाम और सरदार पटेल जैसे महापुरुषों की अधिक आवश्यकता है।

आज का बालक कल का नागरिक है। हमें बालक के विकास के साथ साथ समाज और राष्ट्र निर्माण भी करना है। इस युग में देश प्रेमी और समाज सेवी पैदा करना एक स्वप्न सा लगने लगा है। पर इसके साथ साथ और अधिक आवश्यक है बालक को आत्मनिर्भर बनाना। आज देश में बेरोजगारों की भीड़ बढ़ती जा रही है। ऐसे समय में बदलाव लाने हेतु अभिभावक, समाज, सरकार जैसे अन्य कारणों के साथ शिक्षा जगत और गुरुजनों का मार्गदर्शन बहुत बड़ा सहयोगी रहेगा। बालक बचपन से संस्कारयुक्त बने, उनमें धैर्य हो, उमंग पैदा हो, कर्त्तव्य को समझ सकें, माता-पिता, समाज और राष्ट्र के प्रति प्रीत जगे।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने कहा था-

मैने हँसना सीखा है, मैं नहीं जानती रोना।
बरसा करता पल पल पर, मेरे जीवन में सोना।।
उत्साह, उमंग निरंतर, रहते मेरे जीवन में,
उल्लास विजय का हँसता, मेरे मतवाले मन में।।

इसलिए आवश्यक है कि हम बालकों को किताबी शिक्षा के साथ साथ विभिन्न तरीकों से उसे पूर्ण मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक विकास के गुर सिखावें, प्रार्थना स्थल हो, कक्षा-कक्ष हो, जन्म-जयंती उत्सव के कार्यक्रम हो अथवा विशेष सेमीनार आयोजन करके। विद्यार्थियों को भविष्य में आने वाली बाधाओं से अवगत कराना, सत्य और असत्य का मार्ग क्या है? उसकी पहचान कराना, नशे से होने वाली हानियाँ, समाज की वर्तमान दशा और उसके भविष्य में उनका योगदान, देश प्रेमियों की जीवनियाँ, जीवन की महत्ता, कर्त्तव्य बोध जैसे हर मुद्दों को, यथार्थ जीवन जीने का मार्गदर्शन का पाठ विद्यालय और शिक्षकों के द्वारा पढ़ाना अति आवश्यक हो गया है। साथ ही विद्यालयों के वातावरण को इस योग्य बनाना होगा कि बालक में मानवीयता के गुण जगे। बालक अधिकतर बड़ों का अनुसरण करते हैं इसलिए शिक्षक बन्धुओं को स्वयं में बदलाव लाना पड़ेगा। चाहे वो रहन सहन, खान पान और सोचने की शक्ति ही क्यों न हो बदलनी होगी। सादा जीवन उच्च विचार आवश्यक है।

बालकों में भगवान है, ऐसा मानकर समर्पित भाव से कार्य करना होगा। बालक कोरे कागज की भाँति है अतः क्यों न हम उनमें सत्य, प्रेम, धैर्य, विश्वास, दया, उत्साह, जीवन जीने की कला, ईमानदारी, जवाबदारी, निरंतरता और निश्चिंतता के गुणों के साथ संस्कारों का सुंदर चित्रण विद्या के मन्दिरों में ही करें।

हम शिक्षक और विद्यालय चाहे तो हर बालक का भविष्य सुंदर, सफल और सशक्त बना कर माँ भारती की सच्ची सेवा योग्य बना सकते हैं। इसलिए अपनी मानसिकता बदलनी होगी थोड़ा त्याग करना होगा। मेरे साथियों सोच का बड़ा महत्त्व है।

तीन लोग ईंटों की चुनाई कर रहे थे। एक आदमी ने उनसे पूछा, आप क्या कर रहे हैं? इनमें से एक ने कहा- ''बस रोजी रोटी खड़ी कर रहे हैं।''

दूसरे ने कहा- 'भाई ईंटें चुन रहे हैं।'

तीसरे ने कहा-''एक सुंदर स्मारक बना रहे हैं।'' वे तीनों एक ही काम को कर रहे हैं लेकिन उसके बारे में उनके तीन अलग अलग नजरिए थे। काम पर नजरिए का असर पड़ता है। आप भी कहेंगे-जरूर पड़ेगा। उत्तमता और विशिष्टता तब मिलती है जब काम करने वाला सबसे उत्तम प्रदर्शन करके गर्व महसूस करता है।

हर काम करने का अपना उद्देश्य होता है। चाहे काम छोटा हो या बड़ा, मन से अच्छी सोच के साथ और पूजा की तरह, परमात्मा की बन्दगी समझ कर, पूरी तन्मयता से करें तो व्यक्ति स्वयं भी आनन्द का अनुभव करेगा और कार्य की सफलता की भी गारण्टी होगी।

किसी काम को अच्छी तरह से करने का अहसास खुद में एक पुरस्कार या सम्मान है। खराब तरीके से कई काम करने से अच्छा है कि अच्छे ढंग से कुछ ही काम किए जाए। 'योग कर्मसु कौशलम्।।'

अच्छी तरह से कार्य करना इसे ही योग कहते हैं। छोटी छोटी चीजें ही पूर्णता लाती है और पूर्णता कोई छोटी चीज नहीं है।

व्याख्याता
मु.पो. सामरिया, तह. सागवाड़ा
जिला-डूंगरपुर (राज.)-314012
मो.- 9929906155

आवश्यक सूचना

● 'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ। ● कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है। ● कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBI बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें।

-संपादक

चारित्रिक विकास में शिक्षा की भूमिका

❐ रामजीलाल घोड़ेला

शिक्षा के क्षेत्र में चारित्रिक विकास की महत्ता को कभी भी कम नहीं आंका जा सकता। शिक्षा तभी सार्थक है जब वह सुयोग्य एवं उत्तरदायित्वों को समझने वाले नागरिकों का निर्माण कर सके और यह कार्य चरित्र निर्माण के बिना सम्पन्न नहीं हो सकता। इसलिए चाहे शिक्षा की कोई भी प्रणाली क्यों न हो अथवा कोई स्तर या अवस्था क्यों न हो, चरित्र निर्माण प्रत्येक स्तर और अवस्था में शिक्षा का एक मुख्य और आवश्यक उद्देश्य माना जाता है। शिक्षा किस प्रकार बच्चों के चरित्र का ठीक ठीक विकास करने में सहायक सिद्ध होती है और अध्यापक तथा विद्यालय बच्चों को अपने चरित्र निर्माण में किस प्रकार अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं। इसके लिए कुछ आवश्यक सुझाव एवं तकनीक काफ़ी उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

मूलप्रवृत्तियों और संवेगों का उचित प्रशिक्षण

मूलप्रवृत्तियाँ चरित्र की आधारशिलाएँ हैं। इसलिए चरित्र निर्माण की दिशा में सबसे पहला कार्य मूल प्रवृत्तियों का शोधन एवं उन्नयन करना हैं। व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक विभिन्न संवेगों एवं मूलप्रवृत्तियाँ से ही पोषित होते हैं। इस तरह मूलप्रवृत्तियाँ और संवेग दोनों मिलकर मानव चरित्र को अच्छा और बुरा मोड़ प्रदान करने का सामर्थ्य रखते हैं। इसलिए सुन्दर और स्वस्थ चरित्र के लिए बच्चे की मूल प्रवृत्तियों और उसके संवेगों के उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए युद्ध प्रियता नामक प्रवृत्तियों और क्रोध के संवेगों को शोधन और प्रशिक्षण के फलस्वरूप देश भक्ति तथा पीड़ितों एवं शोषितों पर दया दिखलाने जैसे उपयोगी कार्यों की ओर मोड़ा जा सकता है और इस तरह चरित्र निर्माण का कार्य भली-भाँति सम्पन्न किया जा सकता है।

इच्छा या संकल्प शक्ति का प्रशिक्षण

निर्णय दृढ़ता और उचित समय पर उचित निर्णय लेने की क्षमता-दोनों सशक्त चरित्र के बहुमूल्य तत्व है और इन दोनों तत्वों को इच्छा, संकल्प शक्ति द्वारा ही जीवन मिलता है। अतः

बालकों की इच्छाओं तथा संकल्प शक्ति को दृढ़ बनाने के लिए हर संभव उपाय किए जाने चाहिए। दृढ़ संकल्प के अभाव में चारित्रिक कमजोरियाँ व्यक्तित्व पर हावी हो जाती है और वह उन्हें छोड़ देने का झूठा वायदा करता रहता है। जबकि इच्छा या संकल्प शक्ति की दृढ़ता उसे चारित्रिक बुराइयों को छोड़ कर अच्छाइयों को ग्रहण करने में पूरी-पूरी सहायता कर सकती है।

अच्छी आदतों का विकास

चरित्र को आदतों का पुत्र कहा गया है। अच्छी और बुरी आदतें व्यक्ति को अच्छे और बुरे रास्ते पर ले जाकर उसके चरित्र को सामाजिक रूप से वांछित और अवांछित बनाने का कार्य करती है। अतः बालकों में शुरु से ही अच्छी-अच्छी आदतें डालने का प्रयास किया जाना चाहिए। बुरी आदतें चरित्र के लिए घुन का कार्य करती है। बच्चों को यथासम्भव इनसे छुटकारा दिलाने का प्रयत्न करना चाहिए।

उचित आदर्शों का विकास

व्यक्ति की अपनी मान्यताएँ, मूल्य और आदर्श उसके चरित्र को प्रतिबिम्बित करते हैं। किसी एक परिस्थिति में वह जैसा व्यवहार करता है, उसके पीछे उसके जीवन के लक्ष्य और आदर्शों की छाप होती है। जितने ऊँचे और अच्छे जीवन और मूल्य आदर्श होंगे, उसका चरित्र उतना ही सशक्त और उत्तम होगा।

इसलिए बालकों को उचित आदर्श एवं जीवन मूल्य अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

सुझाव और चरित्र निर्माण

चारित्रिक विकास में सुझावों का भी बहुत महत्त्व है। बच्चे भोले-भाले होते हैं। उन पर सुझावों का गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः सुझावों को चरित्र निर्माण के कार्य में भली-भाँति प्रयोग में लाया जा सकता है। लेकिन जहाँ तक सम्भव हो बच्चों के व्यवहार में अनुकूल परिवर्तन लाने के लिए सकारात्मक सुझाव की ही सहायता ली जानी चाहिए। इसके लिए बच्चों को सुन्दर एवं स्वस्थ कहानियाँ सुनाई जा सकती है। महान व्यक्तियों के संस्मरण और जीवन वृत्तान्तों से उन्हें परिचित करवाया जा सकता है। अध्यापक और माता-पिता स्वयं अपने रहन-सहन और व्यवहार द्वारा जीते जागते उदाहरण बच्चों को बता सकते हैं। चरित्र निर्माण की दिशा में कदम रखने के पश्चात बच्चों को बराबर यह बताते रहना कि वे यथेष्ट रूप से उन्नति कर रहे हैं, उनका चारित्रिक स्तर ऊँचा उठ रहा हैं, वे उत्तम से अति उत्तम बनते जा रहे हैं। इस प्रकार के आत्म सुझावों द्वारा वे चारित्रिक विकास की सीढ़ियाँ सफलतापूर्वक चढ़ सकते हैं।

अनुकरण और चारित्रिक विकास

बच्चा स्वभाव से ही अनुकरण अवश्य करता है। उसके लिए माता-पिता, अन्य बड़े लोग तथा अध्यापक आदर्श होते हैं। वह जाने अनजाने उनका अनुसरण करता रहता है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि अध्यापक, माता-पिता और समाज के अन्य उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्तियों द्वारा अपने व्यवहार और चरित्र को लेकर अच्छे उदाहरण बच्चों के सामने रखे जाने चाहिए। उन्हें इस बात का ध्यान रहना चाहिए कि किसी भी तरह की कोई अवांछित बात बच्चे अनुकरण द्वारा न सीखें। अपने घर और विद्यालय में उन्हें स्वस्थ और प्रेरक वातावरण मिलना चाहिए। उन्हें बुरी संगत और बुरी बातों के दुष्प्रभाव से बचाया जाना चाहिए।

नैतिक और धार्मिक शिक्षा प्रदान करना

चरित्र निर्माण में नैतिक और धार्मिक शिक्षा की उपयोगिता महत्त्वपूर्ण है। अतः विद्यालय पाठ्यक्रम में इसे आवश्यक स्थान प्रदान किया जाना चाहिए। अब प्रश्न यह उठता है कि भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष राज्य में धार्मिक शिक्षा का स्वरूप क्या हो? इस प्रकार की शिक्षा बहुत ही संकुचित और रूढ़िवादी धार्मिकता पर आधारित नहीं होनी चाहिए। धार्मिक शिक्षा द्वारा 'सभी धर्म अच्छे हैं तथा हम भी एक ही ईश्वर की सन्तान हैं' आदि भावनाएँ बच्चों के अन्दर विकसित की जानी चाहिए।

रोचक कहानियों और कथानकों के माध्यम से बच्चों को नैतिक शिक्षा सरलतापूर्वक दी जा सकती है। महान व्यक्तियों की जीवन गाथा और संस्मरणों को भी उपयोग में लाया जा सकता है। इस दिशा में हितोपदेश और पंचतन्त्र की कहानियाँ बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। इतिहास, साहित्य और सामाजिक विषयों की पुस्तकों में नैतिक विचार उत्पन्न करने वाले पाठ सम्मिलित किए जा सकते हैं। इनके अतिरिक्त प्रार्थना सभा में महान पुरुषों के प्रवचन एवं नैतिकता सम्बन्धी व्याख्यानों से बच्चों में नैतिक शिक्षा सम्बन्धी भाव उत्पन्न करके उनके चरित्र को ऊँचा उठाया जा सकता है।

बच्चे का उचित मानसिक विकास

चारित्रिक विकास और मानसिक विकास में भी गहरा सम्बन्ध है। चरित्र में निहित विभिन्न तत्वों के संयोजन में वृद्धि एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक व्यक्ति किसी एक विशेष परिस्थिति में किस प्रकार व्यवहार करेगा और किस प्रकार जीवन की वास्तविकताओं का सामना करेगा, यह बहुत कुछ उसकी मानसिक योग्यताओं और क्षमताओं पर निर्भर करता है। अतः बालकों को सोचने-विचारने की शक्ति, कल्पना शक्ति, स्मरण शक्ति, एकाग्रता आदि विभिन्न मानसिक शक्तियों के विकास के लिए समुचित कदम उठाए जाने चाहिए।

पुरस्कार और दण्ड का समुचित प्रयोग

चरित्र निर्माण में पुरस्कार और दण्ड दोनों का ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज के मनोवैज्ञानिक और प्रजातांत्रिक युग में बच्चों के चरित्र निर्माण के लिए उन्हें दण्ड देना अच्छा नहीं समझा जाता। यह कहा जाता है कि डांट-फटकार, निन्दा, ताड़ना, जुर्माना, मारपीट आदि दण्डों के द्वारा बच्चों के मन में तरह-तरह की कुंठाएँ घर कर लेती है। इस तरह लाभ की बजाय हानि की ज्यादा सम्भावना रहती है। इस प्रकार के उपायों को नकारात्मक माना जाता है, जिनके द्वारा बच्चों में डर बिठाकर उन्हें बुरा व्यवहार करने से रोका जा सकता है। परन्तु इनके द्वारा उनमें अच्छा व्यवहार कर सकने की क्षमता, योग्यता का विकास नहीं किया जा सकता। जहाँ तक हो सके दण्ड का प्रयोग किसी भी स्थिति में उचित नहीं है। इसके अलावा अन्य सकारात्मक उपायों जैसे पुरस्कार, प्रशंसा, प्रोत्साहन का प्रयोग बालक के चारित्रिक विकास में किया जाना चाहिए।

चरित्र निर्माण में वातावरण सम्बन्धी शक्तियाँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। घर, विद्यालय और सामाजिक परिवेश में जो कुछ भी घटित होता है, उसका प्रभाव बच्चे के चरित्र पर अवश्य पड़ता है। सबसे पहले चरित्र सम्बन्धी प्रथम पाठ बच्चा अपने पारिवारिक परिवेश में अपने माता-पिता तथा परिवार के सदस्यों से सीखता है। घर के अतिरिक्त पास-पड़ौस, समुदाय तथा सामाजिक परिवेश आदि भी बच्चों के चरित्र को प्रभावित करते हैं। जब वह विद्यालय जाता है, तब विद्यालय का वातावरण, साथ पढ़ने वाले विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के व्यवहार एवं चरित्र की छाप उस पर अवश्य पड़ती है। अतः यह आवश्यक है कि परिवार, विद्यालय तथा सामाजिक परिवेश की अन्य इकाइयों द्वारा बालकों को स्वस्थ एवं प्रेरणादायक सामाजिक वातावरण प्रदान किया जाए ताकि बच्चे अपने चारित्रिक विकास के लिए आवश्यक सुन्दर एवं स्वस्थ आदतों और गुणों को ग्रहण कर सकें।

वस्तुतः चारित्रिक विकास एक सर्वांगीण विकास होने के नाते बहुमुखी प्रयास चाहता है। अतः चरित्र के विकास को प्रभावित करने वाले सभी कारकों या तत्त्वों के ऊपर पूरा-पूरा ध्यान रखते हुए एक संतुलित योजना तैयार की जानी चाहिए तथा उसे पूर्ण ईमानदारी और तत्परता के साथ क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

C/o राज क्लॉथ स्टोर,
लूणकरनसर-334603
जिला- बीकानेर
मो. 9414273575

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्त्वदर्शिभिः।।

महापुरुषों की जीवनियाँ

❐ महेश कुमार चतुर्वेदी

जो अपने कुशल नेतृत्व में किसी सीमा विशेष में बंध कर नहीं अपितु सम्पूर्ण देश और उससे ऊपर उठकर पूरे वैश्विक परिदृश्य में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बात करते हैं। ऐसे बिरले व्यक्ति ही तो महापुरुष कहलाते हैं।

महापुरुष हम सभी के लिए जीवन का स्पन्दन है। जीवन जीने की कला है। जीने का आयाम है। महापुरुष उस कालखण्ड के जननायक होते हैं जो अपने सुकृत्यों से जहाँ वे पैदा हुए हैं, वहाँ की दशा और दिशा दोनों बदल डालते हैं। वे अपने पद चिह्नों की छाप से वर्तमान को तो संवारते है ही, वरन् पीढ़ी-दर-पीढ़ी के लिए सुरक्षित भविष्य की राह भी आसान कर देते हैं। इसीलिए कहा गया है कि वह धरा धन्य हो जाती है, जहाँ महापुरुष पैदा होते हैं। जिसने भी महापुरुष के जीवन चरित्र को अपने जीवन में उतार लिया समझो उसने बहुत कुछ पा लिया।

कुछ लोग जिन्हें हम महापुरुष कहते हैं। वे जन्म से ही कुछ ऐसी दैविक शक्तियों अथवा जन्मजात विशेष प्रवृत्तियों को लेकर पैदा होते हैं। जो असाधारण प्रतिभा के धनी होते हैं। सफलता और कामयाबी उनके चरण चूमती है। संघर्षों और मुसीबतों में वे हार नहीं मानते अपितु संकटों में नई राह चुन मंजिल की ओर अग्रसर होते हैं और उसे पाकर ही दम लेते हैं।

महापुरुष दिव्य शक्ति से ओत-प्रोत हो, आम आदमी से हटकर अपने विचारों, कार्यों और आदर्शों से ऐसे क्रांतिकारी कदम उठाते हैं। अन्याय, अत्याचार और दमनकारी नीतियों का विरोध कर सर्वहारा समाज को साथ लेकर स्वस्थ समाज के निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाते हैं जिसमें सबका भला निहित हो।

भारत देश ऋषि मुनियों का देश है। संतों का देश है। महापुरुषों का देश है। जिनकी गौरव गाथा आज भी अमिट है। जन-जन में व्याप्त है। उनके उच्च आदर्शों से वे आज भी समाज में पूजनीय है। आत्मगौरव विस्मृत मध्यकालीन समाज जहाँ अशिक्षा, गरीबी, सामाजिक कुरीतियाँ, अंधविश्वास और आडम्बरों से ग्रस्त था। ऐसे समय में महापुरुषों ने अपने उच्च विचारों

एवं कार्यों से समाज को जागृत किया। ऐसे समाज सुधारकों में स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, दयानंद सरस्वती, राजा राम मोहन राय, संत विनोबा भावे, बाबा आम्टे, सावित्री बाई फूले, एनी बिसेंट, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, स्वामी केशवानंद, विनायक दामोदर सावरकर, श्रीराम शर्मा आचार्य आदि मुख्य है, जो आज भी जनमानस में लोकप्रिय है।

समय के साथ काल के अंतराल में संतों ने अपने प्रवचनों, गीतों और भजनों से भक्ति का अजस्र स्रोत बहाकर ईश्वर से तारतम्य स्थापित कर आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। ऐसे संत महापुरुषों में सूर, तुलसी, नानक, मीरां, रसखान, कबीर, रहीम, रसखान, रैदास, रामानुजन, वेदव्यास, स्वामी हरिदास, हितहरिवंश, ध्रुवदास, चैतन्यमहाप्रभु, दादूदयाल, मलूकदास, सुन्दरदास आदि का नाम आज भी आदर के साथ लिया जाता है।

हमारा देश संतों, ऋषि-मुनियों और महापुरुषों का जनक रहा है। जिसके कारण सम्पूर्ण विश्व में भारत विश्वगुरु के नाम से जाना जाता है। भारत देश ने ही सर्वप्रथम विश्व को शून्य एवं दशमलव का ज्ञान कराया। सभ्यता का जनक भारत देश को ही माना जाता है। संस्कारों का डंका पूरे विश्व में बजा। यहाँ की विपुल संस्कृति का सारा संसार लोहा मानता है। जीवन मूल्यों एवं मानव मूल्यों को पालित-पोषित करने वाला हमारा देश सत्य-अहिंसा, दया-धर्म, प्रेम-प्यार, सहयोग, त्याग-तपस्या, करुणा-ममता आदि चारित्रिक गुणों से मानवता का पुजारी बन 'अहिंसा परमो धर्मः' के साथ 'जीओ और जीने दो' की परिकल्पना के साथ शास्त्रों, वेदों और पुराणों की इस भावना को मूर्त्त रूप देने में अग्रणी रहा है। यह आज भी हमारे देश का आदर्श है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।।

महापुरुषों के सम्पूर्ण जीवनवृत्त को समेकित लिपिबद्ध कर सहेजकर रखा जाता है। उनके सम्पूर्ण कार्यों एवं जीवन दर्शन को 'महापुरुषों की जीवनियाँ' के नाम से पुकारा जाता है। महापुरुषों की जीवनियाँ वह अनमोल थाती है। वह आने वाली पीढ़ी को सभ्य-सुसंस्कृत सुनागरिक बनाने में महत्ती भूमिका निभाती है।

धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, कला, संगीत आदि क्षेत्रों में हमारे महापुरुषों की जीवनियाँ इतिहास में अमर है। ऐसे महापुरुषों में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, सरदार वल्लभ भाई पटेल, लाला लाजपतराय, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, महाराणा प्रताप, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. राधाकृष्णन, महात्मा गाँधी, रवीन्द्र नाथ टैगोर, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, आशा भोसले, लता मंगेशकर आदि हमारे गौरव एवं प्रेरणा के स्रोत है। इनमें से कई महापुरुषों को 'भारत रत्न' की उपाधि से नवाजा गया है।

इन महापुरुषों के जीवन चरित्र को पढ़कर हमारा मस्तक गर्व से ऊँचा हो जाता है। शहरों, गलियों, उच्च संस्थाओं आदि पर उनका नामकरण कर एवं सार्वजनिक स्थानों पर उनकी मूर्ति स्थापित कर हम उन्हें याद कर उनके प्रति आदर और सम्मान तो प्रकट करते ही हैं। इसके साथ ही वे हम सब के लिए प्रेरणा का स्रोत बनें। जिससे अभिप्रेरित हो सुनागरिक बन हम स्वस्थ

समाज का निर्माण करें, मानवता की सेवा करें और राष्ट्र की सेवा में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दें।

भावी पीढ़ी को संस्कारित करने, उन्हें शिक्षित करने, जन जन तक शिक्षा की अलख जगाने एवं महापुरुषों के जीवन से सबको रूबरू कराने का पुनीत कार्य 'शिविरा-पत्रिका' ने अपने स्थापना वर्ष से लेकर आज तक जीवन्त बनाए रखा है; जो प्रशंसनीय, स्तुत्य एवं वंदनीय है।

बालक राष्ट्र की धरोहर है। राष्ट्र की निधी है, पूंजी है, देश के कर्णधार है। देश की अस्मिता और सुरक्षा का भार आनेवाली पीढ़ी के कंधों पर ही निर्भर है। इसके लिए आवश्यक है बालक पढ़ लिखकर योग्य बनें। महापुरुषों के उच्च विचार और उनके आदर्शों के प्रतिमान बालकों में स्थापित कर उन्हें सुनागरिक बनाया जाए। इसका गुरुतर भार विद्यालयों के गुरुजनों पर आता है।

विद्यालय में समय समय पर पाठ्यपुस्तकों में उद्धृत अंशों के अलावा उत्सव, पर्व, बाल सभा में महापुरुषों से सम्बन्धित संस्मरण, प्रेरक-प्रसंग, उनके आदर्श, चारित्रिक गुणों आदि को सिर्फ बताकर ही नहीं अपितु व्यवहारगत परिवर्तन करा उनमें अच्छी आदतों का विकास कराया जा सकता है। विद्यालय में शैक्षिक-सहशैक्षिक गतिविधियों के साथ-साथ बालकों द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्य-यथा साहस, वीरता ईमानदारी, समाजसेवा, गरीब असहायों की मदद आदि करने पर उनकी प्रशंसा की जाए। उनकी पीठ थपथपायी जाए। ताकि बालक प्रोत्साहित हो आगे बढ़ सकें। नए कीर्तिमान कायम कर सकें एवं अन्य छात्र भी उनका अनुसरण कर सकें।

महापुरुषों के जीवन से हम निम्नलिखित चारित्रिक गुणों का विकास कर सकते हैं।

- महापुरुषों के उच्च विचारों एवं आदर्शों के अनुगामी बनें।
- देश का प्रत्येक नागरिक चरित्रवान बनें।
- जीवन में अच्छी आदतों को अपनाएँ।
- व्यसन एवं बुरी आदतों से बचें। आपराधिक कृत्य न करें।
- सामाजिक अंधविश्वास एवं कुरीतियों को दूर करने का बीड़ा उठाएँ।
- नारी जाति का सम्मान करें। कन्या भ्रूण हत्या को रोकें।
- कठिन परिस्थितियों में धैर्य से काम लें।
- सत्य, अहिंसा और ईमानदारी से जीवन निर्वहन करें।
- जातिगत वैमनस्यता से ऊपर उठ आपसी भाईचारे का संदेश दें।
- कुशल नेतृत्व से जन समुदाय में एकता का संचार करें।
- मानव धर्म अपनाते हुए मानव सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाएँ।
- सदैव लोक कल्याणकारी कार्य करें।
- देश को सर्वोपरि मानें। अपने आप में देश भक्ति का जज्बा पैदा करें तथा इसके लिए दूसरों को भी प्रेरित करें।
- देश की संस्कृति एवं धरोहर को अक्षुण्ण बनाए रखने का भरपूर प्रयास करें।
- महापुरुषों में से किसी को अपना आदर्श मानकर जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर उस ओर अग्रसर हों।

विविधताओं में एकता का पाठ पढ़ाने वाला हमारा देश भाषा, जाति-धर्म, रीति-रिवाज, परम्परा, रहन-सहन एवं विभिन्न भौगोलिक विभिन्नताओं के बावजूद भी यहाँ आपसी भाईचारा, प्रेम और सहिष्णुता के साथ सम्पूर्ण देशवासी विभिन्न अवसरों, तीज-त्यौहारों पर एक दूसरे के गले मिल मुँह मीठा कर बधाइयाँ देते हैं। शुभकामनाएँ देते हैं। इन्हीं सब अच्छाइयों से गौरवान्वित होकर हम गर्व से कहते हैं- 'मेरा भारत-महान्।'

प्रधानाध्यापक (से. नि.)
देवेन्द्र टॉकीज के पीछे
छोटीसादड़ी-312604, प्रतापगढ़(राज.)
मो. 9460607990

नवाचार हेतु अनूठी पहल

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय के तत्वावधान में परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु निर्मित अभिनव कार्य योजना 'प्रयास-2018' के तहत शैक्षिक/अध्ययन सामग्री निर्माणार्थ दिनांक 29 एवं 30 जनवरी 2018 को उदयपुर में आयोजित दो दिवसीय राज्यस्तरीय गणित कार्यशाला के 'ब्रेन स्टॉर्मिंग सेशन' में विभाग के पूर्व निदेशक श्री बी.एल. स्वर्णकार, से.नि. आई.ए.एस., ने सम्भागी शिक्षकों को सम्बोधित कर उत्साहवर्धन किया। श्रीमान स्वर्णकार ने अपने ट्वीटर अकाउन्ट पर उक्त कार्यशाला में प्रतिभागी शिक्षकों के साथ हुए संवाद को साझा करते हुए शिक्षा विभाग में इस प्रकार के अनूठे नवाचारों के प्रयोग को शैक्षिक क्षेत्र में एक नवीन युग के सूत्रपात की संज्ञा देते हुए कहा ''आज मुझे प्रयास-2018 के अन्तर्गत गणित विषय पर आधारित 'ब्रेन स्टॉर्मिंग सेशन' में निपुण शिक्षकों के साथ संवाद करने का अवसर मिला, जो दो दिन के लिए राजकीय गुरु गोविन्दसिंह उ.मा.वि., उदयपुर में एकत्रित हुए थे।''

इस प्रकार सेवानिवृत्ति के पश्चात भी छात्रहित में कार्यशाला में पधारकर उत्साहवर्द्धन करने हेतु पूर्व निदेशक महोदय का विभाग की ओर से आभार। **-संपादक**

पर्यावरण-संरक्षण

प्रकृति से करें - मित्रवत व्यवहार

❒ डॉ. महावीर प्रसाद गुप्ता

प्रकृति मनुष्य की अधिकांश आवश्यकताओं को पूरा करती है। अतः हमारे देश में धरती को माँ के समतुल्य माना गया है। मानव ही नहीं वरन् समस्त जीव-चराचर के लिए पृथ्वी के उपकार असीमित है। इसी प्रकार मनुष्य जाति के लिए घी, दूध, गौमूत्र जैसे लाभकारी पदार्थों को देने वाली गाय को भी भारतीय संस्कृति में 'माँ' का दर्जा दिया गया है। बड़, पीपल, केल, तुलसी एवं अन्य औषधीय गुणों वाले पौधों को देवतुल्य मानते हुए विभिन्न अवसरों पर उनकी पूजा की जाती है। भारतीय दर्शन में प्रकृति को सदैव पूजनीय मानते हुए उसके विभिन्न अवयवों को संरक्षित करने की व्यवस्था बनाई गई है।

'खाओ-पीओ और मौज करो' की पाश्चात्य संस्कृति के विपरीत भारतीय संस्कृति का नारा है,-'जीओ और जीने दो' तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्।' प्राचीन भारतीय दर्शन हमें प्राणी मात्र का आदर करने की प्रेरणा देता है। परन्तु समय के साथ-साथ पाश्चात्य संस्कृति के संक्रमण से लोगों की विचारधारा में बदलाव आया और विडम्बना ही कहिए कि आज हमने 'सादा जीवन, उच्च विचार' की त्यागवादी मनोवृत्ति को छोड़कर भोगवादी संस्कृति को अपना लिया है। हम अपनी सुख-सुविधाओं के लिए प्रकृति का दोहन करने में जरा भी नहीं हिचकिचाते। प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से पर्यावरण असंतुलित एवं विकृत हो गया है।

पर्यावरण की गुणवत्ता गिरने के साथ-साथ ग्रीन हाउस प्रभाव, ओजोन परत का छिद्रीकरण तथा ग्लोबल वार्मिंग जैसी पर्यावरणीय समस्याएँ पैदा हो गई हैं। फलस्वरूप प्राणियों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। अतः आज मनुष्य जाति सहित प्राणी जगत को बचाने के लिए पर्यावरण के प्रति 'मित्रभाव' अपनाने की आवश्यकता है।

अब आप कहेंगे-'पर्यावरण मित्रभाव क्या है? तथा हम उसे कैसे अपना सकते हैं?'

पर्यावरण मित्रभाव का तात्पर्य है- पर्यावरण को लाभ पहुँचाना या ऐसा कोई कार्य नहीं करना जिससे पर्यावरण की क्षति हो। सामान्यतया व्यक्ति सोचता है कि मेरे अकेले के पर्यावरण मैत्रीपूर्ण कार्य करने से देश की इतनी विशाल व्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ेगा? परन्तु याद रखें। प्रत्येक व्यक्ति की प्रत्येक छोटी-बड़ी क्रियाएँ ही समाज व राष्ट्र की शैली को निर्धारित करती हैं। उससे ही मानव समाज में बहुत बड़ा परिवर्तन संभव है। आइए, जानते हैं कि हमारे कौनसे क्रियाकलाप पर्यावरण मित्रभाव के अन्तर्गत आते हैं-

- प्लास्टिक की थैलियों पर पूर्ण प्रतिबंध की आवश्यकता है। उनके स्थान पर कागज अथवा कपड़े की थैली का उपयोग करें।
- घरों एवं खेतों में कीटनाशकों का नियंत्रित उपयोग करें।
- मेडिकल वेस्ट व घरों के उत्सर्जित पदार्थों का उचित निस्तारण करें।
- धूम्ररहित चूल्हा तथा सौर-ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहित करें।
- कम दूरी वाले स्थानों पर पैदल चलें अथवा साइकिल का उपयोग करें।
- प्राकृतिक जल स्रोतों को गन्दा न करें तथा यथासंभव जल के दुरुपयोग को रोकना भी इस दिशा में सार्थक प्रयास है।
- जंगलों का संरक्षण करें। वन्य जीवों तथा पशु-पक्षियों के प्रति दयापूर्ण व्यवहार करें।
- विद्युत शवदाह गृहों का उपयोग भी पर्यावरण सकारात्मक कार्य है।
- विभिन्न अवसरों पर वृक्षारोपण करें तथा पूर्व में लगाए पौधों का संरक्षण एवं पोषण करें। अन्य लोगों को भी वृक्षारोपण हेतु प्रोत्साहित करें।
- फोम के स्थान पर रूई के गद्दे, तकिए, रजाई आदि काम में लें।
- आवश्यकता न होने पर बिजली, पंखे, कूलर, टीवी. आदि बन्द करें।
- सभी संसाधनों के उपयोग में मितव्ययता बरतना अच्छी आदत है। इससे संसाधनों की बचत के साथ-साथ पर्यावरण दूषित होने से बचता है।
- मांसाहार से बचें- शाकाहार अपनाएँ। शाकाहारी भोजन पद्धति पर्यावरण की संपोषक है। मांसाहारी भोजन से संक्रामक रोगों की संभावना बढ़ जाती है। शाकाहारी भोजन मांसाहार की अपेक्षा अधिक स्वास्थ्यवर्द्धक है।
- सार्वजनिक स्थानों पर पर्यावरण को दूषित करने वाला कार्य देखें तो सम्बन्धित अधिकारियों के ध्यान में लाएँ। समाज के हर वर्ग में पर्यावरण के प्रति संचेतना विकसित करें।

वैसे तो प्रकृति अत्यन्त विशाल है तथा उसमें अपरिमित संसाधन है, परन्तु जिस द्रुतगति से उनका विदोहन हो रहा है उससे आने वाले वर्षों में शीघ्र ही उनके समाप्त हो जाने की संभावना है। अतः देश के जागरूक नागरिक होने के नाते हमारा दायित्व बनता है कि प्रकृति से करें- मित्रवत व्यवहार।

32-शक्ति नगर,
कोटा-9 (राज.)
मो: 9799967932

रपट

स्काउट गाइड विशेष

मुस्कान एवं संस्कृति का मनमोहक संगम

❒ जसवन्त सिंह राजपुरोहित

भारत स्काउट व गाइड, राष्ट्रीय मुख्यालय के तत्वावधान में रीजनल लेवल कब/बुलबुल उत्सव एवं राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, मण्डल मुख्यालय, बीकानेर के द्वारा प्रथम मण्डल स्तरीय कब/बुलबुल उत्सव का आयोजन दिनांक 02 से 06 फरवरी 2018 तक मण्डल प्रशिक्षण केन्द्र, रिड़मलसर (बीकानेर) पर आयोजित किया गया।

उत्सव में पश्चिमी रीजनल क्षेत्र से गोवा, महाराष्ट्र, गुजरात, छत्तीसगढ़, नॉर्थन वेस्टर्न रेल्वे एवं राजस्थान के स्टाफ सहित 90 कब/बुलबुल ने भाग लिया। वहीं प्रथम शान्ति भण्डारी मण्डल स्तरीय कब/बुलबुल उत्सव में बीकानेर/चूरू/हनुमानगढ़/झुन्झुनूं एवं श्रीगंगानगर के स्टाफ सहित 156 कब/बुलबुल ने भाग लिया। रीजनल लेवल कब/बुलबुल के उत्सव लीडर श्री महेन्द्र शर्मा, आरओसी. पश्चिमी क्षेत्र एवं मण्डल स्तरीय कब/बुलबुल उत्सव लीडर श्री घनश्याम व्यास थे।

02 फरवरी को सायं 04.00 बजे उत्सव का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। समारोह पूज्य संवित् सोमगिरि महाराज के सान्निध्य एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री नथमल डिडेल के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। अध्यक्षता स्काउट/गाइड की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रो. विमला मेघवाल ने की। इस अवसर पर युधिष्ठिर सिंह भाटी भाजपा नेता व अभिनेता एवं बीकानेर व्यापार मण्डल के उपाध्यक्ष नरपतसिंह सेठिया विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री नथमल डिडेल ने कब/बुलबुल को संबोधित करते हुए कहा कि स्काउट/गाइड के माध्यम से बच्चों में अनुशासन के साथ-साथ आत्मविश्वास का प्रभावी विकास किया जा सकता है। सभी बालक/बालिकाओं को अपने जीवन में एक बार स्काउट/गाइड संगठन से जुड़ना ही चाहिए।

संवित् सोमगिरि जी महाराज ने कहा कि

अद्वैत वैश्विक उन्नयन के अभियान में शामिल होने वाले पुण्य के भागीदार है। इस आयु वर्ग के बालक/बालिकाओं में प्रतिस्पर्धा रहित स्वच्छ वातावरण की गतिविधियों का संचालन किया जाना ही उत्सव की सार्थकता होगी। तेज सूर्य प्रकाश से भी प्रेरणा की बात बताते हुए कहा कि सूर्य का ये तेज उसका हमारे प्रति प्रेम भाव है। उत्सव का परिचय देते हुए श्री महेन्द्र शर्मा ने बताया कि स्काउट/गाइड की ये कब/बुलबुल इकाई 05 से 10 वर्ष की आयु वर्ग में बालक/बालिकाओं के लिए है। मध्यप्रदेश के जंगलों से मोगली पर सम्पादित रूडयार्ड किपलिंग की पुस्तक जंगल बुक पर आधारित लार्ड बेडेन पॉवेल द्वारा 1916 में छोटे बच्चों के लिए गतिविधियों का निर्धारण किया गया था। जिसमें बालक प्रकृति के समीप रहते हुए विभिन्न आन्तरिक एवं बाह्य गुणों का संवर्धन कर सके।

इससे पूर्व मण्डल चीफ कमिश्नर श्री विजय शंकर आचार्य ने सभी का स्वागत उद्बोधन किया। स्थानीय गोपेश्वर विद्यापीठ, शान्ति विद्या निकेतन एवं छत्तीसगढ़, गोवा व महाराष्ट्र के कब/बुलबुल द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से समारोह को उत्साहमय बनाया गया।

दैनिक दिनचर्या के तहत प्रात: 06 बजे उठना, 07.30 बजे व्यायाम, 08 बजे नाश्ता, 09 बजे से 12.30 बजे ध्वजारोहण, गतिविधियाँ, प्रतियोगिताएँ आदि, 12.30 बजे भोजन, पुन: गतिविधियाँ, 04.30 बजे चाय नाश्ता, स्टाफ मीटिंग, आउटडोर एक्टिविटी रात्रि 08.30 बजे पर कलरव/लालफूल आदि का समावेश किया गया था।

प्रतिस्पर्धा रहित गतिविधियों के तहत टोटम पोल, विशाल गर्जना/बड़ी सलामी, बुलबुल ट्री, लोक नृत्य, लोकगीत, कविता पाठ, मॉडल मेकिंग, पेपर कटिंग, अभिनय, मोगली की कहानी, तारा की कहानी आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें सभी के द्वारा बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया गया।

दिनांक 04 फरवरी को साहसिक एवं फन गतिविधियाँ यथा टायर टनल, टायर बॉल, चमच दौड़, मेंढ़क कूद, भैंसाकूद, रस्सीकूद आदि के माध्यम से कब/बुलबुल ने खूब मनोरंजन किया एवं शिविर में कब/बुलबुल के आयु वर्ग की रुचियों एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए जहाँ गतिविधियों का ध्यान रखा गया वहीं खाने के संबंध में उनकी रुचि का समावेश किया गया। गोलगप्पे, चाउमीन, पॉपकोर्न, खीर, आईसक्रीम, मीठी रूई, पेस्टी, पेटीज, बिस्किट, खीर, रसगुल्ले, पावभाजी, कुरकुरे, चिप्स, क्रीमरोल आदि व्यंजनों को तैयार किया गया।

ऊँट की सवारी का लुत्फ भी शिविर में कब/बुलबुल ने उठाया विशेषकर बाहरी राज्यों से आए कब/बुलबुल ने। एयर जंपिग झूलों के माध्यम से उत्सव की सम्पूर्ण अवधि में बच्चों ने मनोरंजन किया।

रात्रि कैम्प फायर, जिसको लालफूल व कलरव कहा जाता है, में सभी संभागियों ने बढ़-चढ़कर सहभागिता की और सुन्दर एवं मनमोहन प्रस्तुतियाँ दी।

05 फरवरी को हुए समापन समारोह में मुख्य अतिथि जिला कलक्टर श्री अनिल गुप्ता थे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अनिल कुमार दुबे मण्डल रेल प्रबन्धक, श्री गोपाराम माली- राज्य संगठन आयुक्त (स्काउट), श्री मोहनलाल स्वामी संयुक्त निदेशक

माध्यमिक शिक्षा, श्री राजेश चूरा, मण्डल प्रधान उपस्थित रहें। समापन समारोह में अतिथियों के स्वागत हेतु परियों के रूप में बुलबुल ने स्वागत किया। तत्पश्चात् बड़ी सलामी, विशाल गर्जना के माध्यम से स्वागत किया गया। आगे की कड़ी में मोगली के वेश में कब व उसके साथी जानवरों की वेशभूषा में अतिथियों के आगे आगे चल रहे थे। नेपथ्य में बज रहा जंगल जंगल पता चला है.....गाना माहौल को जंगल मय बना रहा था।

शान्ति भण्डारी के चित्र पर पुष्पाजंली के पश्चात् मण्डल प्रधान श्री राजेश चूरा द्वारा स्वागत उद्बोधन किया गया। महेन्द्र शर्मा आरओसी. द्वारा शिविर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। श्री गोपाराम माली ने कब/बुलबुल उत्सव के आयोजन हेतु सभी कार्यकर्त्ताओं को बधाइयाँ दी और राज्य मुख्यालय की ओर से भी सभी का स्वागत किया तथा बताया कि राज्य में कब/बुलबुल गतिविधियों के विकास में और अधिक प्रयास किया जाएगा।

मण्डल रेल प्रबन्धक श्री अनिल कुमार दुबे ने बताया कि 'मैं कब और बुलबुल की इन गतिविधियों को देखकर अभिभूत हूँ। वास्तव में बालकों के इस आयु वर्ग में साक्षात् ईश्वर निवास करते हैं।'

जिला कलक्टर श्री अनिल कुमार गुप्ता ने कहा कि 'स्काउट/गाइड की गतिविधियाँ समाज को आगे बढ़ाने वाली होती है तथा ये जानकर अच्छा लगा कि बालकों की इस आयु वर्ग से ही उनमें संस्कार डालने का कार्य स्काउट/गाइड गतिविधियों में होता है।'

प्रो. विमला मेघवाल ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि बालक/बालिकाओं का सम्पूर्ण विकास ही स्काउटिंग का मुख्य ध्येय है। और इस हेतु कब/बुलबुल के माध्यम से उन्हें शुरू से ही अच्छे कार्यों में प्रेरित करना मुख्य लक्ष्य है। कब/बुलबुल उत्सव का आयोजन इस परम्परा में अनुकरणीय कार्य है।

इस अवसर पर पूरे उत्सव को मूर्त्त रूप देने के लिए बीकानेर मण्डल के सहायक राज्य संगठन आयुक्त श्री घनश्याम व्यास को स्मृति चिह्न देकर अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। उद्घाटन एवं समापन समारोह कार्यक्रम का संचालन जसवन्तसिंह राजपुरोहित सी.ओ. स्काउट बीकानेर ने किया।

मण्डल चीफ कमिश्नर श्री विजय शंकर आचार्य द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया तथा इस अवसर पर विभिन्न प्रकार के सहयोग हेतु श्री राजेश चूरा मण्डल प्रधान, मिलन ट्रैवल्स बीकानेर, व्यापार मण्डल बीकानेर, श्री रामलाल नाई, मण्डल उपप्रधान-जिला हनुमानगढ़, अनमोल स्काउट ड्रैसेज संगरिया, रन्जू तिवारी, श्री प्रेमसिंह राजपुरोहित, श्री गुलाम हैदर, श्री अविनाश नारंग श्रीकरणपुर, जगन कुमार श्रीगंगानगर, नीलम खुराणा श्रीगंगानगर, श्री विनोद पाण्डे श्रीगंगानगर, श्री बलविन्द्रसिंह श्रीगंगानगर, श्री पवन कुमार, श्री योगेश पुरोहित जिला मुख्यालय झुन्झुनूं, स्थानीय संघ बीकानेर, डॉ. विनोद चौधरी आदि को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मण्डल सचिव श्री देवानन्द पुरोहित, सहायक राज्य संगठन आयुक्त (गाइड) सन्तोष निर्वाण, पूर्व मण्डल चीफ कमिश्नर एल. एन. खत्री, उपप्रधान श्री केसरीचन्द सुथार, श्री रामलाल नाई, श्री पी.के. मित्तल, धनवन्ती विश्नोई, श्री छगनलाल धामू, श्री भवानीशंकर जोशी, श्री घनश्याम स्वामी, श्री गिरीराज खैरीवाल आदि उपस्थित थे।

रीजनल लेवल कब बुलबुल उत्सव का सहसंचालन संतोष निर्वाण, श्री रामावतार सबलानिया, श्री ललित मिश्रा मध्यप्रदेश, सरस्वती गिरीया व सुलक्षणा छत्तीसगढ़ द्वारा किया गया। साथ ही मण्डल स्तरीय उत्सव में श्री भारतभूषण सी.ओ. स्काउट हनुमानगढ़, श्री रामजस लिखाला सी.ओ. स्काउट चूरू, श्री जसवन्तसिह राजपुरोहित सी.ओ. स्काउट बीकानेर, श्री महेश कालावत सी.ओ. स्काउट झुंझुनूं, श्री पवन कुमार, श्री भागीरथ तंवर, श्री बृजमोहन पुरोहित, श्री रामेश्वर मारू, श्री सुगनाराम चौधरी, श्री तुषार कामरा, श्री विकास गुर्जर, संतोष शेखावत, खैरूनिशा आदि ने सहसंचालन में सहयोग दिया। उत्सव के सफल संचालन में रोवर रेन्जर के सहयोग की भी भूमिका थी। बीकानेर मण्डल के 29 रोवर रेन्जर ने महत्त्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान की।

सी.ओ. स्काउट बीकानेर (राज.)
मो. 8003097152

मीणा ने अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में मैडल जीते

प्रथम इण्डो-बांग्लादेश मास्टर अन्तर राष्ट्रीय मीट दिनांक 14 फरवरी से 16 फरवरी 2018 तक जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम नई दिल्ली में सम्पन्न हुई।

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर में कार्यरत श्री हरीराम मीणा अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी द्वारा अपने आयु वर्ग (55+वर्षीय) में क्रमशः 200 मी. दौड़ में रजत व 4×100, 4×400 मी. रिले में राजस्थान टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए कांस्य पदक प्राप्त कर शिक्षा विभाग का नाम रोशन किया है। उक्त प्रतियोगिता से पूर्व भी श्री मीणा कई राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में भाग ले चुके हैं।

इस उपलब्धि के फलस्वरूप निदेशक मा.शि.राज. बीकानेर श्री नथमल डिडेल द्वारा भी श्री मीणा को बधाई दी गई। शिक्षा निदेशालय परिवार उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

-संपादक

पुस्तक समीक्षा

चीकणा दिन

लेखक : मदन गोपाल लढ़ा **प्रकाशक** : विकास प्रकाशन, बीकानेर **संस्करण** : 2017
पृष्ठ संख्या : 96 **मूल्य** : ₹ 150

चीकणा दिन डॉ. मदन गोपाल लढ़ा का दूसरा राजस्थानी कविता संग्रह है। हिन्दी और राजस्थानी में साधिकार लिखने वाले डॉ. लढ़ा के इस संग्रह में ग्रीस करणियां रा गीत, गळीः पाँच चितराम, स्क्रेप मजूरः पाँच चितराम, चीकणा दिन, रामलीला रा छव चितराम, नाहरः दस चितराम, सागोः सात चितराम, सूरतगढ़ः पाँच चितराम, चाळीस रै चौखटै में प्रेम, खुणा-खचुणा और गद्य कवितावां खण्ड में बँटी 79 कविताएँ संग्रहीत हैं। इन अलग-अलग खण्डों में जाते हुए पाठक अलग-अलग तरह की कविताओं की खुशबुओं को महसूस कर सकता है। यानी विषय वस्तु की दृष्टि से कविताओं में पर्याप्त विभिन्नता देखी जा सकती है।

इस संग्रह को पढ़कर यह कहना गलत नहीं होगा कि कविता चारों ओर बिखरी हुई है, बस पारखी नज़रों की जरूरत है। कविता संग्रह की कविता को पढ़ते हुए पाठक महसूस कर सकता है जैसे ये उसकी ही कविता है, उसके आस-पास की कविता है। डॉ. लढ़ा कविताओं में कभी अपने आस-पास को देखते हैं, तो कभी अपनी स्मृतियों को टटोल कर अपने बीते समय को याद करते हुए, अपने अनुभवों, अपने अवलोकनों को संवेदनात्मक ढंग से रखकर कविता कहते नज़र आते हैं।

कहने को तो कहा जा सकता है कि इन कविताओं का मूल स्वर प्रेम है। लेकिन ये प्रेम सामान्य दैहिक प्रेम से इतर कवि के मन में उपजी संवेदनाओं से जनित प्रेम है जो कि कारुणिक स्वर बिखेरता है। इन कविताओं में लेखक स्वयं के अनुभवों को विस्तृत करता हुआ, जमाने के परिवर्तनों से उत्पन्न अबखाइयाँ रखता है। यहाँ प्रेम अपने विस्तृत स्वरूप को प्रकट करता है जो स्व से उत्पन्न हो समाज तक पहुँच जाता है।

कविताओं को पढ़ते हुए महसूस किया जा सकता है कि डॉ. लढ़ा कविता के लिए किसी विषय चयन करने से पूर्व उस विषय से संबंधित सूक्ष्म अवलोकन करते हैं। इसलिए इस संग्रह की कविताओं में एक सरल सच्चापन नज़र आता है। 'ग्रीस करणियां रा गीत' के अन्तर्गत संग्रहीत कविताओं से गुजरते हुए एक साधारण पाठक ग्रीस करने वाले लोगों के जीवन की तस्वीर को आँखों के सामने चित्र सा चलता हुआ महसूस कर सकता है। इसकी बानगी 'रोटी री सौरभ' कविता में देखी जा सकती है-

साव काळै/तेल सूं गळा-गच/म्हारै
फाटयोड़ै गाभा में/म्हारा टाबर/
ओळख लेवै/रोटी री सौरभ।

कविता जब चित्र बनकर सामने आने लगे तो समझा जाना चाहिए पाठक का उसके साथ तादात्म्य स्थापित हो गया है। ऐसे में पाठक कवि के अनुभव भावों के साथ गहराई से जुड़ता हुआ उस दर्द को अनुभव करने लगता है। इस मायने में ये कविताएँ सफल नज़र आती है।

अपने दर्द को रखना और दूसरों के दर्द को अनुभूत करना दो अलग-अलग बातें हैं। कोई भी लेखक/कवि जब दूसरों के दर्द को गहराई से अनुभूत कर शब्द चित्र बनाता है तो दरअसल वह अपनी संवेदनाओं को संचरित कर रहा होता हैं। इन कविताओं में मानव मन से जुड़ी गहन संवेदनाओं को अनुभूत कर कवि अपनी कविता में दर्द की गहरी रेखा उकेरते हैं, जो सहृदयी पाठक के भीतर तक टीस उत्पन कर सकती है। 'स्क्रेप मजूर : पाँच चितराम' उपखण्ड में कही गई कविताएँ महाजन फील्ड फायरिंग रेंज के कारण विस्थापित हुए उन लोगों के दर्द को रखती है जो फायरिंग रेंज में स्क्रेप चुनने वाले मजदूर बन कर रह गए।

बीं सागण भौम (पृ. 22) की ये पंक्तियाँ-**जकी जमीं माथै/बै चुगे धातु रा टुकड़ा/कदी हुवता बठै-बांरा खेत।**

इन कविताओं के माध्यम से वे केवल विस्थापन का दर्द ही नहीं रखते वरन् किसान से मजदूर बने लोगों की कठिनतम जीवन परिस्थितियों को संवेदनशीलता से 'अरथाऊँ कींकर' कविता में कुछ इस तरह से रखते हैं

भूख सागै/उजड़्योड़ा गाँव-घरां रो मोह/
खींच ल्यावै नित/स्क्रैप चुगण रै मिस/
बां मजूरां नै/चाँदमारी इलाकै में।
पण नीं पेट भरीजै/नीं जीव धापै।
हे विधना!/कींकर अरथाऊँ/
इण जूण री/करुण-कथा/गळगळा सबदां?

मामूली सी लगने वाली बातों पर कविता लिखना और उसे निभाना आसान काम नहीं है। इन विषयों के भीतर की जटिलता को अनुभव करना और फिर उन पर रचाव, अत्यन्त कठिन कार्य है। डॉ. लढ़ा अपनी काव्य चेतना से इसे सरल सा बना देते हैं। उपर्युक्त दोनों शीर्षकों में रखी गई कविताओं में यह बात स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

आलोच्य संग्रह की कविताओं में मनुष्य जीवन की अबखाइयों से सीधे मुठभेड़ के साथ कवि ने निर्जीव चीज़ों का मानवीकरण कर उनके माध्यम से भी इन अबखाइयों को रखता है। 'गळीः पाँच चितराम, सूरतगढ़ : पाँच चितराम और नहर : दस चितराम' उपखण्ड की कविताओं में इसे देखा जा सकता है। 'खरो सांच' (पृ.सं. 44) कविता में कवि इसे कुछ यूं व्यक्त करता है।

जे कोई सबदकोस छापै/आज पछै/
तो 'लुगाई' रै पर्याय रूप में/राखजौ नहर नैं।
एक जैड़ी होवै/दोनां री जूण-गाथा/
लुगाई री आंख्यां में पाणी।
अर नहर सारू पाणी ई जिनगाणी/
उमर सुदी/झेलणो/खाटणो/अर जद-कद/
सूकणै रो खतरो।/नदी री जायी/
नहर रो नांव/स्त्रीलिंग हुवणो/संजोग कोनी/
खरो सांच है।

'गळी : पाँच चितराम, सूरतगढ़ : पाँच चितराम और नहर : दस चितराम' उपखण्डों की कविताएँ स्मृतियों के झरोखे से आती हैं। इन कविताओं में नॉस्टेलेजिक हो उन जगहों को याद किया जाता है, जहाँ कभी समय गुजारा था। लेकिन यहाँ इन कविताओं में एक अलग तरह का प्रेम और अपनापा महसूसा जा सकता है। इन कविताओं को पढ़ते हुए केदारनाथ सिंह जी की कविता बनारस याद आ जाती है। इन्हें पढ़ते हुए पाठक अपने बीते समय के स्थानों में पहुँच सकता है।

यहाँ कवि केवल आधुनिक जीवन में आम आदमी की पीड़ा और संत्रास को ही अपनी कविताओं में नहीं रखता किन्तु वह चीकणा दिन शीर्षक की कविताओं के माध्यम से तमाम अंधकार के बावजूद भी आशा के दीये को जलाए रखने की हूंस को प्रकट करता है। 'उणियारै सांचर जावै मुळक' (पृ.सं. 31) कविता में ये आशावाद यूँ प्रकट होता है–

इण अबखै बगत/
देवदूत दांई दीसै डाकियो/
मानदेय रै चैक रै मिस/
उणियारै सांचर जावै मुळक।

'रामलीला रा छव चितराम' खण्ड की कविताओं में कवि रामलीला पर कविता नहीं करता है। वरन् रामलीला के माध्यम से समसामयिक मानवीय चिंताओं को बखूबी से रखता हुआ 'कीं तो उतरयो', 'रोळ–गिदोळ' कैकयी की 'दो इंछावा' से 'दरसाव' करता हुआ 'अंतस रो रावण' को मारने को समझता हुआ 'म्हारो देसूंटो' कविता में **पाणी पेट सारू/म्हारो देसूंटो/हुवैला कद पूरो?** प्रश्न रख देता है।

'सागोः सात चितराम' संग्रह के इस खण्ड में भूमंडलीकरण के प्रभाव के कारण आदमी में उत्पन्न हुए अकेलेपन को संवेदनशील ढंग से रखा गया है। जीवन की आपाधापी में तमाम सुविधाओं के बावजूद व्यक्ति के जेहन में घर किए हुए अकेलेपन को पाठक स्वयं को कविता कहने वाले की जगह महसूस कर सकता है। इन कविताओं में काव्यजन्य सांकेतिकता अलग रंग को रखते हुए एक दर्शन रख देती है कि जीवन के अकेलेपन से मुक्ति, उसे एकांत में बदल कर प्राप्त की जा सकती है।

डॉ. लढ़ा के इस संग्रह के 'चाळीस के चौखटै में प्रेम' खण्ड की कविताएँ अलग प्रकार की कविताएँ हैं। प्रेम से मुक्ति के इस समय में चाळीसे की खिड़की से प्रेम को देखना, सुखद अनुभव दिलाता है। इस चौखटै से प्रेम को देखते हुए भी लढ़ा द्वारा आम भारतीय मध्यमवर्गीय पारिवारिक जीवन में खटते हुए प्रेम को देख लेना एक सुकून दिलाता है। पारिवारिक जीवन में उपजे प्रेम को व्यापक अर्थ देते हुए देह नहीं आत्मिक सुन्दरता से प्रेम को परिभाषित करते हुए 'प्रीत री आडी' (पृ.सं. 64) कविता में कुछ यूँ व्यक्त है–

फुटरापै सारू आरसी में नीं/
अंतस में झाकणो पड़ै/
प्रीत री आडी नैं अरथावण सारू/
कम सूं कम चाळीस पगोथिया तो
चढणा ई पड़ै।

खुणा–खचुणा खण्ड में संग्रहित कविताओं में ऐसी कविताओं को देखा जा सकता है जो किसी एक शीर्षक में नहीं रखी जा सकती थी। विभिन्नता लिए इस खण्ड की कविताओं में कोई एक मूल स्वर दिखाई नहीं देता। इन कविताओं में कवि इतियास रो बास में रहते हुए बूझ सकै सवाल करता हुआ पांती में रंगों की रोळ गदोळ को देखता है। तुरपाई करती लुगाई के धैर्य में दुनिया की हर समस्या का इलाज ढूँढ़ता है। दरअसल सही भी है, जीवन के कितने ही उघड़े हुए पल घर में औरतों की तुरपाई से ढक दिए जाते है। यहाँ बरबस आलोक श्रीवास्तव की गजल 'माँ' का शेर याद आ जाता है–

घर के झीने रिश्तें मैंने लाखों बार उघड़ते देखे,
चुपके चुपके कर देती जाने कब तुरपाई अम्मा।

संग्रह के अंतिम भाग में कवि द्वारा गद्य कविताएँ भी रखी गई है। राजस्थानी में गद्य कविता शायद कवि द्वारा प्रयोगात्मक रूप में रखी गई हो। अंग्रेजी में प्रोज पोएट्री जो हिन्दी में गद्य कविता होती हुई, राजस्थानी में गद्य कवितावां की संज्ञा ही पा सकी है। इन कविताओं को चकारिया, देखणो, दूब, अबै नवो नीं शीर्षक से कविताओं को संजोया गया है। राजस्थानी में गद्य कविताओं का कितना प्रयोग हुआ यह कहना कठिन है। लेकिन कुछ गद्य कविताएँ कविवर कन्हैया लाल सेठिया की अन्तरजाल में कविता कोश में देखी जा सकती है।

समस्त कविताओं को पढ़ने के बाद यह कहना गलत नहीं होगा कि ये कवि की निजी अनुभूतियों का विस्तार है। जो स्मृतियों के गलियारों से होती हुई कहीं वैयक्तिक और कहीं समाज की अबखाइयों की ओर ले जाती है। दरअसल कवि की निजी स्मृति की यात्रा होते हुए भी वैयक्तिक और सामाजिक जीवन की ओर संकेत करती है।

इन कविताओं की भाषा और शिल्प की बुनघट के प्रति कवि द्वारा पूर्ण सावचेती से कार्य किया गया है। लोक में प्रचलित शब्दों के साथ ठेठ शब्दों का प्रयोग कविता के शिल्प को सुघड़ करता है। कवि इन कविताओं में लोक प्रचलित मुहावरों के साथ अपने मुहावरे भी रचते हैं। इतिहास रो बास कविता में लोक में दरवाजों को रोकने वाली 'आगळ' का कविता में बेहतरीन प्रयोग करते हुए एक नया मुहावरा ''उड़ीक री आगळ'' गढ़ देते है। ये दीगर बात है कि कहीं–कहीं भाषा के ठेठ शब्द पाठक के रोजमर्रा की भाषा से अलग होने के कारण कुछ व्यवधान करते नजर आते हैं। लेकिन इस संग्रह की कविताओं में माटी की सोंधी गंध को अनुभूत किया जा सकता है। हालांकि कवि द्वारा काव्य शिल्प के बाबत् पूर्ण सावचेती से कार्य किया गया है किन्तु यहाँ मुख्य बात ये है कि कविता में बहुत सी बातें सांकेतिक होती है। कविता में संकेतों को समझाने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। पाठक पर भरोसा किया जाना चाहिए।

डॉ. मदन गोपाल लढ़ा की इस संग्रह की राजस्थानी कविताएँ व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के छुए अनछुए पहलुओं को संवेदनात्मक तरीके से रख कर पाठक को अपने से जोड़ती हुई इन परिस्थितियों के लिए चिंतन के अवसर प्रदान करती है। ये कविताएँ उत्तर आधुनिकता की प्रवृत्ति की भाँति चिन्ताओं और संत्रास को ही नहीं व्यक्त करती पर आशान्वित करती है।

इस कविता संग्रह में विचारों का फलक व्यापक है। कविताओं में आवश्यक गहरी पड़ताल कर अपने अन्तस के काव्य–समुद्र भीतर छिपे विचारों और भावों को सही संप्रेषित भी किया है। कुल मिलाकर यह संग्रह राजस्थानी काव्य के क्षेत्र में स्वागत योग्य माना जाना चाहिए। इसका आकर्षक कवर और सुन्दर छपाई इसमें चार चाँद लगाती है। अन्त में इतना ही कि यह संग्रह पठनीय और संग्रहणीय है।

समीक्षक : **डॉ. प्रमोद कुमार चमोली**
राधास्वामी सत्संग भवन के सामने,
गली नं.–2, अम्बेडकर कॉलोनी,
पुरानी शिववाडी रोड, बीकानेर
मो. 9414031050

एक रात धूप में

कवि : राजेन्द्र जोशी, **प्रकाशक** : सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर। **संस्करण** : 2016 **पृष्ठ संख्या** : 96 **मूल्य** : ₹ 200

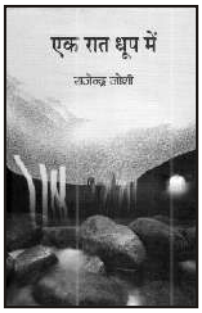

कवि श्री राजेन्द्र जोशी का तृतीय काव्य संग्रह 'एक रात धूप में' अपने आप में अनूठा है। उक्त काव्य संग्रह को पढ़ते हुए पाठक, पृष्ठ दर पृष्ठ कवि से सहमत होता हुआ उसी के साथ स्वान्वेषण की यात्रा पर निकल पड़ता है। सम्पूर्ण काव्य संग्रह में कवि शब्दों में तथा मौन के बीच अपने को तलाशता हुआ, जीवनानुभवों से खुद को तराशता हुआ, वक्त की अनेकानेक चुनौतियों के बीच अपने कविकर्म को अंजाम देता हुआ, कर्त्तव्यों से उदासीन जनमानस को फटकारता हुआ, भीड़ में मुखौटे पहचानता हुआ, नदी, तालाब, पेड़, पत्तों को पुचकारता हुआ, प्रतिपल स्वयं को गढ़ता है, बनाता है, संवारता है। कवि का कर्मक्षेत्र विस्तृत है तभी तो घर, परिवार, गली, मौहल्ला, शहर, राष्ट्र सभी को अपने आप में समेटे, अपनी अनुभूतियों तथा संवेदनाओं में कल्पनाओं के रंग भरते हुए मस्तमौला कवि अनायास ही कविता कर बैठता है, शब्दाडम्बर से दूर बड़ी सरलता एवं सहजता के साथ।

कवि की आत्मीयता के दायरे में मानव, पशु-पक्षी, मजदूर, भिखारी सभी बड़ी विश्वसनीयता के साथ आते हैं।

कवि व्यष्टि से समष्टि तक हर किसी के लिए चिंतित है। आधुनिक जीवन की व्यस्तताएँ, तनाव, मानव की स्वार्थान्धता, प्रकृति की उपेक्षा, व्यवस्थागत-विडम्बना, सामाजिक-असमानता, अस्त-व्यस्त गली, मौहल्ला सभी कवि को बैचेन करते हैं:-

कीचड़ से हो गए तालाब
टूटी और बिखरी सड़कें

तंग गलियों का वर्णन करता कवि मानो सिसक पड़ता है। कभी हौले से कवि 'दर्द सहकर भी बहती नदी को पहाड़ों से रेगिस्तान आने का आमंत्रण' इस आश्वासन के साथ दे आता है:-

न बाँधेगे
न रोकेंगे
न दर्द देंगे, आना इस बार
धूल के समन्दर में!

आत्मीयता में रसा-पगा कवि 'रहने दो मैदान, मत बनाओ दीवारें।' कहकर बँटवारे के समस्त आधारों को ही ध्वस्त कर देना चाहता है। प्रेम जीवन को सदैव ऊष्मित करता रहे, इसी आकांक्षा से कवि सुझाव देता है 'चूल्हे की आग, हारे की धधक, दिए की लौ कभी बुझायी न जाए।' 'जीवन के आनन्द में-सहअस्तित्व की भावना' के महत्त्व को रेखांकित करता कवि अति सुन्दर कल्पना करता है :-

सबके दुखों को भरने का
हो कुआं एक ही
एक ही आंगन, सबका साझा हो।

बिखरते जीवन मूल्यों के इस दौर में कवि की तीखी नज़र मुखौटों के पीछे छिपे असली चेहरों की पड़ताल भी मारक शब्दों से करती चलती है-

अंधेरा कर देना चाहे कितना भी,
नहीं बदल पाओगे, असली चेहरा।

पुनश्च-

बिकने को तरसते तुम,
और तुम्हारा मुखौटा
इंतज़ार में खरीददार के।
ढोंगी बनकर/न बिकते तुम/
और न ही मुखौटा।।

मौजूदा लोकतंत्र में आम आदमी की उदासीनता से व्यथित कवि व्यंग्य करते रहने को मजबूर है-

पाँच साल के लिए
सो रहा है, या रो रहा है,
शहर सो रहा है।

एक आम आदमी के रूप में जीवन-संघर्षों के बीच अपनी जिजीविषा के बल पर आत्मविश्वास के साथ खड़ा कवि मानता है कि 'अब दोस्ती हो गई है, पेचीदा रास्तों से अब भरोसा है जूझती ज़िन्दगी पर।' मौत की तरफ भी दोस्ती का हाथ बढ़ाता कवि उसके साथ भी 'साथ साथ चलेंगे एक दूसरे को सहेजते।' कह कर अपनी ज़िन्दादिली का परिचय देता है।

दर्द देने के बहाने से
भक्ति का सौदा
करना चाहते थे तुम!

जैसा सीधा सीधा संवाद कर कवि 'तथाकथित ईश्वर' के समक्ष भी हथियार न डालने की अपनी मंशा साफ-साफ ज़ाहिर कर देता है। अपने हक के प्रति जागरूक कवि इतना अधिक लोकतांत्रिक है कि वह दूसरे के अधिकारों की रक्षा करना भी जानता है।

जो कहना है कह दो अभी,
है कोई शिकायत कर दो पहले ही।।

पुनश्च-

न भटकूँगा न छोड़ूँगा और न ही मरूँगा
अपने हिस्से का लिए बिना आकाश।

कहकर कवि अपना कर्त्तव्य भी पूरा करता है और अपना अधिकार भी बचा लेता है। समाजसेवा, धर्मपरायणता, भक्ति के ढकोसलों से दूर कवि 'देवता जिसका आदमी के सिवाय कोई नही।' कहकर 'मानव' को ब्रह्माण्ड के सर्वोच्च पद पर बिठा देता है तथा 'एक एक साँस कर्म की लेनी है।' कहकर कर्मयोग में अपनी गहन निष्ठा अभिव्यक्त कर देता है।

'मत रोको' कविता में बालक की स्वतंत्रता का हिमायती कवि मानव गरिमा का गुणगान करता है। साथ ही कविता 'कहाँ ले जा रहे बहार' में-

कतराते कांटों से पत्तियों के सहारे
तोड़ते फूलों को, कहाँ ले जाना
चाह रहे हैं हम।

कहकर प्रकृति की गरिमा के प्रति भी जागरूक दिखता है। कवि को आँगन में शरारतें करते बालक तथा टहनी पर खिले फूल सुकून देते हैं। आज जब प्रकृति का प्रतिपल शोषण हो रहा है, बालक आधुनिक शिक्षा तथा बस्तों के दबाव तले बचपन भूल गए हैं, कवि का उन दोनों के अस्तित्व के प्रति चिंता जाहिर करना सुकून देता है। इस पर कवि को सलाम।

प्रतिपल जीवन की चुनौतियों का सामना करते जिम्मेदार कवि का, प्रेमल स्मृतियों के शीतल जल से तर चेहरा भी काव्य संग्रह में कहीं कहीं झाँकता नज़र आता है। समाज की मर्यादाओं से बंधे कवि का प्रेम, अब यथार्थ से

टकराकर व्यष्टि से समष्टि तक, एक से अनेक तक, कण से ब्रह्माण्ड तक विस्तृत हो गया है। 'न मिले वहाँ वह तो उसकी हवाओं से मुहब्बत कर।'

जीवन यात्रा में प्रतिपल गतिमान कवि के पास वह परिपक्व जीवन दृष्टि है कि वह पतझड़ में भी जीवन की आहट सुन लेता हैं।

उजाड़ सी शाख
बुलावा देती
हरे पत्तों को।

मृत्यु और पतझड़ भी कवि को जीवन के सबक सिखाते हैं–

'काँटों वाली टहनियों में भी वे हरे हैं।
दरख्तों पर वे नहीं बदलते अपना रंग।'
करता है स्वागत
आने वालों का
हर मौसम में बतियाता है।

फिर प्रकृति के बीच कवि का अपना बालसुलभ कौतुहल भी जाग उठता है–

कहाँ से आने लगते हैं
हरी हरी पत्तियों के जमघट।

लोकतंत्र के लचीलेपन के चलते जनसेवकों को जनता का मालिक बनते देख कवि चौंकता है। हुकूमत नौकर से मालिक बना देती है। कहकर कवि लोकतांत्रिक व्यवस्था की विडम्बना उजागर करता है।

सच बोलने की कीमत कवि जानता है तभी तो 'हिंसा के निशाने पर हूँ।' कहता कवि अगले ही पल अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेत हो घोषणा करता है–

'कलम का सिपाही हूँ।
ऐ इंसानियत तेरा पुजारी हूँ।'
वह कभी मरा नहीं
अजेय, अमर है।
बिना बुलाए पहुँच जाता है, सब की जुबान पर।

कहकर शब्द की सर्वव्यापकता, सर्वोच्चता स्वीकारता कवि शब्दों की अभिव्यक्ति क्षमता को भी जानता है और शब्दों की मारक क्षमता को भी पहचानता है पर यही शब्द निरंकुश न हो जाए, इस बात की चिन्ता भी है लोकतंत्र के सजग प्रहरी कवि को/तभी तो कवि पुकार उठता है–

अब निर्भय होकर कहीं
तानाशाही के जाल में
उलझ तो नहीं रहे वे ?

लड़ते/झगड़ते/डराते/धौंस दिखाते इन शक्तिशाली शब्दों से दूर मौन की असीम सत्ता के स्वाद से भी परिचित है कवि। तभी तो 'हर मौसम मौन में बतियाता है'

पुनश्चः

वे तो सर्वव्यापी की तरह
खुद को व्यक्त
अव्यक्त करते
तैरते हैं हवा के पंखों पर निःशब्द।

सरल हृदय कवि के संवेदनशील कान मौन की भाषा को सुनने की भी क्षमता रखते हैं। मौन हृदय से हृदय तक की यात्रा करने वाली सशक्त भाषा। इस प्रकार सम्पूर्ण काव्य संग्रह तीन उपखण्डों यथा– 'बात जो बात है/सूखी पत्तियाँ/मेरे हिस्से का आकाश' में विभाजित है।

काव्य संग्रह का सर्वाधिक सशक्त पक्ष भावों की संप्रेषणीयता है। वह संप्रेषणीयता जो भाषा की सरलता तथा सहजता में निहित है। संग्रह की कविताएँ कवि के जीवनानुभवों का निचोड़ है। कवि लोकजीवन में प्रयुक्त होने वाले सरल सहज मुहावरों का प्रयोग ही नहीं करता वरन् मुहावरे गढ़ता भी है। ये मुहावरे अनायास ही पाठक को चमत्कृत कर काव्य सौंदर्य को द्विगुणित कर देते हैं–यथा

- सच बोलना बताना नहीं पड़ता, झूठ बोलना सिखाना नहीं पड़ता।
- दीवारें लहू माँगती हैं फिर जब भी टूटती हैं इन्सान माँगती हैं।
- शहर सो रहा हैं।
- चूके तो चौरासी।
- कमल का सिपाही हूँ। हिंसा के निशाने पर हूँ।
- बूढ़ा जो हो गया है वह ज़िन्दा रहकर भी ज़िन्दा नहीं जो।
- वह भीतर से खरा है वह अब भी हरा है।

काव्य संग्रह में ऐसे अनेकानेक काव्यांश है जो मन को छूते हैं, सोचने को मजबूर करते हैं यही एक कवि की सफलता है। कुल मिलाकर एक पाठक के रूप में 'एक रात धूप में' काव्य संग्रह से गुजरना एक सुकूनदायक अनुभव है। ऐसा सुकून जो उस वक्त अनुभव होता है जब कोई आपके हृदय के भाव और आपके होठों के शब्द अपनी जुबां से अभिव्यक्त करे तो आप महसूस करते हैं। कवि को साधुवाद।

समीक्षक : **डॉ. रेणुका व्यास**
व्याख्याता
रा.बा.उ.मा.वि. लक्ष्मीनाथ घाटी, बीकानेर
मो: 9414035688

घोषणा–पत्र
(फार्म नं. 4)

शिविरा पत्रिका के स्वामित्व और अन्य विवरण, जो केन्द्रीय धारा 1956 के अन्तर्गत समाचार–पत्र के रजिस्ट्रेशन के लिए प्रकाशित करने आवश्यक हैं।

1. प्रकाशन संस्थान	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक	:	नथमल डिडेल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
4. प्रकाशक	:	नथमल डिडेल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
5. प्रधान सम्पादक	:	नथमल डिडेल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

मैं, नथमल डिडेल घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी में एवं विश्वास के साथ सत्य और वास्तविकता पर आधारित है।

(नथमल डिडेल) आई.ए.एस
निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shalaprangan.shivira@gmail.com** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-संपादक

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मेकरना में स्वेटर वितरण कार्यक्रम सम्पन्न

बाड़मेर। बाड़मेर की बालोतरा तहसील के गाँव मेकरना की राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में 20 जनवरी, 2018 को वरिया मठ महंत श्री नारायण भारती महाराज के सानिध्य एवं रावल श्री किशन सिंह जसोल के मुख्य आतिथ्य में स्वेटर वितरण कार्यक्रम रखा गया। जिसमें भामाशाह श्री लालसिंह सिसौदिया असाड़ा द्वारा कुल 200 स्वेटर लागत 60,000 (अखरे रुपये साठ हजार) का वितरण किया गया।

भारती महाराज ने 'नर सेवा-नारायण सेवा' का महत्त्व बताते हुए अपने उद्‌बोधन में बालक को ईश्वर स्वरूप मानकर सदैव सेवा में तत्पर रहने के लिए कहा। इस अवसर पर विद्यालय स्टाफ सर्व श्री कानाराम सियाग, ठाकरराम प्रजापत, दमाराम पूंचल, पंकज शर्मा, ममता देवी व कृष्ण कुमार चौधरी आदि उपस्थित रहे। भामाशाह द्वारा स्वेटर प्राप्त कर विद्यार्थियों के चेहरे खिल उठे। कार्यक्रम के अन्त में संस्थाप्रधान श्री कुन्दन सिंह महेचा ने भामाशाह सहित सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

सुजानगढ़ के बालिका विद्यालय में एन.एस.एस. का सात दिवसीय शिविर सम्पन्न

चूरू। राजकीय कनोई बा.उ.मा.वि. सुजानगढ़ में 1 से 7 जनवरी 2018 तक राष्ट्रीय सेवा योजना (+ 2 स्तर) के शिविर का आयोजन प्रभारी मंजू ढाका व संस्थाप्रधान श्रीमती सरोज पूनिया के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। जिसमें 50 स्वयंसेवी छात्राओं को 5 दलों में विभाजित कर दल नायकों के नेतृत्व में प्रथम दिवस कक्षा-कक्षों व परिसर की सफाई की गई। समाजसेवी सविता राठी व साहित्यकार श्री घनश्याम कच्छावा ने वार्ता दी। दूसरे दिन वाटिका में पौधारोपण किया गया, वार्ता डॉ. योगिता सक्सेना ने दी। तृतीय दिवस श्रीमती स्नेह प्रभा ने पर्यावरण संरक्षण पर वार्ता दी। शाला में रंगरोगन हेतु सेवा कार्य किया गया। चतुर्थ दिवस खेल और स्वास्थ्य पर चर्चा हुई तथा रंगरोगन किया गया। पंचम दिवस शैक्षिक भ्रमण तथा छठे दिन ओ.बी.सी. बैंक के मैनेजर श्री विजय कुमार शर्मा ने बैंकिंग क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं पर वार्ता दी। शिविर के अन्तिम दिवस समापन समारोह के अन्तर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्त में सम्मानित मंच के साथ गायन, नृत्य, मेहन्दी, विचित्र वेशभूषा की विजेता छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। श्रीमती मंजू ढाका ने शिविर में सहयोगी स्टाफ सदस्यों व छात्राओं को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

मतदाता जागरूकता रैली का आयोजन किया सोडावास विद्यालय ने

पाली। रा.आ.उ.मा.वि. सोडावास (पाली) में आयोजित मतदाता जागरूकता रैली को संस्था प्रधान श्री डी.आर. सागर व सरपंच श्री किशोर उपाध्यक्ष ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। बूथ लेवल अधिकारी श्री हीराराम चौधरी एवं श्री हीरालाल सैन के नैतृत्व में आयोजित रैली में विद्यालय स्टाफ ने पूर्ण सहयोग दिया। सबसे आगे बड़े बैनर पर लोकतंत्र में मतदाता की भूमिका व जागरूकता संबंधी नारे लिखे हुए थे। इसी तरह के नारों से लिखी तख्तियाँ रैली में बच्चों ने हाथ में लेकर जोर-जोर से जयघोष किया। सोडावास के विभिन्न मोहल्लों से गुजरती हुई रैली अन्त में शाला प्रांगण पहुँची। जहाँ नव मतदाताओं को शपथ दिलवाई गई कि 'हम मतदान अवश्य करेंगे'। लोकतंत्र में सभी मतदाता सक्रिय भूमिका निभाएँ और शत प्रतिशत मतदान करें। इस अवसर पर भाग संख्या 81 के 73 व 82 के 67 नव मतदाताओं को फोटो युक्त मतदाता पहचान पत्र वितरित किए गए।

बेड़वास विद्यालय में किया गया स्वेटर, जूते, मोजे वितरण कार्यक्रम

उदयपुर। राजकीय माध्यमिक विद्यालय बेडवास में गणतन्त्र दिवस समारोह के दौरान चौकसी हेरियस लिमिटेड, उदयपुर के सी.एस.आर. श्री प्रवीण यादव द्वारा 250 जोड़ी जूते, 500 जोड़ी मोजे (लागत 1,15,000 रुपये) कक्षा 1 से 8 के विद्यार्थियों को, 165 स्वेटर कक्षा 1 से 6 के विद्यार्थियों को इण्डस टावर्स लिमिटेड, जयपुर के द्वारा (लागत 30,000/-) वितरित किए गए। इस अवसर पर स्थानीय ग्राम के श्री रामलाल सोलंकी द्वारा अपने माता-पिता की याद में श्री प्रेम कुमार सोलंकी द्वारा अपनी पत्नी की याद में एक-एक कमरा बनवाने की स्वेच्छा से घोषणा की गई। इस अवसर पर संस्था प्रधान श्री चंदन सिंह चौहान द्वारा सभी भामाशाहों का आभार प्रकट करते हुए सम्मान किया गया।

रा.आ.उ.मा.वि. कुंचौली के शा. शि. श्री राकेश टाक सम्मानित

राजसमंद। स्थानीय संघ कुम्भलगढ़ के रा.आ.उ.मा.वि. कुंचौली के स्काउट मास्टर एवं शा.शि. श्री राकेश टाक को जिला स्तरीय गणतन्त्र दिवस 2018 के मुख्य समारोह में मुख्य अतिथियों द्वारा जिले में स्काउटिंग के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान करने के उपलक्ष्य में मेडल व प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। श्री सुरेन्द्र कुमार पाण्डे सी.ओ. स्काउट ने बताया कि ''श्री टाक विगत 13 वर्षों से स्काउट आन्दोलन में स्काउट मास्टर के रूप में अपनी मानद सेवाएँ देते आ रहे हैं। राष्ट्रीय जम्बूरियों में अपनी युनिट की सक्रिय सहभागिता करवाते हुए राज्य व राष्ट्रपति अवार्ड की उपलब्धियाँ अर्जित की है। समय-समय पर रक्त दान शिविर, मेलों में व्यवस्था व भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध करवाते रहें हैं।''

विज्ञान विशेषांक पुस्तक का विमोचन

अजमेर। चूरिया मूरिया शिक्षा, पर्यावरण एवं स्वास्थ्य सेवा समिति, अजमेर द्वारा निःशुल्क वितरित की जाने वाली 'विज्ञान विशेषांक पुस्तक (कक्षा 10), का विमोचन राजस्थान सरकार के शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) माननीय वासुदेव देवनानी ने किया। इस अवसर पर समिति की प्रदेश प्रभारी श्रीमती हेमलता अगनानी व अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

रा.प्रा.वि. करणपुरा (माण्डलगढ़) में भामाशाह द्वारा स्वेटर वितरण

भीलवाड़ा। राजकीय प्राथमिक विद्यालय करणपुरा ग्राम पंचायत बल्दरखा तहसील माण्डलगढ़ में भामाशाह श्रीमती शान्ता देवी जीनगर पत्नी श्री रमेश चन्द्र जीनगर (एच.एल.वी. श्यामपुरा) निवासी काछोला द्वारा कक्षा 1 से 5 में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को स्वेटर वितरित किए गए। इस अवसर पर माण्डलगढ़ ब्लॉक के प्रा.शि. अधिकारी श्री कुलदीप केलानी व पदेन पंचायत प्रा.शि. अधिकारी श्री बनवारी लाल जीनगर ने भामाशाह श्रीमती जीनगर का आभार जताते हुए सम्मानित किया।

माध्यमिक विद्यालय पून्दरपाडा में विद्यार्थियों को जर्सी भेंट

दौसा। जिला दौसा के पून्दरपाडा (बांदीकुई) स्थित राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय में 69वां गणतन्त्र दिवस समारोह भामाशाह संत शिरोमणी श्री श्री 108 श्री रामनाथ जी महाराज के मुख्य आतिथ्य में धूमधाम से मनाया गया। विशिष्ट अतिथि डॉ. अशोक जांगिड़ के अतिरिक्त सर्वश्री चिरंजीलाल योगी, रामसहाय हरिजन, नानगराम योगी, सोहन सिंह, अमर सिंह, रामसिंह, गोपाल जांगिड़ आदि उपस्थित रहे।

भामाशाह संत रामनाथ जी महाराज ने 30 (तीस) गरीब व बेसहारा विद्यार्थियों को जर्सियाँ भेंट की। अध्यक्षता कर रहे संस्थाप्रधान श्री लल्लू राम शर्मा ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी श्री राहुल कुमार विजय को रजत पदक देकर सम्मानित किया जो कि ब्लॉक स्तर पर भी पूर्व सम्मानित हैं।

विद्यालयी बच्चों को बैग, जूते एवं स्वेटर वितरण भामाशाह द्वारा

चूरू। चूरू जिले की राजगढ़ तहसील स्थित रा.आ.मा.वि. साँखण ताल में दिनांक 13 जनवरी, 2018 को भामाशाह श्री मोहन सिंह धतरवाल द्वारा 51 हजार रुपये के स्कूली बैग, भामाशाह श्री उदमीराम धतरवाल द्वारा 21 हजार रुपये के जूते तथा भामाशाह श्री गुलजारी लाल कोठारी द्वारा 40 हजार रुपये की लागत की 165 बच्चों को स्वेटर वितरित की गई।

'रमसा' चूरू के श्री रणवीर सिंह धींधवाल ने छात्रों को शिक्षा विभाग की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। कार्यालय में श्री शुभकरण महला ने विद्यालय के लिए ऑफिस चेयर देने की घोषणा की। संस्था प्रधान श्री विजय सिंह झुरिया ने कक्षा 10 के विद्यार्थियों के प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होने वाले सभी छात्र-छात्राओं के लिए 1100-1100 रुपये नकद पुरस्कार स्वरूप देने की आगामी वर्ष हेतु घोषणा की। व.अ. श्री मनीराम द्वारा कक्षा 10 में 75% से अधिक अंकों के साथ उत्तीर्ण होने वाले सभी छात्रों को 2,100 रुपये अपनी ओर से प्रतिछात्र देने की घोषणा की।

इस अवसर पर झुंझुनूं नौ सैनिक संघ के सर्वश्री शुभकरण महला, दीपचन्द, महावीर सिंह दड़िया, उम्मेद सिंह जाखड, लालचन्द प्रेमी व सुरेन्द्र बाबल मौजूद थे। संस्थाप्रधान श्री विजय सिंह झुरिया ने छात्र-छात्राओं को स्कूल बैग, जूते तथा स्वेटर वितरण करने पर आभार जताते हुए भामाशाहों को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया तथा घोषणा करने वाले भामाशाहों का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

जाजोद (सीकर) में प्रतिभा पुरस्कार समारोह आयोजित

सीकर। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जाजोद (लक्ष्मणगढ़) में 5 फरवरी 2018 को ग्रामीण प्रतिभा पुरस्कार समारोह उपनिदेशक (मा.शि.) चूरू मण्डल डॉ. महेन्द्र कुमार के मुख्य आतिथ्य एवं राजस्थान सेवारत चिकित्सक संघ के प्रदेशाध्यक्ष डॉ. अजय चौधरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। विशिष्ट अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक प्रथम) श्री जगदीश प्रसाद चोटिया, उपखण्ड अधिकारी श्री अनिल महला आदि उपस्थित रहे। अतिथियों ने अपने उद्बोधन में 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम को आगे बढ़ाने, ग्राम विकास में युवाओं को आगे आने हेतु आह्वान किया। इस समारोह में अतिथियों द्वारा ग्राम पंचायत क्षेत्र के शिक्षा, सेना, राजकीय सेवा में चयन, गौरव सेनानी, शहीद विरांगनाएँ, जन प्रतिनिधिगण व शिक्षकों सहित 150 प्रतिभाओं को माल्यार्पण, शॉल व प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। भामाशाह व संयोजक डॉ. भींवाराम रणवा ने समस्त अतिथियों का स्वागत किया। प्रतिभाओं के सम्मान समारोह का आयोजन मरूधरा बेट्री सीकर के प्रोपराईटर राजेन्द्र रणवा के द्वारा किया गया। इस अवसर पर पूर्व निदेशक कृषि एवं सहकारिता श्री भंवर सिंह रणवा, शिक्षक संघ के जोगेन्द्र सिंह रणवा, श्री हरलाल महरिया, प्रवक्ता छोटी कुमारी ठोलिया, सरपंच श्री हरिप्रसाद, कैप्टन कामस खां, भैरुसिंह शेखावत, राजेन्द्र इन्दोरिया, डॉ. राशिद अली सहित दर्जनों गाँवों के दो हजार से अधिक विद्यार्थी, महिलाएँ, ग्रामीणजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री रामचन्द्र खीचड़ ने किया जिसमें सांस्कृतिक व देशभक्ति गीतों की शानदार प्रस्तुतियाँ शामिल रही।

संकलनः प्रकाशन सहायक

शिक्षा या ज्ञान की प्राप्ति के लिए एकाग्रता की अत्यधिक आवश्यकता होती है। एकाग्रता और ध्यान का अभ्यास नहीं होगा, तो शिक्षार्थी अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकेगा। शिक्षक को एक सच्चे अभिभावक के रूप में प्रस्तुत होना चाहिए। वस्तुतः शिक्षक वह माली है जो समाज रूपी उद्यान को सुन्दर और फलदायी बनाता है।

-स्वामी विवेकानन्द

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

प्राचीन भारत के विज्ञान पर लंदन में प्रदर्शनी लगी

हम भारतीयों के मन में ऐसी 'हीनता' की भावना बैठी हुई है कि अपनी श्रेष्ठ विरासत का हम मजाक उड़ाते हैं और पश्चिम की जूठन खा कर सीना फुला देते हैं। पश्चिमी जगत आदि हमारी किसी उपलब्धि की प्रशंसा कर दे तो हम भी उसके पीछे दौड़ने लगते हैं। विज्ञान के क्षेत्र में भी प्राचीन भारत प्रगति के चरम पर था, यह एक सच्चाई है। लेकिन लिबरल-सेकुलर-नक्सल गठजोड़ कतई यह मानने को तैयार नहीं है और इस सच्चाई का उपहास करता दिखाई देता है। लेकिन अक्टूबर माह में लंदन में प्राचीन भारत के विज्ञान पर एक शानदान प्रदर्शनी लगाई गई। लंदन के साइंस म्यूजियम ने यह प्रदर्शनी आयोजित की थी तथा इसका नाम था-प्रकाशमान भारत : पाँच हजार वर्षों की विज्ञान और आविष्कारों की परम्परा अंग्रेजी दैनिक ही एन.ए. के अनुसार गत 4 अक्टूबर को इस प्रदर्शनी का शुभारम्भ हुआ। शुभारम्भ के अवसर पर प्रदर्शनी प्रमुख श्री गेट किम्बरली ने कहा कि विज्ञान, तकनीकी, अभियांत्रिकी तथा गणित के क्षेत्र में भारत के योगदान की उपेक्षा नहीं की जा सकती। उन्होंने बताया कि चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में भी भारत का महत्त्वपूर्ण योगदान था तथा त्रिकोणमिति तो भारत की ही देन है। इसी के आधार पर भारत के खगोल विज्ञानियों ने पृथ्वी की ठीक-ठीक आकृति का पता लगाया था। सिविल इंजीनियरिंग में भी भारत की भूमिका विलक्षण थी।

साभार : पाथेयकण, 1 नवम्बर, 2017

लाक्षागृह की खोज करेगा पुरातत्व विभाग

महाभारत में पाण्डवों को लाक्षागृह में जला कर मार देने के षड़यंत्र की जानकारी सभी देशवासियों को है। हस्तिनापुर के महामंत्री विदुर के चेताने के बाद पाण्डव सकुशल लाक्षागृह से निकल गए थे। इतिहासकारों का मानना है कि उक्त लाख का बना महल उत्तर प्रदेश के बागपत जिले में बरणावा ग्राम में था और उसके अवशेष भूमि में दबे हुए है। वहाँ उत्खनन कर लाक्षागृह को निकालने के लिये लम्बे समय से भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग से अनुरोध किया जा रहा था। अब विभाग ने खुदाई की स्वीकृति दे दी है। कौरवों का बनाया लाख का घर वारणावत में था। इतिहास के विद्वानों का मानना हैं कि वही वारणावत अब बदल कर बरणावा हो गया है। अपने देश में महाभारत, रामायण एवं अन्य कालों से जुड़े अनेक ऐतिहासिक स्थल हैं। इनमें से बहुत से जमीन के नीचे दबे हैं। ऐसे सभी स्थलों की पहचान व उत्खनन किया जाना चाहिए।

साभार : पाथेयकण 1 नवम्बर, 2017

नासा ने बताया कि सूर्य से निकलती है ओंकार की ध्वनि

सूर्य से प्रकाश के अतिरिक्त ध्वनि भी प्रसारित होती है। यह आवाज इतनी मन्द होती है कि पृथ्वी तक पहुँच ही नहीं पाती। पिछले दिनों अमरीका के अंतरिक्ष संस्थान 'नासा' ने सूर्य से प्रसारित होने वाली ध्वनि को पकड़ने का प्रयत्न किया। नासा के वैज्ञानिकों को उस समय घोर आश्चर्य हुआ जब उन्हें पता लगा कि सूर्य से लगातार ''ॐ'' की ध्वनि निकल रही है। भारत में औंकार को बीज-मंत्र और अनहद नाद माना जाता है। हजारों वर्षों से भारतीय साधक और वैज्ञानिक ''ॐ'' की साधना करते आए हैं। सहस्रों वर्ष पहले उन्होंने सूर्य की ध्वनि को कैसे सुना होगा यह भी आश्चर्य का विषय है।

साभार : पाथेयकण, 16 नवम्बर, 2017

जिस सुरंग से रास बिहारी बोस बच कर निकले वह खोजी गई

रास बिहारी बोस देश की आजादी के लिए संघर्ष करने वाले शीर्षस्थ क्रांतिकारियों में से एक थे। 23 दिसम्बर, 1912 को अंग्रेज बॉयसराय लार्ड हार्डिंग्ज पर एक शक्तिशाली बम फैंका गया। इस कार्रवाई के सूत्रधार रास बिहारी बोस ही थे। इस मामले में श्री अवध बिहारी, अमीरचंद तथा भाई बाल मुकुन्द को फाँसी हुई तथा प्रताप सिंह बारहठ जेल में शहीद हो गए। रास बिहारी बोस पर पुलिस को शक तक नहीं हुआ। वास्तव में अंग्रेज पुलिस उनको कभी गिरफ्तार नहीं कर सकी। 1915 में गदर पार्टी ने भारत को स्वतंत्र कराने की देश-व्यापी योजना बनाई थी। भारत में गदर पार्टी के प्रमुख उस समय रास बिहारी ही थे। समय से पहले भेद खुलने से यह योजना असफल हो गई तथा विष्णु विंगले और करतार सिंह सराबा सहित सात क्रांतिकारियों को फाँसी हो गई। अनेक क्रांतिकारियों को जेल में बन्द कर दिया गया। इस बार रास बिहारी भी पुलिस की नजरों में आ गए। वे चुपचाप एक पंजाबी व्यापारी का रूप धर कर कोलकाता पहुँच गए। अग्रेज गुप्तचरों को वहाँ भी उनका सुराग लग गया पर वे लगातार जासूसों को चकमा देते रहे। आखिर हावड़ा के एक मकान में पुलिस ने रास बिहारी को घेर लिया। उस मकान में एक सुरंग थी। वह प्रसिद्ध क्रांतिकारी उस सुरंग से बच कर निकल गया और अंग्रेजी साम्राज्य को एक बार फिर छका कर जापान पहुँच गया। खिसियाए अंग्रेजों ने सुरंग बन्द कर मकान को ताला लागा दिया। इस मकान में बोस की बहिन सुशीला देवी का ससुराल था। यह मकान बंगाल के हावड़ा जिले के करोला में है। अब यह जर्जर हो गया है। इसलिए इस मकान को गिराया जा रहा था। गत 23 अक्टूबर को जब इसे ध्वस्त किया जा रहा था तो उक्त सुरंग का पता चला।

साभार : पाथेयकण, 1 दिसम्बर 2017

इम्यूनोथेरेपी से त्वचा कैंसर का सटीक इलाज

इम्यूनोथेरेपी यानी रोग-प्रतिरक्षा चिकित्सा से त्वचा कैंसर के उन मरीजों को बचाया जा सकता है, जिनमें इसकी पहचान बाद के चरणों में हुई है। वैज्ञानिकों का दावा है कि यह थेरेपी त्वचा कैंसर के उपचार में कारगर है। इससे मरीजों को अधिक दिनों तक जिंदा रखा जा सकता है। कनाडा के मैकमास्टर विश्वविद्यालय के शोधकर्त्ताओं ने नए अध्ययन में पाया कि एक से अधिक तरीकों के इम्यूनोथेरेपी से त्वचा कैंसर से रोगियों को जीवनदान मिल सकता है। इस अध्ययन के मुख्य शोधकर्त्ता व मैकमास्टर विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर डॉ. फेंग झी ने कहा, 'इस शोध से डॉक्टरों को त्वचा कैंसर के मरीजों का सटीक उपचार करने में मदद मिलेगी। यह पहला शोध है जिसमें इस बीमारी के प्रभावी इलाज के लिए लक्षित और प्रतिरक्षा उपचारों के बीच तुलना कर विश्लेषण किया गया है। वहीं शोध से जुड़े भारतीय मूल के शोधार्थी ताहिरा देवजी का कहना है 'इम्यूनोथेरेपी से आमतौर पर होने वाले त्वचा कैंसर क्यूटेनियस मेलानोमा का इलाज संभव है।'

साभार : हिन्दुस्तान 7 नवम्बर, 2016

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

राजसमन्द

रा.आ.उ.मा.वि, परदड़ा पं.स. कुम्भलगढ़ को श्री देवी सिंह से चटाई 40×40 फीट लागत 10,000 रुपये, श्री हीरा राम से एक अलमारी लागत 7,000 रुपये, श्री प्रकाश पुरी से 04 टेबिल लागत 8,000 रुपये, श्री भँवर सिंह से एक घंटी पीतल की लागत 1,200 रुपये, श्री सोहन लाल गुर्जर से एक ध्वज तिरंगा लागत 1,400 रुपये भेंट। **रा.आ.उ.मा.वि, टोगी पं.स. भीम** को श्री जयेन्द्र सिंह (सरपंच) टोगी से 20,000 रुपये के ग्रीन बोर्ड विद्यालय को भेंट, सर्व श्री गोविन्द सिंह चौहान, पन्ना सिंह चौहान प्रत्येक से 10,111 रुपये नकद प्राप्त। **रा.मा.वि., बस्सी (देवगढ़)** में श्री गणपत सिंह भाटी द्वारा 1,70,000 रूपये की लागत से माँ सरस्वती मन्दिर का निर्माण करवाया गया।

सवाई माधोपुर

रा.उ.मा.वि, बाढ़ कला तह. गंगापुर सिटी को श्री सत्यप्रकाश जैमिनी (शा.शि.) से 04 चेयर प्लास्टिक लागत 2,400 रुपये, श्री कीर्ति गुप्ता से 04 त्रिपाल लागत 3,000 रुपये, श्री रामस्वरूप बैरवा से एक पंखा लागत 1,400 रुपये, गुप्त भामाशाह से एक डेक स्पीकर लागत 1,000 रुपये, गुप्त भामाशाह से मिठाई वितरण लागत 1,000 रुपये, श्रीमती सुरेखा जैन से 2 चेयर प्लास्टिक लागत 1,500 रुपये, श्री हुकमसिंह राजपूत से टाइल्स हेतु 1,100 रुपये नकद, श्री दिलसुख बैरवा से बजरी हेतु 1,000 रुपये, श्री जगदीश सिंह राजपूत से ईंटों हेतु 2,100 रुपये नकद, श्री छगन सिंह राजपूत से शौचालय व स्नानगृह का निर्माण हेतु 500 रुपये नकद, विद्यालय के बालकों द्वारा शौचालय व स्नानगृह निर्माण हेतु 1,800 रुपये, श्री खेमचन्द कालरा से शौचालय व स्नान गृह निर्माण हेतु 500 रुपये, गुप्त भामाशाह से शौचालय व स्नानगृह निर्माण हेतु 3,600 रुपये, श्री राम भरोसी अग्रवाल से शौचालय निर्माण व स्नानगृह निर्माण हेतु 3,100 रुपये, गुप्त भामाशाह से 2 जोड़ी लोहे के दरवाजे हेतु 5,200 रुपये, श्री भंवर सिंह राजपूत से 2 बैंच लकड़ी की 4,000 रुपये, श्री गोपाल भाई से 200 बच्चों की निःशुल्क ब्लड ग्रुप जाँच हेतु खर्च 4,000 रुपये, श्री शेरसिंह बैरवा से विद्यालय में बिजली फिटिंग निःशुल्क मजदूरी हेतु 2,000 रुपये, श्री मनोज जैन से मुत्रालय निर्माण में सहयोग हेतु 500 रुपये, गुप्त भामाशाह से 4 माह का इन्टरनेट का बिल भुगतान 3,000 रुपये, श्री असलम खान कम्प्यूटर आपरेटर से निःशुल्क कम्प्युटर मरम्मत कार्य हेतु 500 रुपये, श्री प्रवीण कुमार चतुर्वेदी से कक्षा कक्ष निर्माण कार्य में सहयोग 3,100 रुपये, श्री महेन्द्र कुमार शर्मा से लोहे की भट्टी लागत 1,000 रुपये, प्रिंसीपल एम.एम.सी. उ.मा.वि, गंगापुर सिटी से कम्प्युटर यूपीएस. लागत 2,000 रुपये, मंगलम मैरिट पाइन्ट गंगापुर सिटी से 04 फर्श लागत 2,000 रुपये, गुप्त भामाशाह से बालकों को ईनाम राशि 2,000 रुपये, गुप्त भामाशाह से शत-प्रतिशत उपस्थित बालकों को ईनाम 2,500 रुपये, विद्यालय स्टाफ बाढ़कलां से 16 ऊनी जर्सी लागत 3,500 रुपये, गुप्त भामाशाह से लहर कक्ष निर्माण हेतु 2,000 रुपये, गुप्त भामाशाह से टोयलेट बाथरूम निर्माण हेतु 5,000 रुपये नकद, गुप्त भामाशाह से गरीब बालिकाओं की फीस, स्टेशनरी व ड्रेस हेतु 2,000 रुपये नकद प्राप्त, श्री विजय शंकर शर्मा से लोहे के 2 बक्से व ड्रेस हेतु 5,100 रुपये, श्रीमती

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-संपादक**

हमारे भामाशाह

स्नेहलता शर्मा (व्याख्याता) से गरीब बच्चों को ड्रेस लागत 3,000 रुपये, श्री पुरुषोत्तम गुप्ता से बच्चियों को ड्रेस हेतु 1,000 रुपये, लायन्स क्लब गंगापुर सिटी से सीमेन्ट पटाव हेतु 10,000 रुपये, गुप्त भामाशाह से कार्यालय के पीछे सीमेन्ट पटाव हेतु 2,000 रुपये, गुप्त भामाशाह से 60 बालक बालिकाओं की ब्लड ग्रुप जाँच हेतु 1,800 रुपये, श्री उमाशंकर शर्मा (व्याख्याता) से मिठाई वितरण हेतु 500 रुपये, गुप्त भामाशाह से मिठाई वितरण हेतु 500 रुपये, गुप्त भामाशाह से भामाशाह बोर्ड बनवाने की पेन्टर की मजदूरी 1,000 रुपये, गुप्त भामाशाह से कम्प्युटर ठीक कराई हेतु 500 रुपये, गुप्त भामाशाह से दो बालकों की ड्रेस हेतु 650 रुपये, आइकोन दी इंटरनेशनल स्कूल गंगापुर सिटी द्वारा 03 फुट बाऊण्ड्री वाल ऊँची कराई निर्माण में सहयोग हेतु 8,000 रुपये। आस्था पब्लिक स्कूल गंगापुर सिटी द्वारा 1,500 रुपये नकद दिए गए (तीन फुट बाउण्ड्री बॉल ऊँची कराई निर्माण में सीमेंट हेतु सहयोग), देव आदर्श विद्या मंदिर गांवड़ी कला द्वारा 2,000 रुपये नकद ईंटों हेतु सहयोग, आकांक्षा उ.प्रा.वि., मिर्जापुर गंगापुर सिटी द्वारा 1,000 रुपये सीमेंट हेतु सहयोग, श्री मन्नू विजय पूर्व जिला प्रमुख भाजपा पीलौदा द्वारा विद्यालय की रंगाई पुताई हेतु 5,100 रुपये नकद प्राप्त, शान्तीश्वरी स्टेशनर्स से मनोज जी जैन गंगापुर सिटी द्वारा 5,000 रुपये निर्माण हेतु सहयोग। **रा.उ.प्रा.वि., सीनोली** को श्री मनराज मीना से माइकसेट मय सम्पूर्ण सामग्री हेतु 25,000 रुपये नकद प्राप्त, श्री रामजीलाल मीना (जी.एस.एस. अध्यक्ष) से फर्नीचर हेतु 7,500 रुपये, श्री भैंरूलाल मीना से फर्नीचर हेतु 5,500 रुपये प्राप्त, श्रीमती सोनी देवी (उपसरपंच) से एक व्हील चेयर लागत 2,500 रुपये, श्री बाबूलाल मीना से जीमण पट्टी हेतु 1,100 रुपये प्राप्त, श्री रामकिशन मीना से जीमण पट्टी हेतु 500 रुपये प्राप्त, श्री ओमप्रकाश मीना, श्री बनवारी लाल मीना, श्री लखपत मीना से तीन टेबल लागत 4,500 रुपये, सर्वश्री ओम प्रकाश मीना, कैलाश मीना, मोहन बैरवा, अणताराम, बनवारी लाल, लखपत मीना, मुकेश मीना से सात कुर्सी लागत 4,000 रुपये, सर्वश्री बद्रीलाल मीना, रामहेत मीना, हनुमान मीना से 3 पंखे लागत 4,500 रुपये, श्री हनुमान मीना (पूर्व मेम्बर) 200 पेन लागत 1,000 रुपये, राजेश्वरी देवी बैरवा (सरपंच), श्री मानसिंह मीना व अन्य से बालकों को पुरस्कार हेतु नकद 2,250 रुपये प्राप्त हुए, श्री गणेश कृषक समिति सीनोली द्वारा विद्यालय को फर्नीचर हेतु 70,000 रुपये का चैक मिला।

सिरोही

रा.उ.मा.वि., पामेरा (रेवदर) को श्री खंगार माली एवं श्री भूबाराम प्रजापत से गैस कनेक्शन हेतु 15,000 रुपये प्राप्त, श्री भूबाराम प्रजापत से नल कनेक्शन हेतु 10,000 रुपये प्राप्त, श्री उनाजी प्रजापत से प्रधानाचार्य मेज हेतु 15,000 रुपये प्राप्त, श्री वीराराम रेबारी से प्रधानाचार्य कुर्सी हेतु 7,500 रुपये प्राप्त, श्री वेलाराम प्रजापत से एक एच.पी. प्रिन्टर एम1005 एवं आर.ओ. मशीन लागत 21,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., पुराना जोगापुरा** को जन सहयोग से 200 स्टूल-टेबल सैट प्राप्त हुए जिसकी लागत 2,10,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., दोयतरा, तह. आबूरोड** को श्री पूरण सिंह (अध्यापक) से एक लैपटॉप प्राप्त हुआ जिसकी लागत 29,500 रुपये, जनसहयोग से एक प्रिन्टर प्राप्त हुआ जिसकी लागत 14,000 रुपये। **रा.बा.उ.मा.वि., सरूपगंज में** स्व. भगवती देवी पत्नी श्री भूरमल बंसल ट्रस्ट सरूपगंज द्वारा 25 कमरों में डिस्टम्बर 04 कमरों में टाईल्स (18×20), सीसीटीवी. कैमरे लागत 2,50,000 रुपये, एच.पी.सी.एल. कम्पनी भावरी द्वारा 05 कम्प्यूटर सैट लागत 2,00,000 रुपये व 100 ड्यूल टेबल स्टूल गोदरेज कम्पनी की, लागत 8,00,000 रुपये, जे.के. लक्ष्मी सीमेन्ट लेडिज क्लब बनास जे.के. पुरम से लोहे की स्टूल-टेबल लागत 30,000 रुपये, श्री मोहन भाई व श्री चिमन भाई, सरूपगंज से फिसलन पट्टी हेतु 12,500 रुपये प्राप्त हुए, दक्षा कुवंर, श्री कालुसिंह सोनी से सीडी. बार लागत 8,000 रुपये।

शेष अगले अंक में.....

संकलन- प्रकाशन सहायक

शिविरा पत्रिका (मासिक) : मार्च 2018 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित।

चित्र वीथिका : मार्च 2018

(बाएं) माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) वासुदेव देवनानी द्वारा कक्षा–10 हेतु 'विज्ञान विशेषांक पुस्तक' का विमोचन, साथ हैं चूरिया मूरिया संस्था की प्रदेश प्रभारी श्रीमती हेमलता अगनानी व पदाधिकारीगण। (दाएं) निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री नथमल डिडेल द्वारा रीजनल एवं प्रथम मण्डल स्तरीय शान्ति भण्डारी स्मृति कब/बुलबुल उत्सव–2018 का उद्घाटन, साथ हैं संवित सोमगिरि जी महाराज, मण्डल चीफ कमिश्नर श्री विजय शंकर आचार्य एवं मण्डल सचिव श्री देवानन्द पुरोहित।

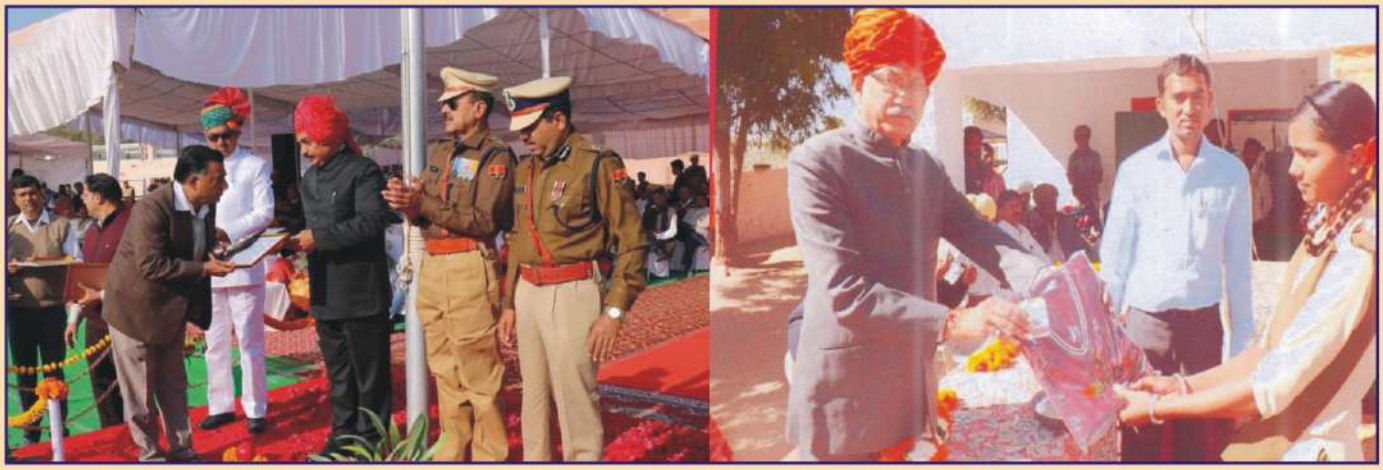

(बाएं) गणतंत्र दिवस–2018 के अवसर पर करणीसिंह स्टेडियम बीकानेर में आयोजित राजकीय समारोह में सम्मानित श्री जितेन्द्र माथुर (वरिष्ठ सहायक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर) एवं गरिमामय मंच (दाएं) राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मेकरना, बालोतरा (बाड़मेर) में भामाशाह द्वारा छात्राओं को स्वेटर वितरण।

(बाएं) राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नत्थूसरगेट,पूगलमार्ग, बीकानेर में 'राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस' के अवसर पर प्रधानाचार्या नीना भारद्वाज द्वारा छात्र–छात्राओं को एलबेन्डाजोल की दवा वितरण। (दाएं) रा.महावीर उ. मा. वि., खींचन (जोधपुर) में गणतन्त्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि श्री आर.के.मेघवाल (मुख्य आयकर आयुक्त, जोधपुर) एवं अध्यक्ष श्री दिनेश जैन (सरपंच ग्राम पंचायत खींचन) को गार्ड ऑफ ऑनर देते हुए शाला के विद्यार्थी।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) • मार्च, 2018 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 मार्च, 2018 पृष्ठ 52 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

23 मार्च : नमन

शहीद भगत सिंह

सरदार श्री किशनसिंह के घर उनकी सहधर्मिणी विद्यावती की कोख से 27 सितम्बर 1907 को लायलपुर जिले के बंगा (अब पाकिस्तान क्षेत्र) में एक बालक का जन्म हुआ, जिसका नाम भगतसिंह रखा गया। वैसे उनका पैतृक गाँव खट्कड़ कलाँ पंजाब प्रान्त में स्थित है। भगतसिंह का परिवार एक आर्य-समाजी सिख परिवार था। भगतसिंह स्वयं श्री करतारसिंह सराभा और शेर-ए-पंजाब लाला लाजपत राय से अत्यधिक प्रभावित थे।

13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग हत्याकांड ने भगतसिंह के बाल मन पर बड़ा गहरा प्रभाव डाला। उनका मन इस अमानवीय कृत्य को देख देश को स्वतन्त्र करवाने की सोचने लगा। भगतसिंह ने चन्द्रशेखर आज़ाद के साथ मिलकर क्रांतिकारी संगठन तैयार किया। लाहौर षड्यन्त्र मामले में भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फाँसी की सज़ा सुनाई गई व बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास दिया गया। भगतसिंह एक अच्छे वक्ता, पाठक व लेखक भी थे। उन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया।

शहीद सुखदेव

लुधियाना, पंजाब में श्रीमती राली देवी एवं श्री रामलाल के घर 15 मई 1907 के दिन अमर शहीद सुखदेव थापर का जन्म हुआ। हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन ऐसोसिएशन और पंजाब में विविध क्रान्तिकारी संगठनों के वरिष्ठ सदस्य रहते हुए उन्होंने नौजवान भारत सभा की स्थापना भी की थी, जिसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिशों का विरोध कर आज़ादी के लिए संघर्ष करना था। उन्होंने नेशनल कॉलेज लाहौर में अध्यापन कार्य भी किया था।

सुखदेव विशेषत: 18 दिसम्बर 1928 को होने वाले लाहौर षड्यन्त्र में शामिल होने की वजह से जाने जाते हैं। उन्होंने भगतसिंह और राजगुरु के साथ मिलकर लाला लाजपत राय की मृत्यु के बाद जवाब में लाहौर षड्यन्त्र की योजना बनायी थी।

08 अप्रैल 1929 को उन्होंने नयी दिल्ली के सेन्ट्रल असेंम्बली हॉल में बम फैंका था और कुछ समय बाद ही पुलिस ने उन्हें पकड़ कर जेल में भेज दिया जहाँ आततायी ब्रिटिशों द्वारा घोर यातनाएँ दी गई।

शहीद राजगुरु

माता पार्वती देवी एवं पिताश्री हरि नारायण के घर भाद्रपद के कृष्णपक्ष की त्रयादेशी सम्वत् 1935 (विक्रमी) तदनुसार 24 अगस्त 1908 में पुणे जिला के खेड़ा गाँव में शिवराम राजगुरु का जन्म हुआ था। 6 वर्ष की आयु में पिता का निधन हो जाने के पश्चात् बहुत छोटी उम्र में ही ये वाराणसी विद्याध्ययनार्थ एवं संस्कृत सीखने चले गये थे। इन्होंने हिन्दू धर्म-ग्रंन्थों तथा वेदों का अध्ययन तो किया ही, 'लघु सिद्धान्त कौमुदी' जैसा क्लिष्ट ग्रन्थ बहुत कम आयु में कण्ठस्थ कर लिया था। इन्हें व्यायाम का बेहद शौक था और छत्रपति शिवाजी की छापामार युद्ध-शैली के बड़े प्रंशसक थे। ये चन्द्रशेखर आजाद की पार्टी हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन से तत्काल जुड़ गए। आजाद की पार्टी के अन्दर इन्हें 'रघुनाथ' के छद्म-नाम से जाना जाता था। राजगुरु एक अच्छे निशानेबाज भी थे। सॉण्डर्स का वध करने में इन्होंने भगतसिंह तथा सुखदेव का पूरा साथ दिया था। अंग्रेजी शासन ने इन्हें भी बन्दी बना लिया था।

23 मार्च 1931 के दिन लाहौर सेण्ट्रल जेल में भारत माता के इन तीनों सपूतों ने हँसते-हँसते फाँसी के फंदे को चूमकर प्राणोत्सर्ग कर दिया। अमर शहीदों को कोटि-कोटि नमन !!!